राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
स्वर्णिम मुंबई
दिसबंर- 2025
मूल्य ₹ 50/-
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532
www.swarnimumbai.com

‘VIP लूट
सरकारी बंगले!

केरल के राज्यपालः
‘विकसित भारत का रास्ता ओडिशा से होकर...

Coaching Industry
शिक्षा अब उद्योग है
और छात्र उसके ग्राहक!

बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी
बचाओ

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

• वर्ष : 10 • अंकः 09 • मुंबई • दिसबंर-2025

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS.,
A-102, A-1 Wing, Near
Shahad Station, Kalyan (W),
Dist: Thane, PIN: 421103,
Maharashtra.
Phone: 9082391833,
9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

कोचिंग इंडस्ट्री शिक्षा अब उद्योग और छात्र उसके ग्राहक...	06
राजनीति २०२५ उठते चेहरे, गिरते किले और बदलता मैदान	14
RSS पर बैन लगाना चाहिएः खड़गे	16
पकवान	18
सरकारी बंगलेः विशेषाधिकार की परंपरा और ...	20
राशिफल	24
मेघालय बादलों की धरती का असली अनुभव	26
सिनेमा	29
कीस डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर का पांचवां वार्षिक दीक्षांत समारोह...	32
कीम्स संगोष्ठीः२०२५ भारत के प्रतिष्ठित डॉक्टरों की रही भागीदारी	34
केरल के राज्यपालः विकसित भारत का मार्ग विकसित ओडिशा से...	37
ऊँची दहलीज	38
रेल की रात	41
चालाकी का फल	49
'चना की खेती...	56

सुविचारः

जीवन में शांति चाहते हैं तो दूसरों की शिकायतें करने से बेहतर है खुद को बदल लें। क्योंकि पुरी दुनिया में कारपेट बिछाने से खुद के पैरों में चप्पल पहन लेना अधिक सरल है।

धर्मेंद्र, एक युग का अंत

भारत का सिनेमा अक्सर सितारों को देवत्व दे देता है– उनके चेहरे को मिथक, उनकी ज़िंदगी को आदर्श, और उनकी कमज़ोरियों को चुप्पी। धर्मेंद्र ऐसे कलाकार थे जिन्हें साहित्यिक ईमानदारी, मानवीय अपूर्णता, और सांस्कृतिक प्रभाव–तीनों स्तरों पर पढ़ना पड़ता है। उनकी विदाई सिर्फ एक अभिनेता के जाने भर की घटना नहीं है; यह उस दौर का भी अंत है जब सिनेमा में भावनाएँ बनावटी नहीं, स्वाभाविक लगती थीं। भारत के फ़िल्म इतिहास में कुछ नाम सिर्फ कलाकार नहीं, समय की धारा बन जाते हैं। धर्मेंद्र उनमें से एक थे–लेकिन सिर्फ रोमांस, एक्शन और माचो इमेज की वजह से नहीं। असल वजह यह थी कि उन्होंने वह दौर देखा जब सिनेमा बेहद सीमित संसाधनों में भी सांस्कृतिक धड़कन तय करता था।

धर्मेंद्र का जन्म १९३५ में पंजाब के फगवाड़ा में धरम सिंह देओल के रूप में हुआ था। बचपन से ही फिल्मों के प्रति आकर्षण था। उन्होंने १९६० के दशक की शुरुआत में हिंदी फिल्म उद्योग में कदम रखा और देखते ही देखते वह रोमांटिक हीरो से लेकर एक्शन स्टार और कॉमेडी कलाकार तक हर रूप में दर्शकों के प्रिय बन गए। उनकी प्रमुख फिल्मों की सूची बेहद लंबी है। 'सत्यकाम', 'अनुपमा' और 'बिहार से आए बदमाश' जैसी भावनात्मक फिल्मों में उनका संवेदनशील अभिनय आज भी दर्शकों को छू जाता है। 'शोले' में वीरू के रूप में उनका किरदार भारतीय फिल्मों के सबसे प्रतीकात्मक पात्रों में से एक बन गया। 'चुपके चुपके' की उनकी कॉमिक टाइमिंग आज भी दर्शकों के चेहरे पर मुस्कान ले आती है। 'सीता और गीता', 'यादों की बारात', 'धरम वीर', 'शराफत', 'काजल', 'राजपूत' और 'रोमांस' से लेकर सैकड़ों फिल्मों में वह स्क्रीन पर अपनी आभा से छाए रहे। धर्मेंद्र अपने जमाने के सबसे लोकप्रिय एक्शन सितारों में से एक थे। उनकी कसरती काया और दमदार संवाद अदायगी ने उन्हें 'ही-मैन' की पहचान दिलाई। इसके बावजूद वह भावुक किरदारों में भी उतने ही सहज दिखाई दिए, जो उनकी बहुमुखिता का प्रमाण है। धर्मेंद्र सिर्फ एक अभिनेता नहीं थे। वह एक भावनात्मक जुड़ाव थे। उनकी फिल्मों की लोकप्रियता, उनके डायलॉग, उनका करिश्मा और उनकी स्क्रीन उपस्थिति ने भारतीय सिनेमा के इतिहास में उन्हें अमर कर दिया।

धर्मेंद्र का करियर जितना विशाल था, उतना ही अनियमित, उतार-चढ़ाव वाला, और कई बार खुद के फैसलों से कमजोर पड़ा। आदर्शवादी ईमानदारी नहीं–यथार्थवादी नजर ही उनकी विरासत को समझने का सही तरीका है। एक चेहरा जो सिर्फ फिल्मों में नहीं, भारत के सामाजिक मानस में दर्ज हुआ। धर्मेंद्र की लोकप्रियता का मूल कारण उनका 'ही-मैन' टैग नहीं था। वह तो एक सतही लेबल था जिसे इंडस्ट्री ने बेचा। असल ताकत थी– कैमरे के सामने उनकी सहजता, संवादों की बजाय चेहरे के भावों से कहानी कहने की क्षमता और एक ऐसा देसी आकर्षण जो शहरी-स्मार्टनेस से बिल्कुल अलग था। वह नकली चमक-दमक से दूर, मिट्टी की खुशबू वाले स्टार थे–जो आज की इंडस्ट्री में लगभग गायब है।

आज की इंडस्ट्री में जहाँ इंस्टाग्राम-पॉलिश्ड चेहरे छा गए हैं। आज जब अभिनय इंस्टाग्राम-पॉलिश, जिम-ट्रेन्ड बॉडी और मेड-टू-मेज़र स्टाइल का खेल हो गया है, धर्मेंद्र की मौजूदगी हमें उस दौर की याद दिलाती है जहाँ– अभिनय अभिनेता से निकलता था और एक 'स्टार' बनने के लिए सोशल मीडिया की ज़रूरत नहीं थी। धर्मेंद्र ने साबित किया कि लोकप्रियता प्रतिभा से बनती है, प्रचार से नहीं। उनकी विदाई–और जो खाली जगह बच गई। उनका जाना सिर्फ एक अभिनेता का जाना नहीं है। यह उस दौर का खत्म होना है जिसमें– अभिनय संवादों से नहीं, नज़र से होता था। रोमांस बनावटी नहीं लगता था और स्टार वह होता था जिसे लोग उसके किरदार, नहीं, उसकी इंसानियत की वजह से याद रखते थे। आज का सिनेमा उस मोटी परत को खो चुका है।

लेकिन जहाँ रोशनी होती है, वहाँ परछाई भी होती है। धर्मेंद्र का करियर जितना चमकीला था, उतना ही असंगठित भी। यही उनकी बड़ी कमज़ोरी थी। सच यह है कि धर्मेंद्र एक जिनीयस कलाकार थे, उनके पास ऊँचाई पर पहुँचने का जो मटीरियल था, वह उससे भी ऊपर जा सकते थे, अगर उन्होंने अपने फैसलों में सख्ती दिखाई होती। बहुत सारे औसत दर्जे की फिल्में साइन करना, अपने अभिनय की रेंज को लगातार चुनौती न देना, करियर के उत्तरार्ध में एक लंबा ठहराव। राजनीतिक पारी–जिसे उन्होंने शुरू तो किया, लेकिन निभाया नहीं। सच यह है कि वह एक महान अभिनेता थे, लेकिन एक रणनीतिक अभिनेता नहीं। उनके पास प्रतिभा ज़्यादा थी, अनुशासन कम। उनका निजी जीवन उतना ही उलझा हुआ था जितना उनका करियर। व्यक्तिगत जीवन की जटिलताएँ–जो हर महान कलाकार की कहानी का हिस्सा होती हैं। उनके निजी फैसलों–खासकर रिश्तों और परिवार को लेकर–काफी बहस हुई और आगे भी होगी। फिर भी, दर्शक उन्हें प्यार करते रहे क्योंकि उन्होंने अपनी कमियों को छिपाने की कोशिश कभी नहीं की। ■

-एम. पाठारे

महाराष्ट्र की राजनीति के लिए निर्णायक बनेंगे BMC चुनाव

महाराष्ट्र की राजनीति में हमेशा ही बीएमसी चुनाव का अपना महत्व रहा है। दो दिसंबर को मतदान होने वाले हैं और इसके बाद तीन तारीख को मतों की गणना होगी। इस चुनाव नतीजे का असर प्रदेश की पार्टियों पर ही नहीं, बल्कि मौजूदा महायुति सरकार पर भी पड़ना तय है। मुंबई नगरपालिका का बजट छोटे राज्यों के कुल बजट से भी ज्यादा होता है। एशिया की सबसे अमीर नगरपालिका और मुंबई की 'मिनी सरकार' मानी जाने वाली बीएमसी चुनाव देश की राजनीति को प्रभावित करने का दम रखती है।

यह चुनाव सिर्फ स्थानीय निकाय का नहीं, बल्कि राज्य की भविष्य की सत्ता-समीकरण का भी फैसला करेगा। एनसीपी और शिवसेना के विभाजन के बाद होने वाला यह पहला बीएमसी चुनाव है। बीएमसी के चुनाव नतीजे राजनीतिक रूप से बेहद अहम माने जा रहे हैं।

चुनाव प्रचार एक दिसंबर रात १० बजे तक चलेगा और वोटिंग २ दिसंबर को होगी। मतों की गणना ३ दिसंबर को की जाएगी। - चुनाव कार्यक्रम की घोषणा चार नवंबर को राज्य चुनाव आयुक्त दिनेश वाघमारे ने की थी, जिसके बाद आचार संहिता लागू हुई। इन चुनावों में कुल ६,८५९ और २८८ अध्यक्षों का चुनाव होगा। मुंबई के १.०७ करोड़ से अधिक मतदाता १३,३५५ मतदान केंद्रों पर वोट करेंगे।

जनवरी में शुरू हो रही १५ कोच वाली हाई-स्पीड लोकल ट्रेनें...

छह साल से भी ज़्यादा समय के इंतज़ार के बाद, विरार-दहानू पैसेंजर्स एसोसिएशन को आखिरकार राहत मिली है। पश्चिम रेलवे ने अपनी आगामी समय-सारणी में विरार और दहानू रोड के बीच १५-कोच वाली लोकल ट्रेनों को शामिल करने का फ़ैसला किया है। पीक आवर्स के दौरान, ट्रेन में चढ़ना लगभग असंभव है। १५-कोच वाली ट्रेनों की शुरुआत से लाखों यात्रियों को बड़ी राहत मिलेगी। अधिकारियों के अनुसार, नई १५-कोच वाली लोकल ट्रेनें चर्चगेट और विरार के बीच तेज़ गति से चलेंगी, जिससे यात्रा का समय कम होगा। साथ ही, यह पीक आवर्स के दौरान यात्रियों को होने वाली भीड़भाड़ से भी निजात दिलाएगा। हालांकि सेवाओं की सटीक संख्या और विस्तृत टाइम-टेबल अभी घोषित नहीं की गई है, सूत्रों का कहना है कि प्रारंभिक चरण में चार से छह १५-कोच वाली ट्रेनें शुरू की जा सकती हैं।

इस सुधार से यात्रियों की एक बड़ी संख्या को तुरंत राहत मिलने की उम्मीद है। २०२०-२१ में, वैतरणा, सफाले, केलवे रोड, पालघर, उमरोली, बोईसर, वंगांव और दहानू रोड सेक्शन में औसत दैनिक यात्रियों की संख्या लगभग एक लाख थी। आज यह संख्या बढ़कर लगभग २.५ लाख प्रति दिन हो गई है। ऐसे में, हाई कैपेसिटी वाली ट्रेनों की शुरुआत से विरार-दहानू मार्ग पर यात्रा करने वालों को सीधा फ़ायदा होगा, जहाँ भीड़भाड़ और सीमित सेवाएँ एक गंभीर समस्या बनी हुई हैं।

विरार-दहानू पैसेंजर्स एसोसिएशन के लिए, यह जीत सिस्टम के साथ वर्षों के लगातार जुड़ाव का परिणाम है। एसोसिएशन के नेता, अधिवक्ता प्रथमेश ने इस सफलता पर आभार और संतोष व्यक्त किया। कई यात्री संघों के समर्थन से - इस मार्ग पर उच्च क्षमता वाली उपनगरीय सेवाओं की तत्काल आवश्यकता को उजागर करने के लिए।' प्रथमेश ने आगे बताया, 'इन वर्षों में, मैंने भीड़भाड़ की चिंताओं और १५-कोच वाली ईएमयू शुरू करने के दीर्घकालिक फ़ायदों को रेखांकित करते हुए कई पत्र, प्रस्तुतियाँ और विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की हैं।

एक वरिष्ठ रेलवे अधिकारी ने भी पुष्टि की कि नई सेवाओं के अलावा, विरार और दहानू रोड के बीच तीसरी और चौथी रेलवे लाइनों का निर्माण उन्नत चरण में है। एमआरवीसी द्वारा निष्पादित इस परियोजना को चालू वित्तीय वर्ष के अंत तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। एक बार चालू होने के बाद, अतिरिक्त लाइनों से क्षमता में और वृद्धि होने, भीड़ कम होने और परिचालन लचीलेपन में सुधार होने की उम्मीद है।

कोचिंग इंडस्ट्री

शिक्षा अब उद्योग और छात्र उसके ग्राहक...

भारत की शिक्षा व्यवस्था २०२५ में कोचिंग इंडस्ट्री के कब्ज़े में है। कोटा से दिल्ली, पुणे, बेंगलुरु, हैदराबाद और मुंबई–हर बड़ा शहर एक हाई-प्रेशर हब बन चुका है जहाँ छात्रों पर १२-१६ घंटे पढ़ाई, लगातार टेस्ट, और असफलता के डर का दबाव है। महंगी फीस, भीड़भाड़ वाले बैच, कमजोर मानसिक-स्वास्थ्य सपोर्ट और अवास्तविक सामाजिक अपेक्षाएँ मिलकर छात्रों को थका रही हैं। सवाल सिर्फ 'कोचिंग सेंटर बनाम छात्र' का नहीं है–पूरी व्यवस्था छात्रों को नंबर, रैंक और रिज़ल्ट में बदल रही है। जरूरत है सख्त रेगुलेशन, बेहतर स्कूल-कॉलेज, मानसिक-स्वास्थ्य सेवाओं और परीक्षा सुधार की। वरना शिक्षा नहीं, स्ट्रेस की फैक्टरी बढ़ती रहेगी।

१. शिक्षा २०२५ का सच
२. कोटा मॉडल अब पूरे देश में कॉपी-पेस्ट
३. बड़े शहरों का कोचिंग प्रेशर
४. कोचिंग इंडस्ट्री की पॉलिश्ड सफलता–छिपे हुए आँकड़े
५. छात्रों की आम स्थिति
६. असली जिम्मेदार कौन?
७. मानसिक-स्वास्थ्य सबसे बड़ा पीड़ित
८. शिक्षा नहीं, स्ट्रेस का उद्योग
९. छात्र–पूरे सिस्टम का सबसे कमजोर पक्ष

कोचिंग मॉडल कैसे बना एक हाई-प्रेशर सिस्टम!

२०२५ का भारत खुद को दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में गिनाने में गर्व महसूस करता है। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, कौशल भारत – सरकार हर मंच पर 'युवा-केंद्रित विकास' का दावा करती है। लेकिन कड़वी सच्चाई यह है कि आज शिक्षा उम्मीद से ज़्यादा एक बिज़नेस मॉडल बन चुकी है। विशेषकर जिस जगह सबसे ज़्यादा पैसा बह रहा है–कोचिंग इंडस्ट्री–वह अब शिक्षा का 'सपोर्ट सिस्टम' नहीं, बल्कि उसका 'मालिक' बन गई है।

बच्चों के सपनों का बोझ, पैरेंट्स की महत्वाकांक्षाएँ, और सरकारी शिक्षा सिस्टम की कमज़ोर हालत – इन सबका लाभ उठाकर कोचिंग सेंटर एक अलग ही समानांतर व्यवस्था बन चुके हैं। और इस व्यवस्था में छात्रों की भूमिका सीधी है: वे ग्राहक हैं–जिनके सपनों की कीमत लगाई जाती है। यह रिपोर्ट किसी एक

'विशेष' को पकड़कर खत्म नहीं कर रही। यह पूरी चेन की परतें उधाड़ रही है– क्योंकि दोष सिर्फ कोचिंग का नहीं है, पूरे सिस्टम का भी है। भारत की शिक्षा व्यवस्था २०२५ में एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहाँ छात्रों के भविष्य का नियंत्रण धीरे-धीरे कोचिंग इंडस्ट्री के हाथों में खिसक चुका है। स्कूल-कॉलेजों की गुणवत्ता पर भरोसा टूट चुका है, सरकारी नौकरियों की संख्या सीमित है, और प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव पहले से दस गुना बढ़ चुका है। इसी माहौल में देशभर के बड़े शहर–कोटा, दिल्ली, पुणे, बेंगलुरु, हैदराबाद और मुंबई–छात्रों के लिए 'तैयारी केंद्र' नहीं, बल्कि एक कठोर सर्वाइवल जोन बन गए हैं। इस रिपोर्ट का उद्देश्य किसी एक शहर या किसी एक कोचिंग संस्था को निशाना बनाना नहीं है। समस्या व्यापक है, फैली हुई है, और सभी जगह लगभग एक ही पैटर्न पर काम कर रही है। इसलिए सभी प्रमुख शहरों का संतुलित विश्लेषण शामिल किया गया है।

१९९०-२००० के दशक में कोचिंग सिर्फ सपोर्ट सिस्टम था। लेकिन २०१० के बाद बोर्ड परीक्षा, JEE–NEET, UPSC, बैंकिंग और SSC जैसी परीक्षाओं में बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने एक ऐसा बाजार खड़ा किया जिसे अब कोचिंग इंडस्ट्री कहा जाता है–एक ऐसा उद्योग जिसकी कीमत हजारों करोड़ है, पर विनियमन लगभग शून्य। यह इंडस्ट्री अब सिर्फ पढ़ाती नहीं–फिल्टर करती है, छाँटती है, और छात्रों को नंबरों में बदल देती है।

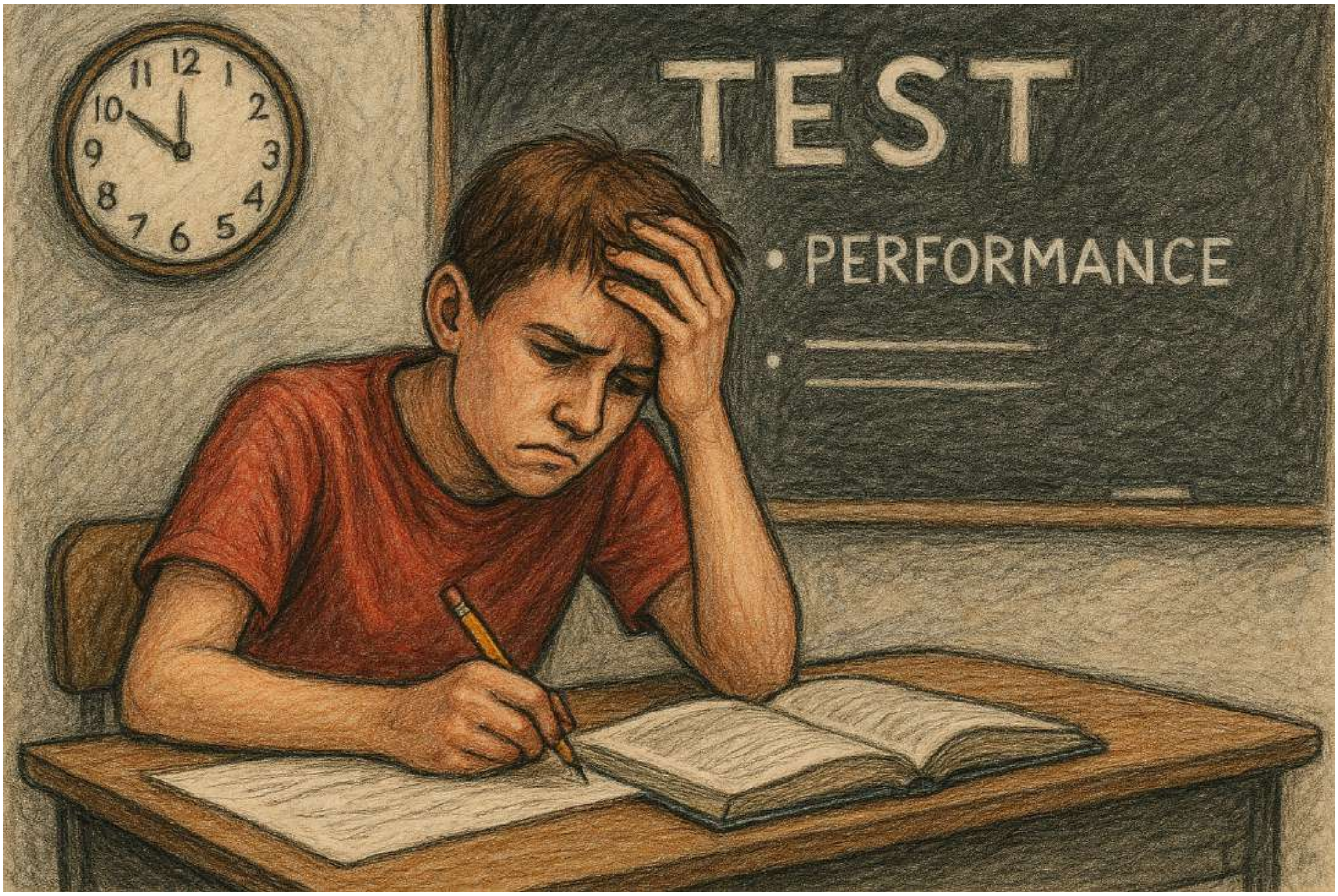

कोटाः देश का 'प्रेशर कूकर' मॉडल जहाँ से पूरी कहानी शुरू हुई। १० लाख से ज़्यादा छात्र हर साल कोटा आते हैं। टेस्ट-सीरीज, रैंक, बैच परिवर्तन, और हर महीने की स्क्रीनिंग–यहाँ की सिस्टम ने 'कड़ी मेहनत' और 'क्रूर मेहनत' के बीच की रेखा मिटा दी है।

कोटा मॉडल की गंभीर समस्याएँः

रैंक-आधारित बैच कल्चरः टॉप बैच में आने का दबाव छात्रों की नींद तक खो देता है। लाइन से हट जाना मतलब फेल मान लेनाः कई छात्र बताते हैंः अगर दो टेस्ट खराब गए तो हमें लगता है कि ज़िंदगी खत्म हो गई।' १५-१७ घंटे पढ़ाई की अपेक्षा करना मतलब यह अध्ययन नहीं, बल्कि 'मैराथन स्ट्रेस' है। मनोवैज्ञानिक सपोर्ट लगभग नाममात्र, करोड़ों की इंडस्ट्री में मानसिक-स्वास्थ्य काउंसलिंग पर खर्च शर्मनाक रूप से कम है। कोटा की समस्या यह है कि बाकी देश ने भी इसका कॉपी-पेस्ट शुरू कर दिया है।

दिल्ली–मुखर्जी नगर और करोल बाग की UPSC फैक्टरी

UPSC का आकर्षण और सरकारी नौकरी की प्रतिष्ठा ने दिल्ली को 'UPSC का शहर' बना दिया है। लेकिन यहाँ की स्थिति रोमांटिक नहीं, बल्कि हकीकत यह हैः क्लासें ४००-६०० बच्चों की PG में ३-४ लोग एक छोटे कमरे में, रोज़ १२-१४ घंटे की पढ़ाई, टेस्ट-सीरीज का लगातार दबाव, असफलता की दर लगभग ९७-९८%। यहाँ छात्र सिर्फ 'पढ़' नहीं रहे–वे प्रतिस्पर्धा में घुल रहे हैं। सफलता कुछ को मिलती है, लेकिन तनाव,

अवसाद और अकेलापन लगभग सभी को।

पुणे–FC रोड और कोथरुड का इंजीनियरिंग-MBA सर्किट

पुणे को अक्सर 'स्टूडेंट सिटी' कहा जाता है, लेकिन सच्चाई यह है कि यहाँ भी कई कोचिंग सेंटर डिग्री से ज्यादा टेस्ट-स्कोर पर जोर देते हैं। भारी फीस, हॉस्टल/PG का बढ़ता किराया, छात्रों को टेस्ट-सीरीज की मशीन बना देना, असफल होने पर छात्रों को 'औसत' या 'अनफिट' करार देना। कई छात्र यहाँ बताते हैं कि उन्हें खुद के लिए एक घंटा भी नहीं मिलता।

बेंगलुरु–Marathahalli/ Koramangala के IT Bootcamps

यहाँ 'स्किल' के नाम पर नए कोर्स हर महीने लॉन्च होते हैं– Data Science, Full Stack, AI, Cybersecurity–कुछ सही, कुछ सिर्फ मार्केटिंग। गंभीर समस्या यह है कि १००% प्लेसमेंट का वादा झूठा/अधूरा होता है, बैचों में २००-३०० छात्र, महंगी फीस, प्लेसमेंट सिर्फ टॉप १०-१५% छात्रों तक सीमित बाकी छात्रों पर आर्थिक और मानसिक बोझ। यह भी एक प्रकार का मॉडर्न कोचिंग ट्रैप है।

हैदराबाद—Ameerpet की टेक और गवर्नमेंट जॉब कोचिंग लैब

अमीरपेट अपनी सस्ती और तेज़ कोर्स प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन इसका उल्टा पहलू यह है कि क्लासें लाइन-प्रॉडक्शन जैसी गुणवत्ता असमान, छात्र लगातार mock test और assessments से थक जाते हैं।

मुंबई–Dadar, Andheri और Nerul का महंगा लेकिन दबावपूर्ण मॉडल

मुंबई की कोचिंग समस्या थोड़ी अलग है–यहाँ पढ़ाई से ज़्यादा संघर्ष जीवन-यापन का है। PG का किराया आसमान छूता है, रोज़ की ट्रैवल थकाने वाली। बैंकिंग, SSC, रेलवे परीक्षा की भीड़। कोचिंग सस्ते नहीं, लेकिन क्वालिटी हर जगह बराबर नहीं। ऊपर से परिवार से दूर रहने का दबाव और नौकरी की अनिश्चितता। मुंबई में सर्वाइवल का खर्च छात्रों को मानसिक रूप से पहले ही थका देता है। छात्रों की वास्तविक स्थिति (देशभर के हब की कॉमन समस्या) देश के किसी भी बड़े कोचिंग हब में चले जाओ– मानसिक थकान और दबाव की तस्वीर लगभग एक जैसी हैः

- १२-१६ घंटे पढ़ाई
- नींद की कमी
- लगातार टेस्ट
- रिज़ल्ट का डर
- तुलना की संस्कृति
- रिश्तों और परिवार से दूरी
- हाइपर-कंपटीशन
- आर्थिक तनाव
- अपराधबोध (guilt)

anxiety और कई बार depression की ओर बढ़ाव। कई छात्रों के लिए यह 'पढ़ाई' नहीं, बल्कि स्ट्रेस मैनेजमेंट की लड़ाई बन चुका है।

डेटा जो चुभता है – लेकिन अनदेखा किया जाता है

NEET में कुल छात्रों का २-३% ही टॉप कोचिंग से सफल होता है। JEE में टॉप 5000

ALLEN
CAREER INSTITUTE
KOTA (RAJASTHAN)
path to success

Aakash
Medical | IIT-JEE | Foundations

रैंक में आने वाले छात्रों की संख्या, कुल कोचिंग आबादी की तुलना में नगण्य है।

ड्रॉपआउट रेशियो ३०-४०% तक। कोचिंग फीस साल-दर-साल १०-२०% बढ़ रही है। मानसिक स्वास्थ्य मामलों में कोचिंग शहरों में तीव्र वृद्धि (साइकोलॉजिस्ट्स इसे 'Performance Anxiety Cluster' कहते हैं)। कोटा में सालाना आत्महत्या मामलों की खबरें लगातार लाइमलाइट में रहती हैं। यह डेटा एक बात स्पष्ट करता है: मांग ज़्यादा है, पर सफलता बहुत सीमित। तो फिर बच्चे क्यों दौड़ रहे हैं? क्योंकि सिस्टम उन्हें कहीं और विकल्प देता ही नहीं।

छात्रों की आपबीती

केस १: आदित्य (गाजियाबाद, १७ वर्ष) NEET की तैयारी कर रहा है। पिता प्राइवेट नौकरी में, माँ गृहिणी। कोचिंग, हॉस्टल, रहने-खाने में लगभग २.७ लाख/वर्ष खर्च।

आदित्य की असली समस्या उसकी बुद्धि नहीं बल्कि वह सपना जो उसका नहीं, उसके पिता का है। हर हफ्ते टेस्ट में रैंक गिरने पर कोचिंग की सलाह – 'बैच अपग्रेड लो, रिवीज़न पैक लो।'

मतलब और पैसा।

आदित्य हर रात यही सोचकर सोता है कि 'अगर मैं नहीं बना, तो पापा क्या कहेंगे?'

केस २: शालिनी (छपरा, बिहार; १८ वर्ष) SSC और बैंक की तैयारी करने दिल्ली आई। कमरे में तीन लड़कियाँ रहती हैं, सब पार्ट-टाइम काम करती हैं। क्योंकि कोचिंग फ़ीस २०-३० हज़ार है, और टेस्ट सीरीज़ अलग। उसकी समस्या सिर्फ गरीबी नहीं– उसकी समस्या यह है कि कोचिंग बाज़ार उसे एक कम-कमाने वाली ग्राहक समझता है। उसका विकल्प है, सस्ते यूट्यूब चैनल, टॉपर्स के नोट्स, सेकेंड-हैंड गाइड, और दिन में ५ घंटे की पार्ट-टाइम नौकरी। यह कहानी उस भारत की है जहाँ पैसा ही असली सिलेबस बन चुका है।

केस ३: राहुल (नागपुर, १७ वर्ष) JEE की तैयारी कर रहा है। उसने कोचिंग जॉइन नहीं की–Self Study और Online Resources पर भरोसा करता है। वह स्पष्ट मानता है: 'कोचिंग सिर्फ स्ट्रक्चर देती है, दिमाग नहीं।'

लेकिन उसकी समस्या यह है– समाज उसे 'कम सीरियस' समझता है। दोस्त, रिश्तेदार, पड़ोसी, सब पूछते हैं: 'कोचिंग नहीं जॉइन की? फेल हो जाएगा!' उसके लिए कोचिंग कल्चर की सबसे बड़ी त्रासदी यही है– आपकी मेहनत को लोग तब तक वैल्यू नहीं देंगे जब तक आपके पास एक 'ब्रांडेड कोचिंग' की रसीद न हो।

मुंबई के छात्रों की असली सच्चाई यह है कि PG का किराया पढ़ाई से बड़ा स्ट्रेस बन चुका है, दादर-परैल-वडाला में एक छोटा कमरा: १८,०००-२५,००० सिर्फ बेड स्पेस, किचन + वॉशरूम शेयर्ड। ३-४ लड़के एक ही कमरे में भरे हुए। कई छात्र सीधा कहते हैं: 'एडमिशन से ज्यादा डर PG खरीदता है।' Mumbra, Kalyan, Vasai, Virar से आने वाले छात्र रोज़ २-३ घंटे सिर्फ खड़े रहकर सफर करते हैं। कई छात्र कहते हैं: 'क्लास पहुँचे-पहुँचे ही आधी ऊर्जा खत्म हो चुकी होती है।'

मुंबई में सरकारी नौकरी की तैयारी करने वाले छात्रों की संख्या बहुत ज्यादा है। समस्या यह है कि बैचों में १५०-३०० छात्र Doubt-solving सिर्फ नाम का। Mock tests पर इतना जोर कि छात्र strategy बना ही नहीं पाते।

मुंबई में कई छात्र survival के लिए काम भी करते हैं: Café jobs, Delivery, Retail shifts, Call centers, Night shifts ये बच्चे ८-१० घंटे काम करने के बाद क्लास में पहुँचते हैं तो उनकी हालत क्या होती है? 'नींद पूरी नहीं होती, दिमाग सुन्न रहता है, लेकिन क्लास मिस करने का डर ज्यादा है।'

मुंबई में छोटे घरों में पढ़ने की जगह नहीं होती। इसलिए लाइब्रेरी पर निर्भरता बहुत अधिक है, सुबह ६ बजे से लाइन, ८००-२००० रुपए प्रति महीना। कई लाइब्रेरी पूरी तरह भर

जाती हैं एक छात्र के शब्दों में 'लाइब्रेरी में सीट मिल गई तो दिन सफल, नहीं मिली तो पूरा दिन खराब।'

इस हालत का दोषी कौन?

दोष सिर्फ कोचिंग का नहीं है और सिर्फ छात्र या माता-पिता का भी नहीं। समस्या का स्ट्रक्चर गहरा है। पूरी व्यवस्था गलत है क्योंकि कोचिंग इंडस्ट्री वैक्यूम में नहीं बनी–उसे हमने, सिस्टम ने, और समाज ने बनाया है।

१. कोचिंग मालिक – सपनों का व्यवसाय

कोचिंग मालिक बच्चों को इंसान नहीं, इन्वेकोचिंग इंडस्ट्री का ओवर-प्रमोशन

'हमारे यहाँ AIR 1 आया!'

'५०० selections!'

'टॉपर हमारी क्लास से!'

टॉपर को प्रमोट करते हैं, लेकिन ९९% फेल होने वालों का डेटा कभी सामने नहीं आता।स्टमेंट यूनिट की तरह देखते हैं।

टॉपर = विज्ञापन का चेहरा

फेल छात्र = 'उसने मेहनत नहीं की' बयान

बैच अपग्रेड = अतिरिक्त पैसा

टेस्ट सीरीज़ = पैसा

Doubt Sessions = पैसा

Crash Course = पैसा

यह एक बिज़नेस है – और बिज़नेस लाभ देखता है, भावनाएँ नहीं।

२. माता-पिता – अवास्तविक सपनों के निर्माता

बच्चा ६०% लाया हो या ९५% – लक्ष्य हर किसी के लिए डॉक्टर और इंजीनियर।

विज्ञान चुनो

इंजीनियर/डॉक्टर बनो

सरकारी नौकरी लो

प्राइवेट नौकरी को अस्थिर मानना

पड़ोसी/रिश्तेदार से तुलना

यह मानसिक दबाव बच्चों को शुरुआत से ही एक ट्रैक पर धकेल देता है–जैसे विकल्प हैं ही नहीं। 'हमारा बेटा कुछ बड़ा करेगा' का दबाव, कोचिंग की मार्केटिंग देखकर दिमाग फिर जाना, कई पैरेंट्स खुद को आधुनिक समझते हैं, पर बच्चों पर दबाव डालने में उनसे बड़ा कोई 'दोषी' नहीं।

३. सरकार – निरीक्षण और रेगुलेशन में पूरी तरह फेल

सरकार ने स्कूलों को इतना कमजोर छोड़ दिया कि छात्र को मजबूरी में कोचिंग पर निर्भर

होना पड़ता है। न कोचिंग की फीस-सीमा, न लाइसेंसिंग सिस्टम, न टीचर्स की क्वालिटी चेक और तो और न छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा!

सरकार का रवैया स्पष्ट हैः

'कोचिंग चल रही है, तो चलने दो।'

४. स्कूल – नाम के लिए शिक्षा, काम के लिए नहीं

स्कूल अब बस दो काम करते हैंः फीस लेना और बच्चों का attendance लेना

CBSE और राज्य बोर्ड दोनों में

स्कूल की गुणवत्ता गिर चुकी है।

क्लासरूम सीखना इतना कमजोर है कि

किसी बच्चे को लगे कि 'मैं स्कूल से JEE/ NEET पास कर सकता हूँ'– यह बात अब मजाक लगती है। यानी कोचिंग इंडस्ट्री का असली बूस्टर स्कूलों की नाकामी है।

सोशल मीडिया और Fear of Missing Out (FOMO)

हर कोई दिखा रहा है कि वह 'कुछ बड़ा' कर रहा है। छात्रों को लगता है–'मेरे साथ ही कुछ गलत है।'

कोचिंग सेंटर का मनोवैज्ञानिक खेल – दिमाग से पहले आत्मविश्वास तोड़ते हैं

कोचिंग की मार्केटिंग रणनीति सीधी हैः पहले तुम्हें डराओ 'NEET बहुत कठिन है, बिना कोचिंग पास ही नहीं होगा।' फिर तुम्हें हीनभावना दो 'ब्रांडेड कोचिंग में ही असली गाइडेंस है।' फिर तुम्हें पैसों के हिसाब से बैच में बाँट दो

Super Batch, Premium Batch, Average Batch, Low Batch

जो बच्चा 'Low Batch' में जाता है, उसका आत्मविश्वास आधा वहीं टूट जाता है। कोचिंग का इरादा साफ है– तुम्हें निर्भर बनाना, मजबूत नहीं।

क्या समाधान है?

यह सिस्टम बनाम छात्र की लड़ाई है–जहाँ छात्र सबसे कमजोर पक्ष है। कोटा, दिल्ली, पुणे, बेंगलुरु, हैदराबाद और मुंबई–सभी जगह समस्याएँ अलग-अलग दिखती हैं, लेकिन जड़ एक ही हैः अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, अव्यवस्थित कोचिंग इंडस्ट्री, सामाजिक दबाव और शिक्षण संस्थानों की कमजोरी। अगर हम अभी नहीं जागे, तो आने वाले सालों में शिक्षा नहीं, बल्कि स्ट्रेस का उद्योग बढ़ेगा–और उसके नीचे छात्रों का भविष्य दबता जाएगा। सिस्टम टूटा है, इसे फिर से बनाना होगा। और यह काम सिर्फ सरकार का नहीं–समाज का भी है।

१. कोचिंग के लिए राष्ट्रीय लाइसेंसिंग सिस्टम, जो डॉक्टर, इंजीनियर लाइसेंस से चलते हैं, वैसे ही कोचिंग भी लाइसेंस से चले।

२. फीस कैप – हर राज्य में तय रेंज

२-३ लाख फीस किसी भी स्तर पर वाजिब नहीं।

३. मानसिक स्वास्थ्य काउंसलर अनिवार्य

हर बड़े कोचिंग कैंपस में full-time psychologist हो।

४. मार्केटिंग कंट्रोल – टॉपर का चेहरा ना बनाओ, टॉपर ब्रांडिंग पर पाबंदी लगे। सिर्फ सीखने का मॉडल दिखाओ, व्यक्ति नहीं।

५. स्कूल सिस्टम की मरम्मत

क्लासरूम टीचिंग को मजबूत किए बिना कोचिंग कल्चर खत्म होना नामुमकिन है।

६. Alternative Career Awareness को राष्ट्रीय अभियान बनाओ। बच्चों को यह समझाना जरूरी है कि डॉक्टर-इंजीनियर बनने के अलावा भी दुनिया है।

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

भारत की कोचिंग इंडस्ट्रीः उतार-चढ़ाव, दबाव, और टूटता हुआ मॉडल

भारत की कोचिंग इंडस्ट्री पिछले तीन साल में जितनी तेज़ी से बदली है, उतनी तेजी किसी भी शिक्षा-संबंधी सेक्टर में शायद ही कभी देखी गई हो। Kota, जो कभी IIT-JEE और NEET तैयारी का 'मेगासिटी' माना जाता था, आज पहली बार गहरे झटके झेल रहा है। वहीं Delhi, Pune, Hyderabad और Bengaluru जैसे शहरों का कोचिंग बाजार बढ़ भी रहा है और टूट भी है। यह बदलाव डिमांड में गिरावट नहीं, बल्कि पूरे सिस्टम की संरचना बदलने का संकेत है।

तीन साल पहले, कोटा की अर्थव्यवस्था अपने शिखर पर थीः 2022 में अनुमानित coaching economy: ₹10,000–11,000 करोड़, 2023 में यह बढ़कर ₹11,000–12,000 करोड़, लेकिन 2024–25 में सीधा गिरकर ₹8,000–8,500 करोड़।

Student enrolment तीन साल में पहली बार इतना नीचे आयाः १.७५ लाख → १.२० लाख

यानी ५०,०००+ छात्रों का पलायन।

होस्टल और PG occupancy भी 30%–40% तक नीचे, और stationery–से-transport जैसे Kota-dependent व्यवसायों में 20–35% की गिरावट।

सफलता की कहानी कम, संघर्ष की कहानी ज़्यादा है। बहुत से छात्र १-२ साल पढ़ते हैं, फिर भी ट्रेनिंग ले लेते हैं, नौकरी पकड़ लेते हैं, घर लौट जाते हैं , Preparation छोड़ देते हैं, या किसी और कैरियर में मुड़ जाते हैं और यह गलत नहीं – ये practical होता है। मुंबई आपको बहुत जल्दी 'ground reality' समझा देती है। मुंबई में पढ़ाई का असली मुकाबला किताबों से नहीं – किराए, ट्रेनों, भीड़, खर्चों, और मानसिक दबाव से है।

Allen—Kota की रीढ़–का profit FY23 के ₹429 करोड़ से FY25 में ₹41 करोड़ पर पहुंच गया।

Kota का पूरा model ही दबाव, आत्महत्या के मामलों, online competition और multi-city expansion की वजह से कमजोर पड़ चुका है।

Delhi: Mukherjee Nagar और Karol Bagh की स्थिर लेकिन दबावभरी दुनिया

UPSC और SSC की तैयारी ने Delhi का coaching hub अब भी मजबूत रखा हैः

2022: ₹2,000–2,200 करोड़

2023: ₹2,500–2,700 करोड़

2024–25: ₹2,800–3,000 करोड़

Growth है, लेकिन दिल्ली तीन बड़े दबाव झेल रही हैः

Edtech और YouTube lectures की मुफ्त उपलब्धता

PG कीमतों की ऊँचाई

Repeated attempts करने वाले छात्रों की संख्या में कमी

Mukherjee Nagar अब भी देश का सबसे बड़ा UPSC cluster है, लेकिन 'offline ही सब कुछ है' वाली कहानी अब टूट चुकी है।

Pune का coaching market शांत भी है और स्थिर भीः

2022: ₹600–700 करोड़

2023: ₹700–850 करोड़

2024–25: ₹800–900 करोड़

यहाँ Kota जैसा pressure-culture नहीं है, इसलिए growth organic है–लेकिन scale Kota के स्तर तक कभी नहीं पहुंचेगा।

Hyderabad: नया उभरता Coaching Powerhouse

A-Circuit से लेकर ACJU Tech तक, Hyderabad ने engineering + government exams में अपना बड़ा footprint बना लिया हैः

2022: ₹900–1,000 करोड़

2023: ₹1,050–1,200 करोड़

2024–25: ₹1,200–1,300 करोड़

Kota की गिरावट का फायदा मिला है।

Hyderabad को Kota-style pressure hub बनने से रोकने वाली चीज इसकी diverse student mix है–tech, software, GATE, और jobs का संतुलित ecosystem~

Bengaluru: Fragmented लेकिन growth-ready बाजार

Bengaluru में कोई Kota जैसा cluster नहीं है, लेकिन coaching market फैल रहा हैः

2022: ₹500–600 करोड़

2023: ₹600–700 करोड़

2024–25: ₹700–800 करोड़

यहाँ demand stable है लेकिन institutes बहुत बिखरे हुए हैं–SHDT, KDDUA जैसे hubs अभी शुरुआती stage में हैं।

Industry-Level Picture: India Coaching Market (२०२२-२०२५)

वर्ष	इंडस्ट्री साइज (अंदाजन)
२०२२	₹५८,०००-६०,००० करोड़
२०२३	₹६२,०००-६५,००० करोड़
२०२४-२५	₹६०,०००-६३,००० करोड़

Growth रुकी नहीं है, लेकिन profitability नीचे है–almost हर बड़े brand में यही trend है।

The Real Shift: Coaching सिर्फ़ बिज़नेस नहीं, अब एक संघर्ष का मॉडल। पिछले तीन साल में तीन चीज़ें crystal clear हो गई हैंः

१. Offline monopoly टूट चुकी है

YouTube और hybrid learning ने coaching को affordable बना दिया है–और यह coaching institutes की pricing power खत्म कर रहा है।

२. Parents अब पहले जैसे खर्चा नहीं कर पा रहे

₹१.५-२ लाख per year की fees middle-class family की limit को तोड़ रही है।

3. Students numbers down → profit down → expansion up → pressure up। यानी institutes जितना expand कर रहे हैं, उतना ही financially fragile भी हो रहे हैं। ■

राजनीति 2025
उठते चेहरे, गिरते किले और बदलता मैदान

भाजपा अभी भी भारत की सबसे स्थिर और चुनावी रूप से सक्षम शक्ति है। विपक्ष अभी तक यह तय नहीं कर पाया कि वह भाजपा से लड़ रहा है या अपने-अपने अहंकार से। क्षेत्रीय दल जहां मजबूत हैं, वहाँ मजबूती से टिके रहेंगे – लेकिन जहाँ नेतृत्व कमजोर है, वहाँ वे गायब होने की कगार पर हैं। जनता अब भावनाओं से नहीं, लोकल परफॉर्मेंस और डिलीवरी से फैसला कर रही है। आने वाले सालों की राजनीति सिर्फ एक चीज़ तय करेगी– 'कौन जनता की जिंदगी में असल काम करेगा, और कौन सिर्फ नारों में उलझा रहेगा?'

भारत की राजनीति २०२४-२५ के बीच एक ऐसे चौराहे पर खड़ी है जहाँ जनता की प्राथमिकताएँ बदल रही हैं, दलों की रणनीतियाँ भिड़ रही हैं, और नेतृत्व के सामने नए सवाल खड़े हो रहे हैं। इस पूरे परिदृश्य को एक लाइन में कहा जाए तो– 'लोग मुद्दे चाहते हैं, दल सत्ता चाहते हैं, लेकिन दोनों की दिशा हमेशा मेल नहीं खाती।'

भाजपा और पूरा NDA ब्लॉक

आज की राजनीतिक स्थिति की वास्तविकता यही है कि चाहे किसी को पसंद आए या न आए, सच्चाई यही है भारत में अभी भी सबसे सुव्यवस्थित और चुनावी रूप से तैयार मशीनरी सिर्फ भाजपा के पास है। राष्ट्रीय स्तर पर पकड़ कायम है। २०२४ चुनाव में थोड़ी गिरावट के बावजूद पार्टी सत्ता में है और पूरे सिस्टम पर उसकी पकड़ बनी हुई है। दिल्ली जैसे मुश्किल राज्य में २०२५ की जीत ने साफ कर दिया कि भाजपा कमजोर नहीं हो रही, बल्कि री-कैलिब्रेट होकर वापसी कर रही है। NDA का सबसे बड़ा हथियार यह है कि भाजपा भले १००% लोकप्रिय न रहे, लेकिन साथ चलने वाले घटक दल उसकी ताकत को दोगुना कर देते हैं। विपक्ष की विखंडित स्थिति और अंदरूनी कलह भाजपा को स्वाभाविक बढ़त दे रही है। भाजपा अभी भी 'सबसे जीतने योग्य पार्टी' है। कोई भी गंभीर विपक्षी चुनौती अभी दूर-दूर तक नहीं बनी।

क्षेत्रीय दल जिनकी जमीन क्षेत्रीय मुद्दों पर टिकी है

कई छोटे-मध्यम दलों ने यह साबित किया है कि अगर आपकी पकड़ स्थानीय समाज पर है, तो राष्ट्रीय लहर भी आपको बहा नहीं सकती। बिहार में JD(U) का प्रदर्शन, महाराष्ट्र में कई क्षेत्रीय नेताओं का मजबूती से टिके रहना, दक्षिण भारत में DMK/YSRCP/BRS जैसे दलों का वोटबैंक-आधारित असर इन दलों ने दिखाया कि स्थानीय नेतृत्व , जातीय/क्षेत्रीय समीकरण अब

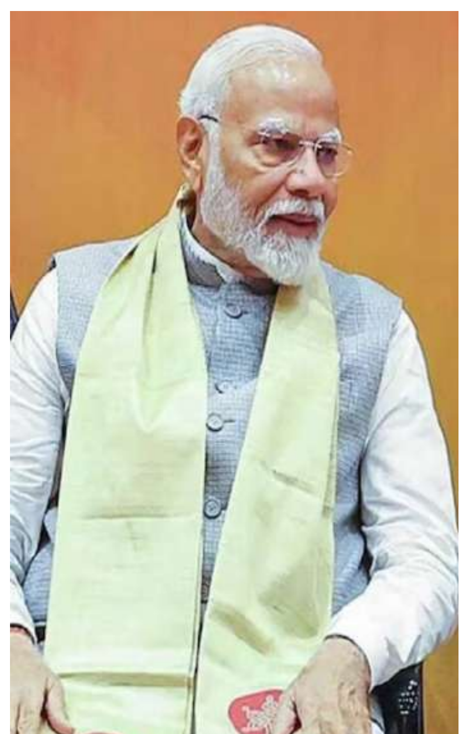

भी निर्णायक हैं।

कांग्रेस पार्टी

कांग्रेस पार्टी नाम बड़ा, पर असर छोटा दिख रहा है। कांग्रेस इस समय एक कठोर वास्तविकता में है– नेशनल पार्टी का बोर्ड लगा है, लेकिन ग्राउंड पर पार्टी कहीं नहीं है। नेतृत्व अस्पष्ट है, रणनीति बिखरी हुई, राज्य इकाइयों में मनमुटाव

और तो और गठबंधन में लगातार बैकफुट है। कांग्रेस अभी उस मोड में है जहाँ वह खुद को बचाने की लड़ाई लड़ रही है, सत्ता में आने की नहीं। और जनता को एक कमजोर पार्टी में कोई भरोसा नहीं दिखता।

यह गठबंधन कागज़ पर मजबूत दिखता है, लेकिन जमीन पर वास्तविकता कठोर है–

विचारधारा असंगत,

परस्पर अविश्वास

टिकट वितरण में झगड़े

अपने-अपने राज्यों में एक-दूसरे के दुश्मन

इस गठबंधन का सबसे बड़ा संकट यही हैः इनका दुश्मन भाजपा नहीं, बल्कि एक-दूसरे की महत्वाकांक्षा है।

AAP पार्टी

AAP पार्टी के करिश्मे की हवा निकल चुकी है। AAP की सबसे बड़ी समस्या यह नहीं कि उसने कुछ गलत किया – बल्कि यह है कि उसने खुद के वादों के भार से खुद को दबा लिया। दिल्ली में सीटें बुरी तरह घटीं, राष्ट्रीय विस्तार का प्रयोग फेल रहा, नेतृत्व पर कानूनी दबाव ... जनता को 'नई राजनीति' की चमक फीकी लगने लगी। AAP का भविष्य अभी धुंधला है, और अगर पार्टी अब भी 'हम बनाम सब' मानसिकता से नहीं निकली, तो उसकी गिरावट और तेज़ होगी।

(४) मध्य-स्तरीय क्षेत्रीय दल

महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखंड, राजस्थान। यहाँ के कई मध्यम आकार के दल या तो टूट रहे हैं, या बड़े दलों ने उन्हें निगल लिया है। इस का कारणः

संसाधन की कमी

युवा नेतृत्व का अभाव

सोशल मीडिया युद्ध में पिछड़ना

स्थानीय योजनाओं को लागू करने में नाकामी

ये दल 'ना बड़े की बराबरी कर पा रहे हैं, ना छोटे की चपलता पकड़ पा रहे हैं।'

आज की राजनीति को चलाने वाले पाँच असली फैक्टर

ये वो बातें हैं जिनके आधार पर चुनाव जीता या हारा जा रहा है – और इन्हें न समझने वाली कोई भी पार्टी टिकने वाली नहींः

संगठन : जिसके पास जमीन पर लोग हैं, वही जीतता है – बाकी सब बहाना है।

(२) संसाधनः चुनाव अब सस्ते नहीं – इसलिए धनवान दल ही लगातार दौड़ में टिक रहे हैं।

(३) सोशल-नैरेटिवः आज चुनाव सड़क पर नहीं, मोबाइल स्क्रीन पर जीते जाते हैं।

(४) गठबंधन-व्यवस्थाः कौन किस सीट पर लड़ेगा – यही आधी लड़ाई है।

(५) उम्मीदवार की लोकल स्वीकृतिः अब 'मोदी बनाम X' वाली राजनीति भी धीरे-धीरे कमजोर हो रही है – लोग अपने क्षेत्र के उम्मीदवार से जवाब चाहते हैं।

२०२५ में, देश के लगभग २० राज्यों में BJP और उसके सहयोगी दलों की सरकार है। २०२५ के हालिया विधानसभा चुनाव (मुख्य रूप से Aam Aadmi Party (AAP) - Indian National Congress (INC) - अन्य विपक्षी गठबंधनों) में भाजपा का प्रदर्शन एक बार फिर मजबूत रहा। राजनीतिक नेतृत्व और संसाधनों (पैसे, संगठन, प्रचार) के मामले में भाजपा/एनडीए फिलहाल विपक्ष से काफी आगे है। फरवरी २०२५ में हुए विधानसभा चुनाव में, भाजपा ने ७० में से ४८ सीटें जीतकर २७ साल बाद दिल्ली की सत्ता वापस हासिल की। इसके उलट, AAP (जो पिछले कई चुनावों में सत्ता में थी) - सिर्फ २२ सीटों पर सिमटी। मुख्य नेताओं की सीटें भी गयीं। मतदाता नाराज़ थे – प्रदूषण, सफाई, पानी-नालों की बदहाली, विकास वादों पर घोषणाओं के बावजूद काम नहीं होना, AAP पर भ्रष्टाचार व विश्वसनीयता के आरोप – यही कुछ बड़ा कारण बताया जा रहा है। दिल्ली में यह केवल एक 'लहर' नहीं, एक संकेत है कि शहरी वोटर – विशेषकर मध्यम/ऊपरी मिड-क्लास – अब विकास और बुनियादी सुविधाओं की असुबिधा को ज्यादा तवज्जो दे रहे हैं, और पुराने दलों (AAP) के सतत शासन मॉडल से निराश हो रहे हैं।

बिहार में नवंबर २०२५ में हुए विधानसभा चुनाव में, NDA ने २०२/२४३ सीटें जीतकर स्पष्ट बहुमत हासिल किया। नीतिश कुमार फिर मुख्यमंत्री बने। उसकी पार्टी Janata Dal (United) (JD(U)) ने अच्छा परिणाम दर्ज किया, जबकि प्रमुख विरोधी Rashtriya Janata Dal (RJD)-महागठबंधन पूरी तरह पटखनी खाई। बिहार जैसे जनसंख्या वाले, सामाजिक और जातीय जटिल राज्य में भी भाजपा/एनडीए ने अपने संगठनात्मक प्रभुत्व, स्थानीय गठबंधन रणनीति और जनता से जुड़ी नीतियों के दम पर विपक्ष को धूल चटा दी – जो संकेत है कि भारतीय राजनीति में 'राष्ट्रीय, क्षेत्रीय गठबंधन, केन्द्र-दल' का मॉडल अभी काम कर रहा है। विपक्ष यानी कांग्रेस (INC) , RJD , अन्य

१. राजनीति का पहला नियमः जवाबदेही मजबूरी बननी चाहिए, विकल्प नहीं

अभी की राजनीति में नेता जवाबदेह तब बनते हैं जब चुनाव सामने हो, बाकी समय गायब रहते हैं। हर मंत्री/सांसद/विधायक के लिए ६ महीने का पब्लिक परफॉर्मेंस रिपोर्ट कार्ड

रिपोर्ट फेल तो सीट कट। यह सिस्टम नहीं होगा तो 'हम करेंगे, देखेंगे' वाली बकवास चलती रहेगी।

२. पार्टी चलाने वाले लोग नेताओं को नहीं, डेटा को सुनें

भारतीय राजनीति अभी भी ८०% किस्से-कहानियों, धरना-भावना, जाति-गणित पर चलती है। सही राजनीति को चाहिएः

हर क्षेत्र का data-based governance model, वोट बैंक के आधार पर नीतियाँ नहीं – impact score के आधार पर, चुनाव से ज्यादा policy testing . जब तक भावना-संचालित राजनीति रहेगी, ग्राउंड पर बदलाव का १०% भी हासिल नहीं होगा।

३. राजनीति में आने का न्यूनतम योग्यता मापदंड होना चाहिए

यह बात कठोर है, पर सचः

अभी किसी को भी टिकट मिल जाता है– पैसा है, भीड़ ला सकता है, या जाति समीकरण फिट बैठता है।

सही राजनीति मेंः

न्यूनतम शिक्षा, प्रशासनिक समझ और clean record कम्पल्सरी होना

कोई भी 'अपराधिक पृष्ठभूमि वाला' चुनाव लड़ने की अनुमति ही न हो

राजनीतिक दलों के लिए candidate quality audit

अगर खिलाड़ी ही कमजोर होगा तो खेल क्या सुधरेगा?

४. राजनीति का असली काम कानून बनाना है – भाषण नहीं

भारत में ९०% सांसद/विधायक कानूनों में भागीदारी नहीं करते।

सही राजनीति मेंः

हर प्रतिनिधि का legislative contribution score: जो इनपुट नहीं दे पा रहा, उसे दोबारा टिकट न मिले

'Noise' नहीं–'Policy Depth' ही असली योग्यता, वोटरों को भी यह संस्कृति सीखनी पड़ेगी।

जनता को भी सुधरना होगा – सिर्फ नेताओं को नहीं

हमारे देश में बड़ी आबादी वोट भावना से देती है, काम से नहीं।

सही राजनीति तभी बनेगी जबः

लोग 'कौन सा नेता मेरी जाति/धर्म का है?' से आगे बढ़ें और पूछेंः 'किसने काम किया? किसका डेटा साफ है?' राजनीति का स्तर जनता के स्तर से ऊपर नहीं जा सकता।

मंत्रियों को मंत्रालय में विशेषज्ञता होनी चाहिए

ट्रांसपोर्ट मंत्री को ट्रैफिक का ABCD नहीं पता, शिक्षा मंत्री ने स्कूल कभी अंदर से देखा नहीं– और फिर भी फैसले उन्हीं के हाथ में।

सही राजनीति में domain expertise और political leadership दोनों चाहिए। वरना मंत्रालय सरकारी इंटर्नशिप बनकर रह जाते हैं

चुनाव खर्च पारदर्शी नहीं होगा, तो राजनीति हमेशा खरीदी-बेची जाएगी

चुनाव अब एक बिज़नेस मॉडल है–
निवेश करो → सीढ़ी चढ़ो → लाभ निकालो।
सही राजनीति के लिएः
हर खर्च पब्लिक पोर्टल पर
करोड़ों की निधि नहीं, state-funded campaign caps
'कैश-बेस्ड वोट इंजीनियरिंग' पर कठोर सज़ा

जब तक पैसा साफ नहीं होगा, राजनीति साफ होने का सपना बेकार है।

मीडिया को 'दलाल' नहीं–'वॉचडॉग' बनना होगा

मीडिया TRP और पेड-नैरेटिव में लगा रहेगा तो राजनीति को सुधारने का प्रेशर कभी नहीं बनेगा।
जबकि सही राजनीति मेंः
मीडिया का कामः नेता को एक्सपोज करना, चमकाना नहीं
हर बड़े घोटाले, फेलियर, या पॉलिसी मिस्टेक पर सार्वजनिक जांच
गलत खबर पर भारी दंड – ताकि फर्जी नैरेटिव न बनें

राजनीति में फोकस 'दीर्घकालीन योजना' पर हो, न कि ५ साल का जुगाड़

अभी सारा खेल हैः चुनाव तक जनता को मैनेज करो, बाद में भूल जाओ।
सही राजनीति में १५-२० साल की रोडमैपिंग
सरकार बदले तो भी योजना न बदले – बचकाना रीसेट नहीं
हर नये नेता के लिए continuity protocol
इससे देश आगे बढ़ता है, नेता नहीं।

राजनीति का लक्ष्य सत्ता नहीं – परिणाम होना चाहिए

सत्ता पाना आसान है, उसे संभालना असली परीक्षा है।
सही राजनीति हमेशा पूछेः
GDP बढ़ी?
रोजगार बढ़ा?
शिक्षा-स्वास्थ्य में सुधार हुआ?
जनता के जीवन का स्तर ऊपर गया?

अगर जवाब 'हाँ' नहीं है तो राजनीति असफल है – चाहे नेता कितना भी लोकप्रिय क्यों न हो। सही राजनीति आदर्शवाद नहीं–
कठोर सिस्टम, साफ डेटा, मजबूत कानून, गुणवत्तापूर्ण नेता और परिपक्व जनता का कॉम्बिनेशन है। बाकी सब शोर है। ■

१. 'हम हर चुनाव में मुद्दा बनते हैं, लेकिन किसी पॉलिसी में प्राथमिकता नहीं बनते।'
२. 'देश बदला या नहीं पता नहीं, पर हमारा भविष्य फंसा हुआ है।'
३. 'कर्ज का बोझ हमारा है, राजनीति का फायदा उनका है।'
४. युवा (Youth) - बेरोजगार, निराश, गुस्से में 'नेता बस पोस्टर बदलते हैं, हमारी जिंदगी नहीं।
५. डिग्री बढ़ रही है, नौकरी घट रही है।'
६. 'चुनाव के टाइम सब 'युवा' को याद करते हैं। चुनाव खत्म–सब गायब।'
७. 'हमको जाति से नहीं, करियर से पहचान चाहिए। पर राजनीति दोनों नहीं समझती।'
८. 'हम सोशल मीडिया पर लड़ते हैं, नेता हम पर हंसते हैं।'
९. किसान - थके हुए, दबे हुए, और सबसे ज़्यादा अनिश्चित
१०. 'बारिश, भाव, सरकार – तीनों भरोसे के लायक नहीं।'
११. 'किसानों की बात शहर में सिर्फ इमोशनल कंटेंट है, असलियत किसी को फर्क नहीं पड़ता।'
१२. 'कागज़ में योजना है, जमीन पर समस्या है।'
१३. 'सुरक्षा और महंगाई हमारे लिए सबसे बड़े मुद्दे हैं। नेता किसी और दुनिया में रहते हैं।'
१४. हम वोट देते हैं पर हमारी बात विधानसभा तक कभी नहीं जाती।'
१५. 'स्कीम बहुत हैं, लेकिन फायदा आधा-अधूरा ही मिलता है।'
१६. 'महिला सम्मान की बात करते हैं, लेकिन हमारा समय, हमारी सुरक्षा, हमारी मेहनत – कहीं भी एजेंडा नहीं।'
१७. 'टैक्स, पेनाल्टी और कागज़–सब बढ़ रहे हैं, पर सरकार कहती है व्यापार आसान हो गया है।'
१८. 'नीतियाँ अचानक बदलती हैं, नुकसान हम उठाते हैं।'
१९. 'महंगाई बढ़ती है, हम पिसते हैं – वो किसी को दिखता नहीं।'
२०. 'रेड, चेकिंग, चालान – काम करने से ज्यादा डर इनसे लगता है।'
२१. 'सरकारें बिज़नेस-फ्रेंडली होने का नाटक करती हैं, पर असली सुविधा सिर्फ बड़े खिलाड़ियों को मिलती है।'
२२. 'डर बेचकर वोट लिया जाता है, हमको सिर्फ शांतिपूर्ण जिंदगी चाहिए।'
२३. 'हमसे बात करने की कोशिश कोई नहीं करता, सबको सिर्फ नैरेटिव बनाना है।'
२४. 'देश हमारा भी है, लेकिन राजनीति हमें 'दूसरा' दिखाने में लगी रहती है।'

सूजी - मटर की कचौरी

सामग्रीः
आटे के लिएः
सूजी (रवा) - १ कप
पानी - १ कप
नमक - ½ छोटा चम्मच
तेल - १ बड़ा चम्मच
भरावन के लिएः
हरी मटर - १ कप (दरदरी पीसी हुई)
हींग - १ चुटकी
जीरा - ½ छोटा चम्मच
हरी मिर्च - १ (बारीक कटी हुई)
अदरक पेस्ट - ½ छोटा चम्मच
धनिया पाउडर - १ छोटा चम्मच
गरम मसाला - ¼ छोटा चम्मच
आमचूर पाउडर - ½ छोटा चम्मच
नमक - स्वादानुसार
तेल - १ बड़ा चम्मच
तलने के लिएः
तेल - आवश्यकतानुसार

विधिः एक पैन में १ कप पानी गर्म करें। उसमें ½ छोटा चम्मच नमक और १ बड़ा चम्मच तेल डालें। अब उसमें सूजी डालकर लगातार चलाते हुए गाढ़ा होने तक पकाएं। जब मिश्रण गाढ़ा हो जाए, गैस बंद करें और ठंडा होने दें। हल्का ठंडा होने पर इसे अच्छे से गूंध लें और मुलायम आटा बना लें। एक पैन में १ बड़ा चम्मच तेल गरम करें। उसमें हींग और जीरा डालें, फिर अदरक पेस्ट और हरी मिर्च डालें। अब दरदरी पीसी हुई मटर डालें और २-३ मिनट भूनें। उसमें धनिया पाउडर, गरम मसाला, आमचूर पाउडर और नमक डालकर अच्छे से मिलाएं। इसे ५-७ मिनट तक भूनें, जब तक मटर अच्छी तरह सूख न जाए। फिर गैस बंद कर दें और मिश्रण ठंडा होने दें।

सूजी के आटे से छोटी-छोटी लोइयां बनाएं। एक लोई को हल्का सा चपटा करें और उसमें १ चम्मच मटर की भरावन रखें। अब इसे चारों ओर से बंद करके गोल आकार दें और हल्का सा बेल लें। इसी तरह सारी कचौरी तैयार कर लें।

एक कढ़ाही में तेल गरम करें। जब तेल मध्यम गरम हो जाए, कचौरियों को धीमी आंच पर सुनहरा होने तक तलें। कुरकुरी और सुनहरी होने के बाद उन्हें निकालकर टिशू पेपर पर रखें। गरमा-गरम सूजी और मटर की कचौरी को धनिया-पुदीना चटनी या मीठी इमली की चटनी के साथ परोसें।

ब्रेड बर्फी

सामग्रीः
ब्रेड स्लाइस - ६ (सफेद या ब्राउन)
दूध - १ कप
चीनी - ½ कप,
घी - २ बड़े चम्मच
मावा (खोया) - ½ कप (वैकल्पिक)
काजू-बादाम (कटा हुआ) - २ बड़े चम्मच
इलायची पाउडर - ½ छोटा चम्मच
केसर - ५-६ धागे (वैकल्पिक)
पिस्ता (सजाने के लिए) - १ बड़ा चम्मच

विधिः ब्रेड स्लाइस के किनारे (क्रस्ट) काटकर निकाल दें। ब्रेड को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ लें या मिक्सी में दरदरा पीस लें। एक कढ़ाही में २ बड़े चम्मच घी गरम करें। इसमें ब्रेड का चूरा डालकर धीमी आंच पर हल्का सुनहरा होने तक भूनें। अब इसमें १ कप दूध डालें और लगातार चलाते रहें ताकि मिश्रण गाढ़ा हो जाए। इसमें ½ कप चीनी डालें और मिलाएं।

चीनी पिघलने पर मिश्रण और गाढ़ा हो जाएगा। अब इसमें ½ कप मावा डालें (अगर उपलब्ध हो) और अच्छे से मिलाएं। इसमें इलायची पाउडर और कटे हुए मेवे डालें। जब मिश्रण कढ़ाही से अलग होने लगे, तो इसे एक घी लगी प्लेट में डालें और समान रूप से फैला दें। ऊपर से कटे हुए पिस्ता और केसर डालें और हल्का दबाएं। इसे ३०-४० मिनट तक ठंडा होने दें या १५ मिनट के लिए फ्रिज में रख दें। ठंडा होने के बाद इसे चाकू से अपनी पसंद के आकार में काट लें। आपकी ब्रेड बर्फी तैयार है! इसे परोसें और आनंद लें।

ओट्स चीला

सामग्री :
ओट्स (पिसा हुआ) - १ कप
बेसन - २-३ tbsp (structure और binding के लिए, नहीं डालोगे तो चीला जल्दी टूटेगा)
दही - २ tbsp (optional, लेकिन texture बढ़िया बनाता है)
पानी - जरूरत अनुसार
प्याज़ बारीक कटा - ¼ कप
हरी मिर्च - 1–2
धनिया पत्ती - 2 tbsp
गाजर/कैप्सिकम बारीक कटा - ¼ कप (optional पर health + texture अच्छा होता है)
नमक - स्वादानुसार
हल्दी - ¼ tsp
लाल मिर्च - ½ tsp
जीरा - ½ tsp
तेल - सेंकने के लिए

विधिः ओट्स को पीसें रोल्ड ओट्स लें और मिक्सर में फाइन पाउडर बना लें। Instant ओट्स भी चलेगा, लेकिन texture उतना अच्छा नहीं आएगा। ओट्स पाउडर,बेसन, सब्ज़ियाँ, मसाले एक बाउल में डालें। 2 tbsp दही डालें (अगर soft चिला चाहते हैं, skip मत करना)। धीरे-धीरे पानी मिलाएँ और dosa-जैसा बैटर बनाएँ – न बहुत गाढ़ा, न बहुत पतला। १० मिनट बैटर को रेस्ट दें। नहीं तो ओट्स पानी सोखेगा नहीं और चीला आधा-पका लगेगा। तवा मध्यम आंच पर गरम करें। हल्का सा तेल डालें। एक करछी बैटर डालकर गोल फैलाएँ। किनारों पर थोड़ा तेल डालकर दोनों तरफ़ गोल्डन होने तक सेंकें। मध्यम आंच रखो – तेज़ आंच पर नीचे जल जाएगा और अंदर कच्चा रह जाएगा।

पोहा कटलेट

सामग्रीः
पोहा - १ कप (भिगोया हुआ)
उबले आलू - २
हरी मिर्च - १ (बारीक कटी हुई)
धनिया पत्ता - २ बड़े चम्मच
गरम मसाला - ½ छोटा चम्मच
ब्रेड क्रम्ब्स - ½ कप
नमक - स्वादानुसार
तेल - तलने के लिए

विधिः पोहा को अच्छे से निचोड़कर आलू में मिलाएं। इसमें हरी मिर्च, धनिया, नमक और मसाले डालकर अच्छी तरह गूंध लें। छोटे कटलेट बनाएं और ब्रेड क्रम्ब्स में लपेट लें। गरम तेल में कुरकुरा तलें और चटनी के साथ परोसें।

जीरा राइस

सामग्री
बासमती चावल - १ कप
नींबू का रस - १ छोटा चम्मच
इलायची- ३-४
दालचीनी -१ टुकड़ा
तेल/ घी -१ चम्मच
लोंग - ६-७
जीरा - १ छोटा चम्मच
काली मिर्च - ८-१०
तेजपत्ता- १
हरा धनिया - सजावट के लिए
नमक - स्वादअनुसार

विधिः -सबसे पहले चावलों को ३-४ पानी से अच्छी तरह धो लें और आधा घंटे के लिए पानी में भिगोने के लिए रख दे। अब एक बर्तन में तेल या घी डालकर गर्म करें, तेल गर्म हो जाने पर इसमें जीरा, दालचीनी, लौंग, इलायची, तेजपत्ता, काली मिर्च डालें और १ मिनट के लिए चटकने तक भुने। अब भिगोए हुए चावलों में से अतिरिक्त पानी निकाल दे और चावलों को मसाले में डाले। अब अच्छी तरह से चलाते रहें ताकि चावल और मसाले जले नहीं, इसे २ मिनट के लिए भूनें।

सरकारी बंगलेः

विशेषाधिकार की परंपरा और पूर्व मंत्रियों का बंगला नहीं छोड़ने का पैटर्न...

भारत में 'सरकारी बंगलों' की परंपरा औपनिवेशिक दौर से चली आ रही है। दिल्ली के लुटियंस ज़ोन जैसे इलाक़ों में बने ये विशाल, हरियाली से घिरे, कई कमरे वाले आवास कभी ICS अधिकारियों और उच्च ब्रिटिश हुक्मरानों के लिए बनाए गए थे। आज़ादी के बाद ये बंगले सांसदों, मंत्रियों, वरिष्ठ अधिकारियों और कुछ विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्तियों के लिए आरक्षित हो गए। समस्या तब पैदा हुई जब ये बंगले 'कुर्सी से जुड़े अस्थायी आवास' के बजाय 'स्थायी सुविधा' का रूप लेने लगे। कई नेता पद छूटने के बाद भी वर्षों तक यह आवास खाली नहीं करते। हर चुनाव, हर कार्यकाल, और हर सरकार बदलने पर यह मुद्दा बार-बार सामने आता है।

यह रिपोर्ट बताती है कि सरकारी बंगला होता क्या है,

१. 'मंत्री पद छूटे, बंगला नहीं'
२. बंगले की कीमत यानि राजनीति में बड़ा प्रतीक
३. सामान्य किराए की तुलना में सैकड़ों गुना सस्ते
४. सुविधाओं से भरपूर,
५. करोड़ों की निजी प्रॉपर्टी के बराबर
६. मुख्यमंत्री आवासों का विवाद वर्षों से
७. मंत्री आते-जाते हैं, पर बंगला जाने नहीं देते।
८. हाई कोर्ट की फटकार

सरकारी बंगले – मूल क्या है

भारत में – खासकर दिल्ली में – ब्रिटिश कॉलोनियल दौर से बनी 'लेटियन्स ज़ोन / Lutyens' Delhi' जैसी जगहों पर बड़े, आलीशान सरकारी बंगले बनाए गए थे, जिन्हें बाद में यूनियन मंत्रियों, सांसदों, वरिष्ठ अधिकारियों आदि को आवास के रूप में अलॉट किया गया। ये बंगले 'Type VII', 'Type VIII' आदि श्रेणियों में होते हैं – पद, रैंक या ज़रूरत के हिसाब से। इनका किराया सरकार तय करती है – हालांकि, किराया नाम मात्र रहता है, इसलिए ये वीआईपी-स्टाइल के आवास बन गए। जब कोई राजनेता अपना पद खो देता है (मंत्री नहीं रहता, सांसद नहीं रहता, SPG सुरक्षा बचती नहीं आदि), तो उसका सरकारी बंगला आवंटन रद्द हो जाता है – यानी उसे खाली करना पड़ता है।

किन नियमों के तहत आवंटित और रद्द होता है, और किन प्रमुख नेताओं को वर्षों में इन्हें खाली करने पड़े या आदेश प्राप्त हुए।

१. सरकारी बंगले की व्यवस्था क्या है?

केंद्र सरकार (Directorate of Estates) मंत्रियों, सांसदों और उच्च अधिकारियों को पदानुसार आवास देती है। बंगले Type IV से लेकर Type VIII और उससे ऊपर की श्रेणियों में आते हैं–जिनमें लुटियंस क्षेत्र के बड़े बंगले सबसे महंगे और प्रतिष्ठित माने जाते हैं। किराया नाममात्र होता है, इसलिए यह सुविधा भारतीय राजनीति की सबसे आकर्षक 'VIP लूट' मानी जाती है। पद छूटते ही आवास खाली करने का नियम है–लेकिन व्यवहार में अक्सर नोटिस, कानूनी प्रक्रियाएँ, बिजली-पानी कटौती और महीनों की खींचतान के बाद बंगला खाली होता है।

२. बंगला खाली करने की ज़रूरत क्यों पड़ती है?

लोकसभा/राज्यसभा सदस्यता समाप्त होना

मंत्री पद से हटना

सुरक्षा श्रेणी (जैसे SPG) का हटना

अदालत का सीधा आदेश

विभाग द्वारा अवैध कब्जा घोषित करना

सरकार का दावा है कि बार-बार नोटिस देने के बावजूद बड़ी संख्या में पूर्व सांसद और पूर्व मंत्री बंगला नहीं छोड़ते। यह नया सांसदों/मंत्रियों के आवास allotment को प्रभावित करता

महाराष्ट्र में सरकारी बंगले लगातार राजनीतिक विवादों के केंद्र में रहे हैं। २०१४ में २२ पूर्व मंत्रियों को एक साथ बंगला खाली करने के नोटिस मिले थे–क्योंकि वे पद छोड़ने के बाद भी महीनों तक आवास में जमे हुए थे। मुंबई के मालाबार हिल और पेडर रोड जैसे करोड़ों की लोकेशन वाले सरकारी बंगले कई नेताओं के लिए 'न्ध्ङ स्थायी घर' जैसे बन गए हैं, जबकि ये पदानुसार अस्थायी सुविधा होते हैं। हाई कोर्ट ने सरकार को कई बार फटकार लगाई कि पूर्व मंत्री सरकारी आवास को निजी संपत्ति की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। मुख्यमंत्री आवासों को लेकर भी विवाद रहे–कई बार नए ण्ञ को पुराने परिसर खाली होने का इंतजार करना पड़ा। कुल मिलाकर महाराष्ट्र में सरकारी बंगले राजनीतिक शक्ति, प्रतिष्ठा और विशेषाधिकार की सबसे केंद्रीय लड़ाई में बदल जाते हैं।

है।

अपनी किताब में चंद्रशेखर लिखते हैं कि उन दिनों इंदिरा जी सफदरजंग की अपनी सरकारी कोठी में ही थीं। बात करते हुए उन्होंने महसूस किया कि इंदिरा गांधी बेहद परेशान हैं। उनको अपनी और परिवार की चिंता सता रही है। कहने लगीं कि बहुत परेशानी है, लोग आकर बताते हैं कि संजय गांधी को जलील किया जाएगा। दिल्ली में घुमाया जाएगा। मुझे मकान नहीं मिलेगा। हमारी सुरक्षा खत्म कर दी जाएगी। इंदिरा गांधी की बात सुनकर मुझे हैरानी हुई। मैं सीधे वहां से मोरारजी भाई के पास गया। मैंने उनसे पूछा कि क्या आप इंदिरा जी को मकान नहीं देंगे? मोरारजी भाई ने कहा कि नहीं देंगे क्योंकि नियम में नहीं आता। मैंने उन्हें बताया कि जाकिर हुसैन, लाल बहादुर शास्त्री, ललित नारायण मिश्र के परिवार को मकान मिला हुआ है? मोरारजी भाई ने कहा कि मैं उनका भी कैंसिल कर दूंगा।

मैंने उनसे कहा कि जिस परिवार ने स्वराज भवन और आनंद भवन देश को दे दिया, जो महिला ११ साल प्रधानमंत्री रहीं, उनको रहने के लिए आप मकान तक नहीं देंगे? इसके बाद मोरारजी भाई से मेरी बड़ी बहस हुई। अंत में वह माने, यह कहते हुए कि जब आप कहते हैं तो मकान दे दूंगा। ऐसे इंदिरा परिवार संग पहुंची '१२, विलिंग्डन क्रिसेंट' वैसे मकान खाली करने को लेकर इंदिरा गांधी काफी परेशान थीं। इस मामले पर राशिद किदवई अपनी किताब

२४ अकबर रोड में लिखते हैं कि आपातकाल के बाद का समय इंदिरा गांधी के लिए परीक्षा साबित हो रहा था। न केवल वह अपनी सारी पावर गंवा चुकी थी बल्कि पद जाने के साथ ही उनका सरकारी आवास भी हाथ से निकल गया था। उनका महरौली स्थित फार्म हाउस भी अभी अधबना ही था और बहुत तेजी के साथ उनके दोस्त भी साथ छोड़ रहे थे, जिनमें विश्वसनीय दोस्त भी शामिल थे।

जब इंदिरा गांधी की दिक्कतें और बढ़ीं तो उनके पुराने वफादार मोहम्मद युनूस ने अपना १२ विलिंगडन क्रीसेंट सरकारी आवास उनके परिवार को रहने के लिए दिया और खुद दक्षिण दिल्ली स्थित अपने निजी आवास में चले गये। इस तरह १२ विलिंगडन क्रीसेंट गांधी परिवार का नया ठिकाना बना। इंदिरा गांधी वहां राजीव गांधी, सोनिया गांधी, बच्चे राहुल और प्रियंका, संजय गांधी, मेनका गांधी और पांच पालतू कुत्तों के साथ आईं लेकिन इस घर में इतनी जगह नहीं थी कि यहां से किसी तरह की राजनीतिक गतिविधियां चलाई जा सकें। इसलिए २४ अकबर रोड को कांग्रेस का नया हेडक्वॉर्टर बनाया गया जो कि अगले चार दशक बहुत भाग्यशाली साबित हुआ। इस भवन का एक फायदा यह भी था कि इसका एक दरवाजा १० जनपथ को जोड़ता था, जो उस समय यूथ कांग्रेस का दफ्तर हुआ करता था। कई वर्षों से १०, जनपथ सोनिया गांधी को मिला हुआ बंगला है। यह बंगला प्रधानमंत्री आवास से भी बड़ा है।

राहुल गांधी के घर खाली करने पर Mallikarjun Kharge बोले- मेरे घर में रहेंगे राहुल। मोहम्मद युनुस खान, इंदिरा गांधी के काफी करीबी माने जाते थे। यूनुस साल १९७४ में वाणिज्य मंत्रालय के सचिव के रूप में सेवानिवृत्त हुए थे। उसके बाद १९७५ में उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के विशेष दूत के रूप में नियुक्त किया गया था। वहीं १९७५ से १९७७ यानि आपातकाल के दौरान , यूनुस खान, इंदिरा गांधी के सबसे भरोसेमंद सलाहकारों में से एक थे। तब मोहम्मद युनुस इसी सरकारी बंगले १२ विलिंगडन क्रिसेंट में रहते थे। प्रमुख मामले जब नेताओं को बंगला खाली करना पड़ा या आदेश मिला। नीचे उन मामलों का चयन है, जो अधिक चर्चा में रहे–केंद्र से लेकर राज्यों तक।

राहुल गांधी

लोकसभा सदस्यता समाप्त होने के बाद १२, तुग़लक रोड का उनका आधिकारिक आवास छोड़ना पड़ा। यह मामला राष्ट्रीय स्तर पर सबसे चर्चित रहा।

स्मृति ईरानी

२०२४ लोकसभा चुनाव हारने के बाद उन्होंने लुटियंस का २८ Tughlak Crescent बंगला खाली किया।

Adhir Ranjan Chowdhury – २०१६ में, मंत्री पद छोड़ने के बाद उनके दिल्ली के Type-VIII बंगले से निकाले जाने का मामला सामने आया था।

Ambika Soni और Kumari Selja – २०१५ में दिल्ली हाई कोर्ट के आदेश पर दोनों को उनके राजकीय बंगले खाली करना पड़ा था।

अरविंद केजरीवाल : दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद अरविंद केजरीवाल ने अपना सरकारी आवास खाली कर दिया. राजनीति में आने से पहले दिल्ली से सटे गाजियाबाद में अरविंद केजरीवाल परिवार के संग रहते थे. जब वे पहली बार २०१३ में दिल्ली के मुख्यमंत्री बने थे, तब आईटीओ के समीप तिलक लेन के सरकारी फ्लैट मैं कुछ समय तक रहे. दोबारा वर्ष २०१५ में जब पूर्ण बहुमत से आम आदमी पार्टी की सरकार बनी तब से लेकर अभी तक अरविंद केजरीवाल सिविल लाइंस स्थित इसी सरकारी आवास में रह रहे थे. इसी आवास के एक हिस्से में मुख्यमंत्री कार्यालय भी चल रहा था.

लेकिन वर्ष २०२० में जब तीसरी बार केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री बने तब इस सरकारी आवास के सौंदर्यीकरण का फैसला लिया गया. उसके बाद से यह सरकारी आवास विवादों के चलते सुर्खियों में आ गया. विपक्ष ने इसे शीशमहल का नाम दिया. इसके सौंदर्यीकरण पर करोड़ों रुपए खर्च हुए और तब से आम आदमी पार्टी में केजरीवाल के करीबी नेताओं को ही इस आवास में एंट्री थी. बाहर से आए आगंतुकों के लिए एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित रखा गया था. आज आखिरकार यह आवास छोड़कर अरविंद केजरीवाल आम आदमी पार्टी के सांसद अशोक मित्तल को नई दिल्ली के फिरोजशाह रोड स्थित बंगला नंबर ५ में परिवार संग शिफ्ट हुए.

१६वीं लोकसभा समाप्त होने पर लगभग २०० से अधिक पूर्व MPs को बंगला खाली करने के नोटिस जारी हुए। कईयों के बिजली-पानी कनेक्शन तक काटने पड़े।

पूर्व केंद्रीय मंत्री

A. राजा, दयानिधि मारन, एस. एम. कृष्णा, CP जोशी, पवन बंसल आदि–ये सभी मंत्री पद छोड़ने के बाद भी बंगले में बने रहे, जिन्हें अंततः खाली करना पड़ा।

उत्तर प्रदेश के ६ पूर्व मुख्यमंत्री

सुप्रीम कोर्ट ने साफ़ आदेश दिया कि कोई भी पूर्व CM स्थायी रूप से सरकारी बंगला नहीं रख सकता। इसे खाली करना पड़ा-

मुलायम सिंह यादव
अखिलेश यादव
मायावती
राजनाथ सिंह
कल्याण सिंह
नारायण दत्त तिवारी

महाराष्ट्रः सरकारी बंगले-संबंधी विवाद

महाराष्ट्र उन राज्यों में है जहाँ पूर्व मंत्रियों द्वारा बंगले नहीं छोड़ने की समस्या बार-बार सामने आती है। कई मंत्री पद छोड़ने के बाद भी महीनों तक सरकारी आवास में टिके रहते हैं।

वजहः राजनीतिक पहुँच, विभागों की ढीली कार्रवाई और व्यवस्था में 'VIP स्थायी अधिकार' वाला मानसिकता।

एक बार में २२ पूर्व मंत्रियों को नोटिस (२०१४)

राज्य सरकार ने एक साथ २२ पूर्व मंत्रियों को सरकारी बंगले खाली करने का नोटिस दिया था। ये मंत्री नई सरकार आने के बाद भी महीनों तक अपने आवास में जमे रहे थे। यह मामला मीडिया में खूब उछला, क्योंकि कुछ मंत्री लगभग एक साल तक बंगले में रहे। महाराष्ट्र में आवास विभाग (GAD + PWD) ये मान चुका है कि हर कार्यकाल खत्म होते ही २०-३०% पूर्व मंत्री बंगला खाली नहीं करते। कई बार राज्य सरकार को बिजली-पानी कनेक्शन काटने जैसी कार्रवाई तक करनी पड़ी। महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री आवासों–जैसे 'वर्षा', 'राजभवन के पास के बंगले', 'सागर' और 'रामटेक'–को लेकर भी विवाद रहे हैं कुछ CMs के परिवार पद छोड़ने के बाद भी लंबे समय तक परिसर में रह गए,...

(शेष पृष्ठ : ४० पर)

राशिफल

मेष राशिः मेष राशि के जातकों को दिसंबर महीने के पूर्वार्ध में कोई भी बड़ा निर्णय जल्दबाजी में लेने से बचना होगा। यदि आप नौकरी में बदलाव की सोच रहे हैं तो इस दौरान बहुत सोच-समझकर इस संबंध में फैसला लें। दिसंबर महीने के दूसरे सप्ताह में बेवजह की चीजों में धन का अपव्यय होने के कारण मन खिन्न रहेगा। इस दौरान आपके स्वजनों के साथ किसी बात को लेकर वाद-विवाद हो सकता है। यह समय प्रेम संबंध में सावधानी के साथ कदम आगे बढ़ाने का रहेगा अन्यथा बनती बात भी बिगड़ सकती है। माह के मध्य का समय आपको थोड़ी राहत देने वाला रहेगा। इस दौरान नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर से अपेक्षित सहयोग और समर्थन मिलेगा। कार्यक्षेत्र में मिले टारगेट को आप समय से पूरा करने में कामयाब हो जाएंगे। यह समय कारोबार की दृष्टि से भी बेहद शुभ रहने वाला है।

वृषभ राशिः वृषभ राशि के जातकों के लिए दिसंबर का महीना काफी उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है, ऐसे में इस माह आपको प्रत्येक कार्य को बेहद सूझबूझ के साथ करने की आवश्यकता रहेगी। इस माह आप उन लोगों से उचित दूरी बनाए रखें जो आपको गुमराह करने की आवश्यकता करते हैं। माह की शुरुआत में आपका मन न सिर्फ कामकाज से जुड़ी समस्याओं को लेकर बल्कि घरेलू समस्याओं को लेकर भी बहुत ज्यादा व्यथित रहेगा। इस दौरान आपके धनागम के स्रोत प्रभावित होंगे जिसके चलते आपको आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। नौकरीपेशा वाले व्यक्तियों के लिए माह का पूर्वार्ध कठिनाई भरा रहने वाला है। इस दौरान आपको अपने काम में लापरवाही करने से बचते हुए प्रत्येक कार्य को अत्यधिक सावधानी से कार्य करना होगा। आपको पूरे महीने इस बात को गांठ बांधकर रख लेना होगा कि आपका आत्मविश्वास ही आपकी हर समस्या का समाधान है। जल्दबाजी में भूलकर भी कोई भी काम न करें।

मिथुन राशिः मिथुन राशि के जातकों के लिए दिसंबर का महीना शुभता और सौभाग्य लिए हुए है, आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। माह के दूसरे सप्ताह में करियर-कारोबार के सिलसिले में की गई यात्रा सफल और लाभप्रद साबित होगी, लेकिन इस दौरान आपको लोगों के साथ विनम्रता से पेश आना होगा।है। कार्यक्षेत्र में आपकी महत्ता बढ़ेगी। सीनियर आप पर मेहरबान रहते हुए आपको कोई बड़ा पद दे सकते हैं। इस माह आपके लिए धन-धान्य के साथ अचल संपत्ति की प्राप्ति का योग बन रहा है। यदि किसी भूमि-भवन या फिर पैतृक संपत्ति को लेकर कोई विवाद चल रहा था तो इस माह उसका समाधान दिसंबर महीने के पूर्वार्ध में निकल आएगा। माह के उत्तरार्ध में आपकी अपने पार्टनर के साथ साझेदारी और मजबूत होगी। आपसी तालमेल को बेहतर बनाते हुए आप कोई बड़ी बिजनेस डील कर सकते हैं। माह का उत्तरार्ध खुशियों भरा रहने वाला है।

कर्क राशिः कर्क राशि के जातकों को इस माह करियर-कारोबार से जुड़ा कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पहले अपने शुभचिंतकों से जरूर सलाह लेनी चाहिए। कर्क राशि के जातक यदि परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी कर रहे हैं तो उन्हें मनचाही सफलता के लिए सामान्य से अधिक परिश्रम और पूरे मनोयोग के साथ अध्ययन की आवश्यकता रहेगी। रिश्ते-नाते को बेहतर बनाए रखने के लिए कर्क राशि के जातकों को अहं भाव छोड़ना पड़ेगा। अनचाही जगह पर तबादला भी संभव है। नौकरीपेशा लोगों को इस दौरान अत्यंत ही सावधानी के साथ अपने काम को करने की आवश्यकता रहेगी। आपकी एक गलती पर पूर्व में की गई मेहनत और प्रयास निरर्थक हो सकते हैं। कर्क राशि के जातकों को दिसंबर महीने में कोई कार्य करते समय जल्दबाजी से बचना होगा।

सिंह राशिः सिंह राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना दिसंबर अत्यंत ही शुभ और लाभप्रद रहने वाला है। इस माह आपको करियर-कारोबार से लेकर घर-परिवार में हर चीजें मन मुताबिक होती नजर आएंगी। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं और कोई नया कारोबार प्रारंभ करना चाहते हैं तो आपकी यह कामना इस माह पूरी हो सकती है। माह के पूर्वार्ध में कोई बड़ी कारोबारी डील होने के कारण आपकी बाजार में साख बढ़ेगी। इस दौरान व्यवसाय में लाभ से आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और आप किसी बड़े कर्ज के बोझ से मुक्त हो सकते हैं। माह के मध्य में आपको कामकाज के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। माह के उत्तरार्ध में परिवार के किसी सदस्य की बड़ी उपलब्धि से समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। नवंबर का महीना रिश्ते-नाते की दृष्टि से अत्यंत ही शुभ रहने वाला है। यदि आप प्रेम संबंध

में हैं तो इसमें आ रही अड़चन दूर होंगी।

कन्याः कन्या राशि के जातकों को इस सप्ताह तमाम तरह की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी ऊर्जा, समय और धन का प्रबंधन करके चलना होगा। माह की शुरुआत में अचानक से कुछेक बड़े खर्च आ सकते हैं जिसके चलते आपका बना-बनाया बजट बिगड़ सकता है। इस दौरान परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य की सेहत आपकी चिंता बन सकती है। माह के मध्य में नौकरीपेशा लोगों के कामकाज में बदलाव के संकेत मिल रहे हैं। इस दौरान आपके सिर पर अचानक से कामकाज का अतिरिक्त बोझ आ सकता है। सेहत और संबंध दोनों को लेकर आपको माह के उत्तरार्ध में थोड़ा ज्यादा सतर्क रहना होगा। इस दौरान आपको भावना में बह कर कोई बड़ा निर्णय लेने से बचना चाहिए।

तुला राशिः इस माह आपके सोचे हुए कार्य मनचाहे तरीके से पूरे तो होंगे लेकिन उसके लिए आपको परिश्रम और प्रयास थोड़ा ज्यादा करना पड़ सकता है। माह की शुरुआत में आपको कारोबार में लाभ तो होगा लेकिन उसके मुकाबले खर्च की अधिकता रहेगी। इस दौरान नौकरीपेशा लोगों को जीवन में आगे बढ़ने के अच्छे अवसर प्राप्त हो सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपको कोई बड़ा प्रोजेक्ट सौंपा जा सकता है। बड़ा पद या पोजीशन प्राप्त होने पर निश्चित तौर पर आपकी धाक बढ़ेगी लेकिन उसके साथ जिम्मेदारियां भी बढ़ेंगी। सुखद पहलू यह है कि माह के पूर्वार्द्ध में आपको स्वजनों और विशेष तौर पर लाइफ पार्टनर या फिर लव पार्टनर की तरफ से पूरा सहयोग और समर्थन मिलेगा, जिससे आपके भीतर आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यवसाय की दृष्टि से माह के मध्य का समय थोड़ा उतार-चढ़ाव भरा रह सकता है।

वृश्चिक राशिः दिसंबर महीने में आपको करियर-कारोबार में अनुकूलता बनी रहेगी। माह की शुरुआत से आपको कारोबार में मनचाहा लाभ मिलता हुआ नजर आएगा। व्यावसायिक क्षेत्र में उन्नति करने के योग बनेंगे। माह के दूसरे सप्ताह तक आप कोई बड़ी कारोबारी डील कर सकते हैं। इस दौरान नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में मनमुताबिक सफलता मिलेगी। सीनियर आपके काम को सराहेंगे। नौकरी में पदोन्नति के योग बनेंगे। किसी अच्छे संस्थान से अच्छा ऑफर भी आ सकता है। यदि आप लंबे समय से किसी मनचाही जगह पर तबादले के लिए प्रयासरत थे तो इस माह के अंत तक आपको आपके अनुकूल स्थानांतरण संभव है। इस दौरान पारिवारिक विवाद आपसी बातचीत के जरिए सुलझेंगे। उच्च शिक्षा की दिशा में किए जा रहे प्रयास सफल होंगे। बेरोजगार लोगों को रोजगार की प्राप्ति होगी।

धनु राशिः धनु राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना शुभता लिए हुए है। माह की शुरुआत में आपको आवश्यक कार्यों को निपटाने के लिए जरा ज्यादा भागदौड़ करनी पड़ सकती है। इस दौरान आपके सत्ता-सरकार से जुड़े लोगों के साथ संपर्क स्थापित होंगे। जिनकी मदद से आपके अटके कार्यों में गति आएगी। भाग्य का पूर्ण सहयोग मिलने के कारण आपको अपने सीनियर की तरफ से पूरा सहयोग समर्थन मिलता हुआ नजर आएगा। सभी के साथ बेहतर तालमेल बिठाते हुए आप अपने टारगेट को समय से पहले पूरा करने में कामयाब हो जाएंगे। इस माह नौकरीपेशा लोगों की अतिरिक्त आय के स्रोत बनेंगे। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं और कोई नया कारोबार शुरू करने की योजना बना रहे हैं तो वह सफल हो सकती है। इस माह आपके निर्णय क्षमता श्रेष्ठ साबित होगी।

मकर राशिः मकर राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस माह आपको किसी भी कार्य को बड़ी सूझबूझ के साथ और समय पर करने का प्रयास करना होगा अन्यथा बनता काम भी बिगड़ सकता है। इस दौरान कामकाज में आने वाली अड़चनों के चलते आपके भीतर क्रोध की अधिकता देखने को मिलेगी। व्यवसाय से जुड़े लोगों को दिसंबर महीने के पूर्वार्ध में कारोबार में लाभ तो होगा लेकिन उसके मुकाबले खर्च की अधिकता बनी रहेगी। जिसके कारण उन्हें आर्थिक संतुलन बनाए रखने में दिक्कत आ सकती हैं। किसी भी योजना में जल्दबाजी में निवेश करने की भूल न करें, अन्यथा हानि उठानी पड़ सकती है। माह के मध्य बाजार में फंसा हुआ धन अप्रत्याशित रूप से निकल सकता है। माह के उत्तरार्ध में नौकरीपेशा लोगों का स्थानांतरण या फिर उनकी जिम्मेदारियों में बदलाव हो सकता है। इस दौरान आपको कार्यक्षेत्र में मिले हुए टारगेट को पूरा करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम और प्रयास करने होंगे।

कुंभ राशिः कुंभ राशि के जातकों को इस माह अपने सोचे हुए कार्य को समय से पूरा करने और मनचाही सफलता और लाभ को पाने के लिए कठिन परिश्रम और प्रयास करने होंगे। माह के पूर्वार्द्ध का समय आपके पक्ष में रहने वाला है। इस दौरान आपको घर और बाहर दोनों जगह शुभचिंतकों की तरफ से सहयोग और समर्थन मिलेगा। दिसंबर महीने के पूर्वार्ध में विदेश यात्रा अथवा लंबी दूरी की यात्रा के योग बन सकते हैं। यात्रा सुखद एवं नये संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। माह के मध्य का समय आपके लिए अत्यंत ही शुभ रहने वाला है। इस दौरान आपको भाग्य का भरपूर साथ मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों को कारोबार में मनचाहा लाभ होगा। आर्थिक स्थिति मजबूत रहने से जमा संचित धन में वृद्धि होगी।

मीन राशिः दिसंबर के पूर्वार्ध में आप अपने कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए बड़ी पूंजी खर्च कर सकते हैं। इस माह साझेदारी में कारोबार करने के लिए लाभ प्राप्ति के उत्तम योग बनेंगे। विशेष रूप से माह के मध्य में आपको पूर्व में किए गए निवेश से बड़ा लाभ मिलेगा। परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे को लोगों को इस दौरान बहुप्रतीक्षित शुभ समाचार की प्राप्ति संभव है। इस दौरान आपको सहपाठियों से सुख-सहयोग प्राप्त होगा। साथी-संगी के साथ सुखद समय बिताने के अवसर प्राप्त होंगे। यदि आप लंबे समय से रोजी-रोजगार के लिए प्रयासरत हैं तो आपको इस माह के अंत तक किसी शुभचिंतक की मदद से मनचाहा काम मिल सकता है। माह के उत्तरार्ध में आपका मन धार्मिक कार्यों में रमेगा।वहीं पहले से कार्यरत लोगों को माह के उत्तरार्ध में प्रमोशन की खुशखबरी मिल सकती है।■

मेघालय सिर्फ 'tourist place' नहीं है – यह भारत का सबसे साफ, शांत, संस्कृति और प्रकृति से भरपूर राज्य है। दिसंबर में यहाँ का मौसम, पानी, दृश्य और वातावरण – सब मिलकर इसे साल का सबसे मजबूत travel option बना देते हैं। अगर तुम भीड़, शोर, commercialization से दूर किसी असली nature trip की तलाश में हो, तो मेघालय are-you-sure वाला नहीं, सीधा yes वाला destination है।

मेघालय

बादलों की धरती का असली अनुभव

अगर तुम भारत में ऐसी जगह ढूँढ रहे हो जहाँ भीड़ कम हो, हवा साफ लगे, पानी काँच जैसा साफ दिखे, और प्रकृति अपने सबसे शांत रूप में दिखे – तो मेघालय सीधे-सीधे टॉप पर आता है। दिसंबर में यहाँ मौसम इतना बैलेंस्ड होता है कि न हिमालय की तरह कठोर ठंड, न दक्षिण भारत जैसी उमस। साफ सड़कें, disciplined tourism, और दुनिया की सबसे खूबसूरत प्राकृतिक संरचनाएँ – मेघालय वो जगह है जहाँ जाकर लगता है कि भारत कितना underrated हो सकता है। सीधे शब्दों में कहें तो यह प्रकृति , शांति, एडवेंचर का बैलेंस पैकेज है।

भीड़ न के बराबर compared to Himachal/ Goa

मौसम दिसंबर में 20–8°C, बहुत आरामदायक

Hygiene और cleanliness भारत में rare level की

दुनिया के सबसे अनोखे spots: Living Root Bridges Asia का सबसे साफ गाँवः

Mawlynnong, Crystal-clear river: Dawki, Deep natural caves

लोकल लोग शांत, honest और बेहद welcoming

२. यहां कैसे पहुँचे?

Nearest Airport: Guwahati (Assam)

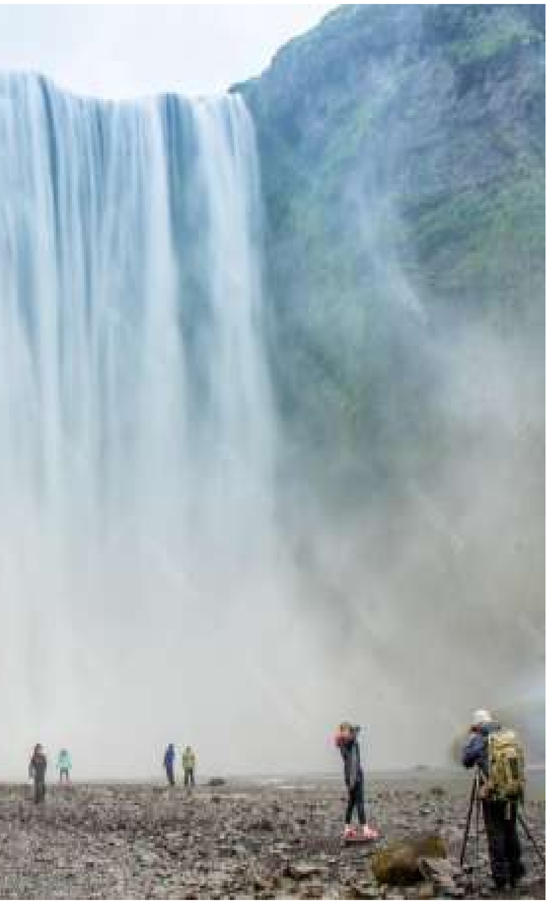

१. भारत का सबसे साफ, सबसे हरा और सबसे 'कमर्शियल-फ्री' हिल-स्टेट।

२. बारिश, बादल, झरने और जंगल – पूरा राज्य नेचरल लगता है।

3. Zero noise, pure air, और अलग संस्कृति का अनुभव।

4. Shillong: कैफ़े, म्यूज़िक, वर्डरोब, झीलें, पीक।

5. Cherrapunji: वॉटरफॉल्स, लिविंग रूट ब्रिजेज, गहरे क्लाउड वैली।

6. Mawsynram: पृथ्वी का सबसे बारिश वाला इलाका।

7. Dawki – Umngot River: क्रिस्टल-क्लियर पानी

8. Mawlynnong: एशिया का सबसे साफ़ गाँव।

वहीं से Shillong (राजधानी) → १०० किमी (३ घंटे)

Best Option:

Guwahati उड़ान → Shillong shared taxi (₹500–600)

पूरा क्षेत्र cab-based है, public transport weak है

३. दिसंबर का मौसम (Why it's perfect)

तापमान: 8°C–18°C

आकाश साफ, कम बारिश

रोड कंडीशन बेहतर

Photography — cloud formations insane

Waterfalls में पर्याप्त पानी

Bottom line: घूमने के लिए साल का सबसे स्मार्ट महीना।

घूमने की मुख्य जगहें (Smart Order में)

(A) Shillong (Day 1–2)

Umiam Lake

Ward's Lake

Police Bazaar (प्रैक्टिकल क्योंकि यहीं hotel cluster है)

Shillong Peak

Elephant Falls

Best month: Dec–Feb (minimum sediment)

Mawlynnong Village

Asia का सबसे साफ गाँव

Bamboo Skywalk

Shillong शहर सुंदर है, लेकिन असली मेघालय शहर के बाहर है।

(B) Cherrapunji / Sohra (Day 2–4)

यह मेघालय का core tourist zone है।

Seven Sisters Falls

Nohkalikai Falls - भारत की सबसे ऊँची single-drop waterfall

Arwah Cave – easy, scenic

Mawsmai Cave – slightly adventurous

Eco Park – valley views

Double Decker Living Root Bridge (serious trek: 6–7 hours)

Root Bridges = पूरी दुनिया में unique

और दिसंबर में trek conditions सबसे अच्छे।

(C) Dawki + Mawlynnong (Day 4–5)

Dawki River (Umngot River)

पानी इतना साफ कि नाव हवा में तैरती लगती है

Root bridge (छोटा लेकिन photogenic)

(D) Jowai (Optional Day 5–6)

Krang Suri Waterfall (Top-tier beauty)

Tyrshi Falls

Cleanest blue lagoon vibes

अगर फोटोग्राफी पसंद है → Jowai must add.

६. बजट

□ Per Person (5–6 day trip):

Flight (India major cities → Guwahati): ₹5,000–9,000

Taxi + Local Travel: ₹6,000–9,000

Hotel 4 nights: ₹3,000–6,000

Food: ₹1,500–2,000

Entry + Activities: ₹500–1,000

Total Practical Budget:

□ ₹15,000–25,000 (mid-budget)

Luxury पर जाओ तो ₹४०k तक जाता है, लेकिन इसकी जरूरत नहीं है।

खाने-पीने में क्या मिलेगा? (Local Food)

मेघालय के Khasi और Garo ट्राइब बहुत simple food रखते हैं:

Jadoh (red rice + light meat)

Tungrymbai (soybean-based)

Dohneiiong

Bamboo shoot dishes

Organic fruits

अगर आप नोनवेज हो – कोई समस्या नहीं। Shillong + Sohra में नोनवेज café भरपूर हैं।

८. लोकल लोग और संस्कृति

Matrilineal society — property women के नाम

Crime rate बेहद कम

लोग शांत, helpful, झगड़े नहीं

Cleanliness का असल अर्थ यहाँ समझ आता है

Tourist exploitation लगभग न के बराबर

Reality: यह भारत का सबसे disciplined tourist region है।

Practical टिप्स (झंझट बचाने के लिए)

रात में long travel avoid करो – धुंध अधिक होती है

Cash carry रखो – कई जगह UPI चलता है, लेकिन पूरी गारंटी नहीं

Root Bridge trek छोटे बच्चों/बुज़ुर्गों के लिए नहीं

Shillong में hotel पहले से बुक कर लो – December में rush

Pollution almost zero है – breathing genuinely feels better ■

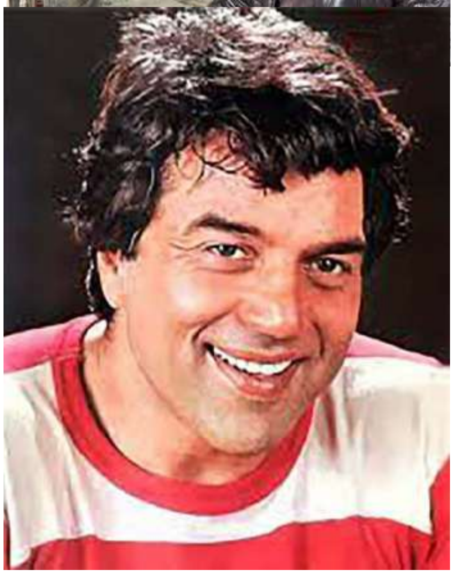

पंजाब का मूर्तिकार बना रहा धर्मेंद्र का स्टैच्यू

बॉलीवुड के 'ही-मैन' और पंजाब के पुत्र धर्मेंद्र के निधन से जहां पूरी फिल्म इंडस्ट्री और उनके प्रशंसक शोक में डूबे हैं, वहीं उनके गृह राज्य पंजाब में उन्हें एक अनोखे अंदाज में श्रद्धांजलि देने की तैयारी चल रही है। मोगा जिले के गांव मानुके के रहने वाले मशहूर मूर्तिकार इकबाल सिंह गिल ने अपने चहेते सितारे की यादों को हमेशा के लिए सहेजने का बीड़ा उठाया है। उन्होंने धर्मेंद्र की एक भव्य प्रतिमा तैयार करने का काम शुरू कर दिया है, जो जल्द ही बनकर तैयार हो जाएगी। इकबाल सिंह गिल इस कार्य को अभिनेता के प्रति अपने सम्मान के रूप में देख रहे हैं। मूर्तिकार इकबाल सिंह गिल ने बताया कि वे अपनी कला के जरिये इस दिग्गज अभिनेता को नमन कर रहे हैं और धर्मेंद्र का यह स्टैच्यू लगभग एक सप्ताह के भीतर तैयार कर लिया जाएगा। खास बात यह है कि इस प्रतिमा को बनाने में आने वाला करीब एक लाख रुपये का पूरा खर्च इकबाल सिंह खुद वहन करेंगे। स्टैच्यू की लंबाई और चौड़ाई पूरी तरह से धर्मेंद्र की कद-काठी के हिसाब से ही रखी जा रही है ताकि दर्शकों को अभिनेता की जीवंत छवि का अहसास हो सके। तैयार होने के बाद इस स्टैच्यू को इकबाल अपनी आर्ट गैलरी में स्थापित करेंगे, जो कला प्रेमियों और धर्मेंद्र के फैंस के लिए आकर्षण का केंद्र होगी।

इकबाल सिंह का कहना है कि धर्मेंद्र पंजाब की मिट्टी से जुड़े हुए इंसान थे और भले ही आज वे इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन हर पंजाबी के दिल में हमेशा रहेंगे। इकबाल को बचपन से ही मूर्तियां बनाने का शौक था और महज २० वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी पहली मूर्ति गौतम बुद्ध की बनाई थी।

बिग बॉस १९ में नजर आएंगी माधुरी दीक्षित

एक्ट्रेस माधुरी दीक्षित इस हफ्ते रियलिटी शो बिग बॉस १९ के वीकेंड का वार एपिसोड में नजर आएंगी। सोशल मीडिया पर उनका एक वीडियो सामने आया है। वीडियो में माधुरी सफेद ड्रेस में सलमान खान के साथ पोज देती दिखाई दे रही हैं। शो में वो अपनी अपकमिंग सीरीज मिसेज देशपांडे को प्रमोट करने पहुंची हैं। जैसे ही माधुरी और सलमान का यह वीडियो सामने आया, सोशल मीडिया पर फैंस के रिएक्शन आने लगे। एक यूजर ने लिखा, 'मैं इस जोड़ी को हम आपके हैं कौन २ में फिर से देखना चाहता हूं।' दूसरे ने मजाकिया अंदाज में कहा, 'मिल ये लोग रहे हैं, खुशी हमें हो रही है, ऐसा क्यों।' एक और यूजर ने लिखा, 'मेरी फेवरेट जोड़ी।'

माधुरी दीक्षित और सलमान खान की जोड़ी ९० के दशक की हिट ऑन-स्क्रीन जोड़ियों में रही। दोनों ने कई फिल्मों में साथ काम किया। उनकी पहली फिल्म साजन (१९९१) थी, जिसमें संजय दत्त भी थे। इसके बाद फिल्म दिल तेरा आशिक (१९९३) में दोनों की केमिस्ट्री को दर्शकों ने खूब पसंद किया। १९९४ में आई फिल्म हम आपके हैं कौन..! ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन किया और फिल्म में सलमान और माधुरी की जोड़ी भी लोगों को पसंद आई। साल २००२ में फिल्म हम तुम्हारे हैं सनम में दोनों फिर नजर आए, जिसमें शाहरुख खान भी लीड भूमिका में थे। फिल्म में सलमान ने माधुरी के बचपन के दोस्त का किरदार निभाया था। वहीं, सीरीज मिसेज देशपांडे की बात करें तो इसमें माधुरी एक अलग किरदार में नजर आएंगी। इसके टीजर से पता चलता है कि वह इस बार गहरे और इमोशनल रोल में दिखाई देंगी। इस शो का निर्देशन नागेश कुकुनूर ने किया है। अप्लॉज एंटरटेनमेंट और कुकुनूर मूवीज द्वारा प्रोड्यूस की गई यह सीरीज १९ दिसंबर से हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगी।

Govt Scheme: अब घर बैठी महिलाएं भी बना सकती हैं अपना कारोबार, सरकार दे रही ₹३ लाख तक का लोन

Govt Scheme: भारत में महिलाएं अब छोटे कारोबार और स्टार्टअप में अपनी पहचान बना रही हैं। इस दिशा में सरकार ने उदयोगिनी योजना २०२५ को और सशक्त रूप में पेश किया है। इस योजना के तहत महिलाएं बिना किसी गारंटी या कोलैटरल के ३ लाख रुपये तक का लोन ले सकती हैं।

योजना की खासियत यह है कि इसमें ३०% तक सब्सिडी भी दी जा रही है। इसका मतलब है कि अगर कोई महिला ३ लाख रुपये का लोन लेती है, तो उसे इस राशि पर सरकार की ओर से महत्वपूर्ण वित्तीय राहत भी मिलेगी। यह योजना खासतौर पर उन महिलाओं के लिए है जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं और जिनके पास बैंक गारंटी देने की सुविधा नहीं है। महिलाएं इस योजना से अपने छोटे व्यवसाय जैसे ब्यूटी पार्लर, सिलाई-कढ़ाई, किराना दुकान, डेयरी या अन्य छोटे उद्योग आसानी से शुरू कर सकती हैं।

योजना का लाभ कौन ले सकता हैः

महिला की उम्र १८ से ५५ वर्ष के बीच होनी चाहिए।

परिवार की वार्षिक आय निर्धारित सीमा से कम होनी चाहिए।

प्राथमिकता ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों की महिलाओं को दी जाएगी।

आवेदन कैसे करेंः

महिलाएं इस योजना के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यम से आवेदन कर सकती हैं। ऑनलाइनः आधिकारिक पोर्टल पर जाकर आवेदन फॉर्म भरें। ऑफलाइनः नजदीकी बैंक या सरकारी कार्यालय में आवेदन किया जा सकता है। आवेदन के लिए आधार कार्ड, आय प्रमाण पत्र, बैंक पासबुक और व्यवसाय से जुड़ी जानकारी जरूरी होगी।

इस योजना से महिलाएं न केवल अपने परिवार की आय बढ़ा सकती हैं, बल्कि समाज में आत्मनिर्भरता की मिसाल भी पेश कर सकती हैं। उदयोगिनी योजना २०२५ महिलाओं के लिए सिर्फ लोन स्कीम नहीं, बल्कि उनके सपनों को हकीकत में बदलने का अवसर है।

अमेरिकाः दुनिया का सबसे बड़ा सोना मालिक

वैश्विक अर्थव्यवस्था में सोना सिर्फ़ गहना नहीं, बल्कि देशों की आर्थिक सुरक्षा का अंतिम हथियार है। जब डॉलर डगमगाता है, बाज़ार टूटते हैं या भू-राजनीतिक तनाव बढ़ता है, तो देश अपनी अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए सोने पर टिके रहते हैं। इसी वजह से 'गोल्ड रिज़र्व' किसी देश की आर्थिक स्थिरता की असली परीक्षा माने जाते हैं। आज की तारीख में दुनिया में सबसे ज़्यादा सोना अमेरिका के पास है। कोई मामूली बढ़त नहीं–बल्कि बाकी सभी देशों से कई गुना ज़्यादा। अमेरिका के पास लगभग ८,१३३ टन सोना है, जो उसके विदेशी मुद्रा भंडार का विशाल हिस्सा है। यह सोना मुख्यतः Fort Knox, Denver Mint और New York Federal Reserve जैसी हाई-सिक्योरिटी जगहों पर रखा है। अमेरिका की मुद्रा डॉलर की ताकत का एक बड़ा आधार यह सोना भी है। यही वजह है कि अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में अस्थिरता हो या मंदी की आहट–अमेरिका अपेक्षाकृत स्थिर रहता है।

दूसरे नंबर पर है जर्मनी, जिसके पास लगभग ३,३५१ टन सोना है–अमेरिका से कम, लेकिन फिर भी दुनिया के बाकी देशों से काफी आगे। जर्मनी ने यह भंडार द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वर्षों में इकट्ठा किया। आज भी यूरोपीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाले जर्मनी के लिए सोना वित्तीय भरोसे का सबसे मजबूत आधार है।

यूरोप की तिकड़ीः इटली और फ्रांस

तीसरे और चौथे नंबर पर हैंः

इटली – लगभग २,४५२ टन

फ्रांस – लगभग २,४३६ टन

दोनों ही देश आर्थिक चुनौतियों से गुजरते रहते हैं, लेकिन उनका सोना उन्हें अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में स्थिरता का अतिरिक्त सहारा देता है। यह भंडार कई दशकों से लगभग स्थिर है – सरकारें इसे बेचने की हिम्मत नहीं करतीं, क्योंकि यह उनकी क्रेडिट रेटिंग और यूरोपीय बाजार में विश्वसनीयता को प्रभावित कर सकता है।

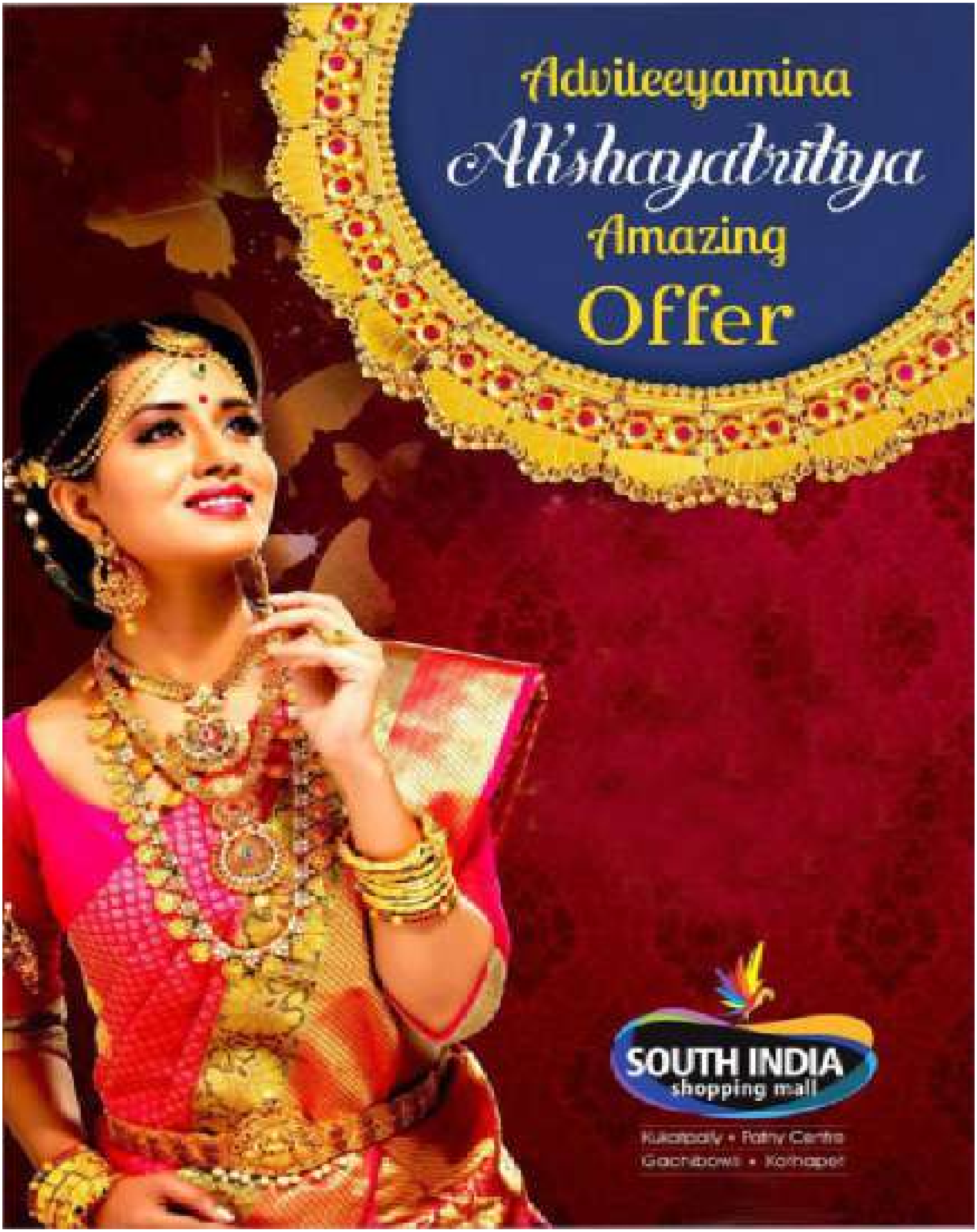
Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall

कीस डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर का पांचवां वार्षिक दीक्षांत समारोह आयोजित

विश्व के प्रथम सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओड़िशा ने अपना पांचवां वार्षिक दीक्षांत समारोह आयोजित किया जिसमें राष्ट्रीय नेताओं और वैश्विक परिवर्तनकर्ताओं को मानद उपाधियाँ (Honoris Causa) प्रदान की गईं। इस वर्ष कीस ने प्रतिष्ठित मानद उपाधियाँ भर्तृहरि महताब, सांसद, लोकसभा एवं चेयरमैन, प्रजातंत्र प्रचार समिति; सौम्य रंजन पटनायक, संस्थापक-संपादक 'द सम्बाद' एवं पूर्व सांसद तथा जगदानंद, सह-संस्थापक एवं मेंटर, सीवाईएसडी को प्रदान किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय अतिथियों की भी उपस्थिति रही, जिनमें फ़ैज़ल एडवलथ कोट्टिकोल्लन, संस्थापक एवं चेयरमैन, केइफ होलंडिंग्स (यूएइ) तथा जे. एम. 'मीनू' मल्होत्रा डीएल, चेयरमैन, मल्होत्रा ग्रूप पीएलसी एवं भारतीय मानद महावाणिज्य दूत (न्यूकैसल,यूके) शामिल थे।

दीक्षांत समारोह के आमंत्रित मुख्य अतिथि थे प्रो. (डॉ.) गणेशी लाल, पूर्व राज्यपाल, ओडिशा। प्रोफेसर गणेशीलाल ने अपने संबोधन में कहा कि कीट-कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने 'दुनिया के देखने लायक एक स्मारक खड़ा किया है।' उन्होंने कहा, 'डॉ. सामंत हमें सिखाते हैं–मरने से पहले मर जाओ–यही गीता का सार है। व्यक्तित्व कुछ भी हो सकता है; वे दिव्य हैं।'

नोबेल पुरस्कार विजेता ऊइदेद बुषामावी (ट्यूनीशिया) ने कीस और डॉ. सामंत की

सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने सिर्फ एक संस्थान ही नहीं, बल्कि शांति का निर्माण किया है। 'डॉ.सामंत ने दिखाया कि शिक्षा शांति और सौहार्द का सबसे प्रभावी साधन है।' स्नातकों को संबोधित करते हुए उन्होंने प्रेरित किया कि 'जीवन एक चुनौती है। हमें हार नहीं माननी चाहिए। जहाँ इच्छा है, वहीं राह है। अपने आप को प्रेरित करने वालों के साथ रखें। हर अवसर को अपनाएँ। निडर रहें, दयालु रहें, जिज्ञासु रहें, और साहसी बनें।'

मानद उपाधि प्राप्त करते हुए भर्तृहररि महताब ने कीस को 'वास्तव में विशेष' संस्थान बताया और कहा कि यहाँ के विद्यार्थी ओडिशा की असली शक्ति के प्रतिनिधि हैं। उन्होंने कहा, 'यहाँ की मासूमियत और खुशी स्वाभाविक है। कीस मासूम कलियों को संवारकर फूल बनाता है।' सौम्य रंजन पटनायक इस सम्मान को पाकर भावुक हो उठे और कहा कि वे अगले जन्म में फिर से शिक्षक बनना चाहेंगे। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि वे एक अनुसंधान मन विकसित करें और मातृभूमि के प्रति समर्पित रहें।

जगदानंद ने कहा, 'मैं जो भी योगदान दे पाया हूँ, उसकी जड़ें लोगों में हैं। 'कीस के सामाजिक प्रभाव को सराहते हुए उन्होंने कहा, 'कीस ने जनजातीय समुदायों को रूपांतरित कर दिया है। मैं इसके संस्थापक को इस परिवर्तन के लिए बधाई देता हूँ। 'उन्होंने छात्रों से कहा, 'अपनी जड़ों को गर्व से साथ रखें।' अंतर्राष्ट्रीय परोपकारी फ़ैज़ल कोट्टिकोल्लन ने कहा कि डॉ. सामंत ने असंख्य लोगों के जीवन बदल दिए। 'शिक्षा ही ऐसा साधन है जो राष्ट्र को बदल सकता है। डॉ. सामंत इसका जीवंत उदाहरण हैं।' वैश्विक व्यवसायी मल्होत्रा ने कहा कि यह सम्मान उन्हें और प्रेरित करेगा। उन्होंने कहा, 'सबसे श्रेष्ठ विद्यार्थी भारत में हैं। यह सम्मान मुझे समाज के लिए और अधिक योगदान देने के लिए प्रेरित करेगा।'

कार्यक्रम में कीट के चांसलर अशोक परिजा, कीस के कुलपति प्रो. सरनजीत सिंह, कीस के कार्यकारी अधिकारी डॉ. प्रशांत कुमार राउतरे सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। अवसर पर कीस डीम्ड विश्वविद्यालय के कुल ४६४ विद्यार्थियों को डिग्रियाँ प्रदान की गईं, जिनमें ४४४ स्नातकोत्तर और २० डॉक्टोरल डिग्रियाँ शामिल थीं। इसके अतिरिक्त, उत्कृष्ट समग्र प्रदर्शन के लिए एक छात्र को संस्थापक स्वर्ण पदक, ७ छात्रों को कुलाधिपति स्वर्ण पदक, और अन्य ७ छात्रों को कुलपति रजत पदक प्रदान किए गए।■

‘मो माः मो प्रेरणा’ (मेरी मांः मेरी प्रेरणा) पुस्तक का लोकार्पण, पूर्व ओडिशा

भुवनेश्वर, १ दिसंबरः मातृत्व और प्रेरणा को समर्पित डॉ. अच्युत सामंत की नवीनतम कृति ‘मेरी मांः मेरी प्रेरणा’ का लोकार्पण सोमवार को एक विशेष समारोह में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ओडिशा के पूर्व राज्यपाल प्रो.गणेशी लाल ने पुस्तक का अनावरण किया। इस अवसर पर पाँच अन्य पुस्तकों का भी विमोचन किया गया।

‘मां ही हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है’ – प्रो. गणेशीलाल

अंग्रेज़ी संस्करण के विमोचन में उपराष्ट्रपति के साथ उपस्थित रहे प्रो. गणेशी लाल ने मातृत्व की महिमा पर एक भावपूर्ण संबोधन दिया। उन्होंने कहा, ‘प्रकृति के तीन गुणों–सहित अज्ञान–से कोई मुक्त नहीं है। पर माँ ही हमें इनसे ऊपर उठाती है। ’उन्होंने ओडिशा में बिताए अपने वर्षों को स्मरण करते हुए कहा, ‘यहीं आकर मैंने ‘माँ’ शब्द का अर्थ पहले से कहीं अधिक गहराई से समझा।’ उन्होंने डॉ. सामंत की माता की महानता को रेखांकित करते हुए कहा, ‘उन्होंने देवकी की तरह महान त्याग किए– एक कृष्ण को इस धरती पर लाने के लिए। माँ अनिवार्य है। यदि ईश्वर तक पहुँचना है, तो पहले माँ को सम्मान देना होगा।

“मां सबसे शक्तिशाली शब्द है”– मनीष सिंगला, सुपुत्र प्रोफेसर गणेशीलाल

प्रो. गणेशीलाल के पुत्र मनीष ने भी कार्यक्रम में भावपूर्ण वक्तव्य दिया और मां सं संबंधित सुमधुर गीत गाये। उन्होंने कहा, ‘माँ’ सबसे शक्तिशाली शब्द है। अच्युत सामंत ने मन भी पाया है और माया भी।’ उन्होंने माँ पर एक भक्तिपूर्ण गीत भी प्रस्तुत किया, जिसने सभी को भाव-विभोर कर दिया।

‘प्रेम और स्नेह ही मेरा संबल’–डॉ. सामंत

समारोह को संबोधित करते हुए डॉ. अच्युत सामंत ने एक पुरानी भावुक स्मृति का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, ‘मुझे याद है जब प्रो. गणेशी लाल ने, राज्यपाल रहते हुए, मुझे मेरे कामों के कारण ‘किसी दूसरे ग्रह से आया व्यक्ति’ कहा था। उनका स्नेह हमेशा मुझे ऊर्जा देता आया है।’

गीता जयंती और मोक्षदा एकादशी के अवसर का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि पुस्तक में गीता के संदेश और भगवान कृष्ण के ‘दिव्य वत्स’ रूप से एक सांकेतिक जुड़ाव भी है। उन्होंने कहा कि ओड़िया संस्करण अंग्रेज़ी संस्करण का सीधा अनुवाद नहीं है, बल्कि इसमें उनके जीवन के कई गहरे अनुभव और अतिरिक्त प्रसंग शामिल हैं।

उन्होंने कहा,‘मैं लोगों के प्रेम और सम्मान के कारण कड़ी मेहनत करता हूँ। माँ ने सिखाया था– यदि तुमने कोई गलत काम नहीं किया है, तो किसी से डरने की ज़रूरत नहीं। ’उन्होंने दोहराया कि कीट और कीस आज ओडिशा और उसके लोगों के संरक्षक बन चुके हैं।

उन्होंने कहा, ‘मुझे याद है जब प्रो. गणेशी लाल ने, राज्यपाल रहते हुए, मुझे मेरे कामों के कारण ‘किसी दूसरे ग्रह से आया व्यक्ति’ कहा था। उनका स्नेह हमेशा मुझे ऊर्जा देता आया है।’ गीता जयंती और मोक्षदा एकादशी के अवसर का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि पुस्तक में गीता के संदेश और भगवान कृष्ण के ‘दिव्य वत्स’ रूप से एक सांकेतिक जुड़ाव भी है। उन्होंने कहा,‘मैं लोगों के प्रेम और सम्मान के कारण कड़ी मेहनत करता हूँ। माँ ने सिखाया था– यदि तुमने कोई गलत काम नहीं किया है, तो किसी से डरने की ज़रूरत नहीं। ’उन्होंने दोहराया कि कीट और कीस आज ओडिशा और उसके लोगों के संरक्षक बन चुके हैं।

कार्यक्रम में साहित्य, आध्यात्मिकता और पत्रकारिता जगत की कई प्रतिष्ठित हस्तियाँ मौजूद थीं। उन्होंने कार्यक्रम की सराहना की। वरिष्ठ लेखक रक्षक नायक ने पुस्तक को ‘अच्छे और कठिन समयों का संतुलित चित्रण, साहस और प्रेरणा से भरी हुई’ बताया।

प्रसिद्ध शिक्षाविद प्रो. हरिकृष्ण सतपथी ने प्रो. गणेशी लाल को ‘ओडिशा का सर्वश्रेष्ठ नागरिक’ बताया– ओड़िया भाषा, संस्कृति और साहित्य के प्रति उनके प्रेम के कारण। उन्होंने कहा कि वे ‘जन-जन के राज्यपाल’ हैं, जिन्हें राज्य सदैव याद रखेगा। डॉ. सामंत को उन्होंने ‘सर्वोत्तम साधक’ बताते हुए कहा कि उन्हें अब तक ७० से अधिक विश्वविद्यालयों ने मानद उपाधि प्रदान की है। ‘वे अपने संस्थानों के प्रति समर्पण और अपने लोगों के प्रति करुणा के प्रतीक हैं।’ वरिष्ठ पत्रकार उमापद बोस ने कहा कि यह पुस्तक ‘इतिहास, अर्थशास्त्र और गीता के एक नए अध्याय का अद्भुत मिश्रण’ है। आध्यात्मिक गुरु बाबा रामनारायण दास और साहित्यकार प्रो. शशांक चूड़ामणि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ■

कीम्स संगोष्ठी:२०२५
भारत के प्रतिष्ठित डॉक्टरों की रही भागीदारी

१. 'कीम्स गरीबों की सेवा के लिए है'–डॉ. अच्युत सामंत
२. प्रथम 'Health Hero Award' से सम्मानित डॉ. सिबानंद मोहंती
३. 'शोध हमारी पहचान बने'–डॉ. सुब्रत आचार्य
४. कीम्स की विशिष्ट स्वास्थ्य सेवा मॉडल

कॉलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ (कीम्स) में कीम्स संगोष्ठी के तृतीय संस्करण का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर ओडिशा और देशभर के वरिष्ठ चिकित्सक, AIIMS के निदेशकगण तथा जनस्वास्थ्य विशेषज्ञ बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। इस सम्मेलन का उद्देश्य था–भविष्य की चिकित्सा व्यवस्था, ग्रामीण स्वास्थ्य सशक्तिकरण तथा शोध-आधारित क्लिनिकल प्रैक्टिस पर गंभीर और गहन चिंतन-विमर्श करना। कार्यक्रम में DHR सचिव एवं ICMR महानिदेशक डॉ. राजीव बहल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। देशभर के प्रतिष्ठित डॉक्टरों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष गौरव प्रदान किया। ग्रामीण ओडिशा में स्वास्थ्य सशक्तिकरण हेतु स्थापित प्रथम KIMS Health Hero Award (HERO) इस वर्ष डॉ. सिबानंद मोहंती को प्रदान किया गया। यह सम्मान उन्हें मयूरभंज के दूरस्थ क्षेत्रों में सामुदायिक स्वास्थ्य, मलेरिया नियंत्रण तथा मातृ स्वास्थ्य सेवा में उनके अग्रणी योगदान के लिए दिया गया।

'कीम्स गरीबों की सेवा के लिए है'–डॉ. अच्युत सामंत, संस्थापक कीट कीस कीम्स ने उपस्थित सभी वरिष्ठ चिकित्सकों का स्वागत करते हुए कहा– 'हम तब संतुष्ट होते हैं जब हम गरीबों की सेवा कर पाते हैं। मेरा मन सदैव समाज की सेवा की ओर झुका है, और मैं चाहता हूँ कि आप सभी समाज की सेवा में आनंद अनुभव करें।' उन्होंने कीम्स के ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन का उल्लेख करते हुए बताया कि १०० बिस्तरोंवाले और अत्याधुनिक तकनीक से युक्त २० कीम्स ग्रामीण अस्पताल स्थापित करने की योजना बनाई जा रही है, जिससे दूरस्थ क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँच सकें।

कीट के प्रो-चांसलर एवं प्रसिद्ध गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट डॉ. सुब्रत आचार्य ने कहा कि डॉ. सामंत का 'शिक्षित करो और सशक्त बनाओ' का दृष्टिकोण अत्यंत प्रेरक है। उन्होंने बल देते हुए कहा– 'शोध को कीम्स के मिशन का केंद्र होना चाहिए। हमारा दायित्व केवल इलाज करना नहीं, बल्कि वह ज्ञान उत्पन्न करना भी है जो स्वास्थ्य सेवाओं को रूपांतरित कर सके।' कीम्स के प्रिंसिपल प्रोफेसर (डॉ.) आर. सी. दास ने बताया कि 'कीम्स देश का एकमात्र अस्पताल है जहाँ सभी जनरल बेड एयर-कंडीशन्ड हैं और मरीजों को मात्र १०० रुपये में भोजन उपलब्ध कराया जाता है।' इससे कीम्स की सुविधा, गुणवत्ता और वहनीयता की अनूठी पहचान झलकती है। सम्मेलन में ओडिशा और भारत के अनेक विख्यात डॉक्टर,

डीन, विभागाध्यक्ष, वरिष्ठ चिकित्सक तथा अकादमिक नेता उपस्थित रहे। इनमें शामिल थे– डॉ. वेलु नायर, प्रो. के. आर. बालाकृष्णन, डॉ. सुनील श्रॉफ, डॉ. अभिजीत चौधरी, प्रो. वी. कमकोटी, डॉ. के. श्रीनाथ रेड्डी, प्रो. आलोक धवन, डॉ. सी. बी. के. मोहंती और डॉ. अजीत मोहंती। तकनीकी सत्रों में निम्न प्रमुख क्षेत्रों पर चर्चा हुई। ■

से अपने परमाणु हथियारों का त्याग किया। उन्होंने नेल्सन मंडेला के नेतृत्व–२७ वर्षों की अन्यायपूर्ण कैद के बाद क्रोध, भय और कटुता पर विजय–का स्मरण करते हुए श्रोताओं से करुणा, विनम्रता, साहस, उदारता और प्रेम को अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने २१वीं सदी की तात्कालिक नैतिक चुनौतियों–जलवायु संकट, पर्यावरणीय क्षरण और विनाशकारी हथियारों–पर चिंतन किया और कहा कि पारंपरिक नैतिक शिक्षाओं को इन अभूतपूर्व वैश्विक खतरों को ध्यान में रखते हुए विकसित होना चाहिए।

उन्होंने कहा, 'भविष्य की पीढ़ियों के जीवन और सुख-समृद्धि के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा हम अपने लिए चाहते हैं।' यही सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का सार है और इसे सार्वजनिक नीति, शिक्षा और संस्थागत नेतृत्व का आधार बनना चाहिए। उन्होंने कीस समुदाय से आग्रह किया कि वे अपने कार्य और दैनिक जीवन में गरिमा, सम्मान और उदारता की भावना को अपनाएँ। सम्मान प्रदान करते हुए डॉ. सामंत ने कहा कि संस्था 'खुश और गौरवान्वित' है कि श्री ग्रेनऑफ कीस आए। उन्होंने कीस–जो ४०,००० से अधिक आदिवासी आवासीय बच्चों को शिक्षित करता है–को 'दुनिया का आठवां आश्चर्य' बताया और कहा कि यह पुरस्कार 'मानवीय स्पर्श वाला सम्मान' है। कार्यक्रम में कीट के वाइस चांसलर प्रो. सरनजीत सिंह और कीस के सीईओ प्रो. प्रशांत कुमार राउतरे भी उपस्थित थे। ■

कीस द्वारा ग्लोबल सिक्योरिटी लीडर जोनाथन ग्रेनऑफ लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित

भुवनेश्वर, १५ नवम्बरः कीस डीम्ड विश्वविद्यालय ने शनिवार को ग्लोबल सिक्योरिटी इंस्टीट्यूट (USA) के प्रेसिडेंट श्री जोनाथन ग्रेनऑफ को उनके वैश्विक शांति, परमाणु निःशस्त्रीकरण और क़ानून के शासन के लिए आजीवन योगदान के सम्मान में प्रतिष्ठित कीस लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान किया। यह सम्मान कीट और कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत द्वारा प्रदान किया गया। श्री ग्रेनऑफ, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित वकील और अधिवक्ता हैं, कई दशकों से परमाणु निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयासरत हैं। उन्होंने अमेरिका की कांग्रेस, ब्रिटेन की संसद और कनाडा की संसद के समक्ष परमाणु हथियारों से जुड़े अस्तित्वगत खतरों पर गवाही दी है। वे वर्ल्ड समिट ऑफ नोबेल पीस लॉरेट्स के वरिष्ठ सलाहकार हैं और कई महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय बोर्डों से जुड़े हैं। वर्ष २०२० में, अमेरिकी बार एसोसिएशन ने उन्हें वैश्विक प्रभाव वाले उनके कानूनी और मानवीय प्रयासों के लिए अपना लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड प्रदान किया था।

अपने संबोधन में श्री ग्रेनऑफ ने कीस के प्रति गहरी प्रशंसा व्यक्त की और इसे 'एक अद्भुत संस्था' बताया जो चरित्र और शिक्षण का निर्माण करती है। उन्होंने इसे 'विनम्र करने वाला सम्मान' बताया और कहा कि वे केवल 'अंतरात्मा की सच्चाई' के अनुरूप जीवन जीने का प्रयास करते रहे हैं। उन्होंने कहा कि आदिवासी बच्चों को कीस और कीट के प्रति अत्यंत कृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि ये संस्थान उनके भविष्य को आकार दे रहे हैं। दर्शकों से खचाखच भरे सभागार को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि डॉ. सामंत द्वारा प्रोत्साहित 'आर्ट ऑफ गिविंग' आंदोलन दया, करुणा और प्रेम का प्रतीक है जो जीवन के अनुभव और बुद्धिमत्ता से विकसित होते हैं।

केप टाउन, दक्षिण अफ्रीका में इं डि क्लर्क मेमोरियल में भाषण देने के अगले ही दिन बोलते हुए, श्री ग्रेनऑफ ने उल्लेख किया कि दक्षिण अफ्रीका दुनिया का एकमात्र देश है जिसने स्वेच्छा

विश्व के सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विद्यालय कीस ने बांटे अपने ४०,००० आदिवासी छात्र-छात्रों को गर्म वस्त्र

भुवनेश्वर, २५ नवंबरः २०२५ शीत ऋतु की शुरुआत में ही विश्व के सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विद्यालय कीस ने अपने ४०,००० आदिवासी छात्र-छात्रों को गर्म वस्त्र बांटे।कीस के संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत ने स्वयं बच्चों को अपने हाथों से गर्म कपड़े बड़ी ही आत्मीयता के साथ बांटे।उन्होंने बालिकाओं को शॉल और बालकों को स्वेटर प्रदान किए जिसे उन्होंने स्वयं खरीदकर पंजाब के लुधियाना से मंगवाया था। २०२५ की ठंड से बचने हेतु अपने पिता तुल्य संस्थापक प्रोफेसर अच्युत सामंत के हाथों से गर्म वस्त्र पाकर छात्र-छात्राओं में अत्यंत उत्साह और खुशी देखी गई। गौरतलब है कि ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर में स्थित है कीस-कीट जिसके संस्थापक हैं महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत जिन्होंने १९९२-९३ में अपनी कुल जमा पूंजी पांच हजार रुपये से कीट-कीस का आरंभ किया था। वही कीट-कीस आज दो डीम्ड विश्वविद्यालय बन चुके हैःकीट डीम्ड विश्वविद्यालय,भुवनेश्वर तथा कीस डीम्ड विश्वविद्यालय,भुवनेश्वर। दोनों शैक्षिक संस्थाओं में चालीस-चालीस हजार बच्चे पढ़ते हैं। आयोजित भव्य कार्यक्रम में कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सरनजीत सिंह, कीस के कुलसचिव डॉ. प्रशांत कुमार राउतरे तथा अतिरिक्त कुलसचिव प्रमोद पात्र आदि उपस्थित थे।■

अब जिला-स्तर पर होगा कीस का अभिभावक सम्मेलन

कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज़ (कीस) ने अपने वार्षिक पेरेंट्स' मीट को इस वर्ष पहली बार जिला-स्तर पर आयोजित करने का निर्णय लिया है। यह निर्णय कीस आदिवासी पेरेंट्स एसोसिएशन (KAPA) द्वारा रविवार को कीस कैंपस में आयोजित एक तैयारी बैठक में किए गए अनुरोध के बाद लिया गया। बैठक में ओडिशा के विभिन्न जिलों से आए आदिवासी अभिभावक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। हर वर्ष, ओडिशा और देश के अलग-अलग राज्यों से लाखों अभिभावक कीस के इस विशाल पेरेंट्स' मीट में शामिल होने भुवनेश्वर आते हैं। इस बार तैयारी बैठक के दौरान, पेरेंट्स' एसोसिएशन के सदस्यों ने कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत से अनुरोध किया कि इस आयोजन को एक ही जगह आयोजित करने के बजाय जिला-स्तर पर किया जाए। डॉ. सामंत ने इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए घोषणा की कि दिसंबर से मार्च के बीच विभिन्न जिलों में पेरेंट्स' मीट आयोजित की जाएगी।

इस घोषणा का उपस्थित सदस्यों ने गर्मजोशी से स्वागत किया। वे खुश थे कि अब यह आयोजन प्रत्येक जिले में होगा। उन्होंने आदिवासी विकास के प्रति डॉ. सामंत की लम्बे समय से चली आ रही प्रतिबद्धता की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि २५ वर्ष की आयु से ही डॉ. सामंत ३३ वर्षों से शिक्षा, खेल और विभिन्न कल्याणकारी पहलों के माध्यम से आदिवासी समुदायों के उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप कीस आज एक बड़े जन-आंदोलन का रूप ले चुका है।

KAPA के सदस्यों ने डॉ. सामंत को एक दूरदर्शी नेता और आदिवासी विकास की प्रेरक शक्ति बताया। उन्होंने याद किया कि १९९२-९३ में, जब बहुत कम लोग आदिवासी मुद्दों पर ध्यान दे रहे थे, तब उन्होंने इस दिशा में कदम बढ़ाया। उन्होंने यह भी कहा कि डॉ. सामंत ने कभी भी किसी आदिवासी अभिभावक पर कीस को लेकर किसी प्रकार का बोझ नहीं डाला, जिसके कारण उन्हें अभिभावकों का अटूट विश्वास प्राप्त है।

केरल के राज्यपालः विकसित भारत का मार्ग विकसित ओडिशा से होकर गुजरता है

१. 'भारत तभी विकसित होगा जब ओडिशा विकसित होगा'–कानून मंत्री
२. 'ओडिशा अब पिछड़ा राज्य नहीं'–रवि हेगड़े
३. 'ओडिशा अब कालाहांडी की छवि वाला राज्य नहीं'–प्रभु चावला

भुवनेश्वर, २९ नवंबरः 'विकसित भारतः विकसित ओडिशा' विषय पर आयोजित कलिंग टेलीविजन संगोष्ठी में राष्ट्रीय नेताओं, वरिष्ठ पत्रकारों और नीति-निर्माताओं ने भाग लिया। देश के विकास-विजन और उसमें ओडिशा की बढ़ती भूमिका पर पूरे सत्र में गहन चर्चा हुई। 'विकसित भारत का रास्ता विकसित ओडिशा से होकर जाता है'–केरल के राज्यपाल केरल के राज्यपाल राजेंद्र अर्लेकर ने कहा कि कीट और कीस का दौरा उनके लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहा। उन्होंने इन्हें 'विकसित ओडिशा के मानक' बताया।

उन्होंने कहा,'प्रधानमंत्री ने हमें विकसित भारत का सपना दिया है। पर यह मेरे लिए क्या मायने रखता है? मैं इसमें कैसे योगदान दूँ? जब तक हम इसका उत्तर नहीं देंगे, हम सिर्फ दर्शक बने रहेंगे। हमें नौकरी खोजने की मानसिकता से निकलकर नौकरी देने वाले बनना होगा।' स्वदेशी अपनाने और आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ाने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा, 'क्या मैं स्वदेशी अपना सकता हूँ? क्या मैं आयातित वस्तुओं का उपयोग कम करके राष्ट्रनिर्माण में व्यक्तिगत योगदान दे सकता हूँ?'

ओडिशा के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने कहा कि भारत की प्रगति ओडिशा के विकास से जुड़ी है। उन्होंने कहा, 'भारत का विकास तभी होगा जब ओडिशा विकसित होगा।' उन्होंने भरोसा जताया कि वर्तमान डबल-इंजन सरकार के तहत राज्य के सपने साकार होंगे। उन्होंने सरकार के लक्ष्यों का उल्लेख करते हुए बतायाः २०३६ तक ओडिशा के लिए ५०० मिलियन (५० करोड़) लक्ष्य, प्रति व्यक्ति आय में सुधार, बड़े पैमाने पर औद्योगिक निवेश। उन्होंने बताया कि राज्य को १६ लाख करोड़ रुपये के औद्योगिक इरादे (industrial intents) प्राप्त हुए हैं, जिनमें से ३०-३२% परियोजनाएँ पहले ही ज़मीन पर उतर चुकी हैं। उन्होंने आगे कहा कि ओडिशा लखपति दीदी पंजीकरण में देश में अग्रणी है। नई सरकार के कार्यकाल में ३८,००० सरकारी और ४८,००० निजी क्षेत्र में नौकरियाँ दी गई हैं। उन्होंने विश्वास जताया, 'हम निर्धारित समय में विकसित ओडिशा के लक्ष्य को हासिल करेंगे।'

कन्नड़ प्रभा के प्रधान संपादक रवि हेगड़े ने कहा कि ओडिशा की छवि में असाधारण बदलाव आया है। 'पहले हम ओडिशा को सिर्फ मंदिरों और संस्कृति से जोड़ते थे। यह अब पिछड़ा राज्य नहीं है। भुवनेश्वर की सड़कें देखकर तो लगता है कि पिछड़ा कौन–भुवनेश्वर या बेंगलुरु?' उन्होंने ओडिशा के विश्वस्तरीय स्टील और एल्युमिनियम सेक्टर, प्रगतिशील सामाजिक कार्यक्रमों और विकास के साथ पहचान को सुरक्षित रखने की विशेष सराहना की। 'विकसित भारत वही है जहाँ राज्य आर्थिक रूप से मजबूत और वैश्विक स्तर पर सम्मानित हों। वास्तविक विकास तब होगा जब हर गाँव तक प्रगति पहुँचे।' उन्होंने डॉ. अच्युत सामंत को 'विकसित भारत के श्रेष्ठ उदाहरणों में से एक' बताते हुए कीट और कीस को समावेशी एवं आत्मनिर्भर विकास के मॉडल कहा।

द न्यू इंडियन एक्सप्रेस के एडिटोरियल डायरेक्टर प्रभु चावला ने ओडिशा के परिवर्तन और बढ़ते प्रभाव को रेखांकित किया। उन्होंने कहा,'ओडिशा अब पिछड़ा राज्य नहीं है, न ही सिर्फ कालाहांडी की पहचान रखने वाला राज्य। न्यू इंडियन एक्सप्रेस भी ओडिशा के साथ बढ़ा है।' उन्होंने देश की आर्थिक स्थिति का उल्लेख करते हुए कहाः७-८% GDP वृद्धि, ४० वर्षों में सबसे अधिक विदेशी मुद्रा भंडार, UPI जैसी डिजिटल व्यवस्था का ८५% से अधिक उपयोग,ये सभी विकसित भारत की पृष्ठभूमि तैयार कर रहे हैं। उन्होंने कहा,'वास्तविक विकास घर, स्कूल और अस्पताल से शुरू होता है। साहित्य और बौद्धिक धरोहर ओडिशा की ताकत है। डबल-इंजन सरकार के साथ राज्य और आगे बढ़ सकता है।' उन्होंने जोड़ा, 'जब तक हर राज्य प्रगति नहीं करेगा, भारत पूरी तरह विकसित नहीं हो सकता।'

बीजेडी नेता देबी प्रसाद मिश्रा ने भी कार्यक्रम में वक्तव्य दिया और पिछले शासनकाल की पहलों तथा ओडिशा की दीर्घकालिक विकास यात्रा पर प्रकाश डाला। हर राज्य के साथ आगे बढ़ेगा भारत आयोजित संगोष्ठी एक मजबूत संदेश के साथ समाप्त हुई। कार्यक्रम में कीट और कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने सभी वक्ताओं का परिचय कराया और विशेषकर केरल के राज्यपाल का आभार व्यक्त किया कि उन्होंने कीट और कीस का दौरा किया और इस सम्मेलन में भाग लिया। इस कार्यक्रम की मेजबानी एक AI-जनित एंकर ने की, जिसने उपस्थित सभी लोगों का विशेष ध्यान और प्रशंसा आकर्षित की। आयोजित संगोष्ठी सभी के लिए लाभप्रद रही। ■

अंजलि ने चाय का गिलास रखा– 'हिसाब बोल रही हूँ, हिसाब-किताब नहीं। घर चलाना है तो साफ़-साफ़ बात जरूरी होती है।' अंजलि (बिना झुके): 'ठीक है। लेकिन काम बँटा रहेगा–ये पहले से तय कर दीजिए।' सासः 'अभी से ऊँची आवाज़? अंजलि ने चूल्हे की आँच सीधी की, लेकिन अपने शब्दों का ताप और सीधा कर दिया– 'काम व्यवस्था से चलेगा, दहशत से नहीं।' इस जवाब ने पूरे घर में हलचल कर दी। देवर, ननदें–सब समझ गए कि ये बहू चुप रहकर नहीं रहने वाली। यह संवाद इस गाँव में 'तूफान की पहली बूँद' की तरह फैल गया। वर्मा परिवार का गाँव 'भीतरपुर'–नाम सुंदर, लेकिन अंदर की राजनीति और ईर्ष्या भरी हवा वैसी नहीं थी।

ऊँची दहलीज

भीतरपुर–मध्यम आकार का गाँव, जहाँ पुराने मकानों की दीवारें टूट रही हैं, लेकिन अहंकार की दीवारें आज भी मजबूत खड़ी हैं। वर्मा परिवार इसी गाँव के कभी-प्रभावशाली घरों में गिना जाता था। अब घर जर्जर था, लेकिन रौब वैसा ही कायम। और इसी घर में आई थी अंजलि–शहर में पली-बढ़ी, मजबूत शिक्षा वाली, परंपराओं को सम्मान देने वाली, लेकिन अन्याय को सह न पाने वाली।

अंजलि जब वर्मा परिवार के आँगन में उतरी, तो सबसे पहला एहसास यही हुआ–

'इस घर में लोग ज्यादा हैं, अपनापन कम।'

घर पुराने समय की हवेली-जैसा था, पर हालत खराब। कच्चा पोर्च, टूटी चारपाई, और दीवारों पर चूना उखड़ा हुआ।

उसकी सास, शकुंतला देवी, तेज और कड़क आवाज़ वाली औरत–बोलने का तरीका ऐसा जैसे हर वाक्य ताना हो।

कहानी वहीं से शुरू होती है, जहाँ दहलीज़ पार करते ही बहू को 'बहू' से पहले 'नौकरानी' समझ लिया जाता है।

शादी के अगले सुबह से ही साफ था कि अंजलि को किसी नियम-पुस्तिका की नहीं, बल्कि शकुंतला देवी की तुनक-तुनक मूड की पालना करना पड़ा।

पहली ही सुबह– शकुंतलाः 'बहू, चूल्हा जलाने का टाइम यही है। यहाँ शहर के हिसाब से नहीं चलता घर।'

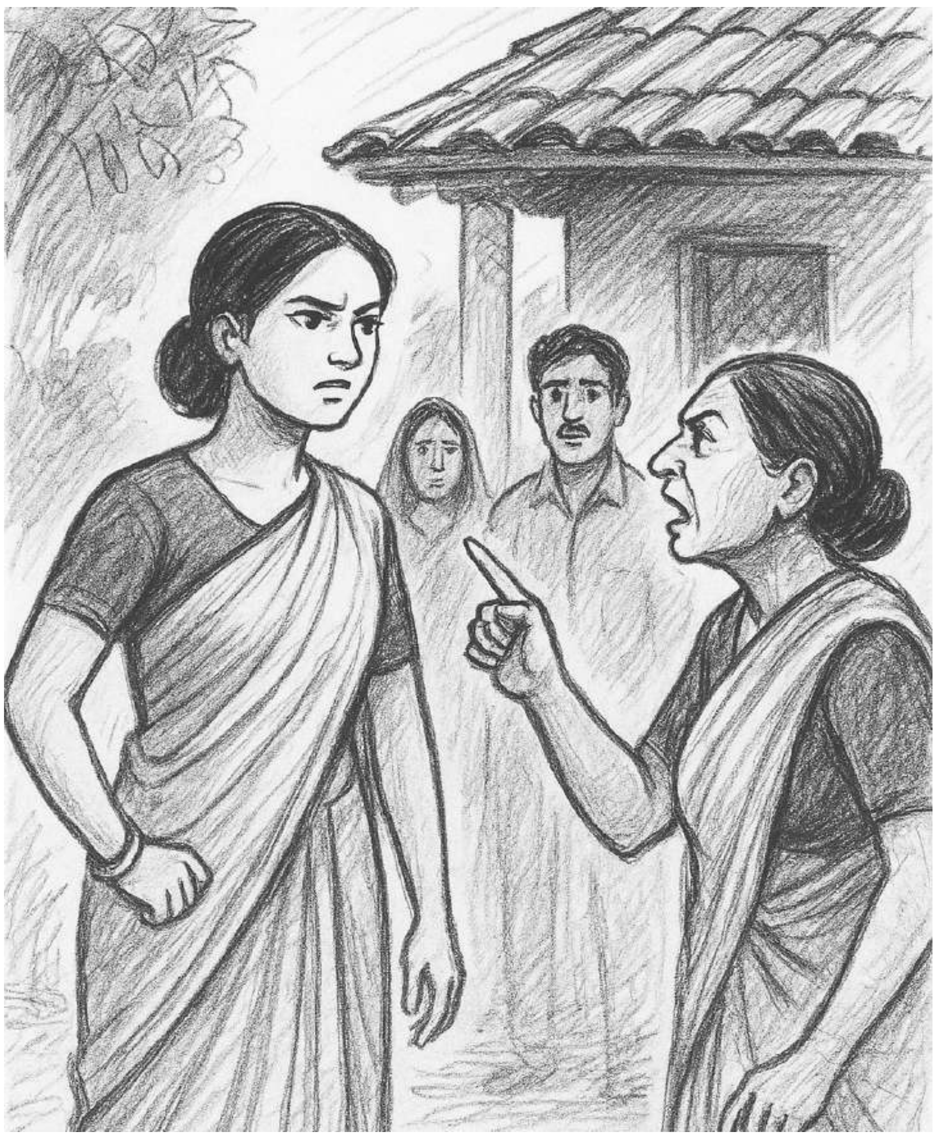

अंजलि (धीमे पर साफ): 'मुझे समय से दिक्कत नहीं, पर काम बाँटा रहेगा ये पहले तय कर लें।'

सासः 'अभी से हिसाब? अभी तो पैर भी नहीं सूखे तेरे!'

अंजलि ने चाय का गिलास रखा–

'हिसाब बोल रही हूँ, हिसाब-किताब नहीं। घर चलाना है तो साफ़-साफ़ बात जरूरी होती है।'

अंजलि (बिना झुके): 'ठीक है। लेकिन काम बँटा रहेगा–ये पहले से तय कर दीजिए।'

सासः 'अभी से ऊँची आवाज़?

अंजलि ने चूल्हे की आँच सीधी की, लेकिन अपने शब्दों का ताप और सीधा कर दिया–

'काम व्यवस्था से चलेगा, दहशत से नहीं।'

इस जवाब ने पूरे घर में हलचल कर दी।

देवर, ननदें–सब समझ गए कि ये बहू चुप रहकर नहीं रहने वाली।

यह संवाद इस गाँव में 'तूफान की पहली बूँद' की तरह फैल गया।

वर्मा परिवार का गाँव 'भीतरपुर'–नाम सुंदर, लेकिन अंदर की राजनीति और ईर्ष्या भरी हवा वैसी नहीं थी।

गाँव की गुटबंदी साफ थी–

प्रधान गुटः शिवकुमार–सत्ता उसके पास, अहंकार उसके खून में

वर्मा परिवारः कभी प्रभावशाली, अब आर्थिक रूप से कमजोर है

ओबीसी और दलित टोलाः मेहनत से जीने वाली जनता, पर दबाव में औरतों की पंचायतः गॉसिप और ताना मारने वाला नेटवर्क गाँव में बात ऐसे फैलती जैसे आग सूखी घास में लगे।

अंजलि जैसी पढ़ी-लिखी लड़की के लिए ये सब माहौल घुटन थी।

पड़ोस की औरतें शुरू से ही जलन के साथ देखतीं– दबे-कुचले–दलित और पिछड़ा टोला है जो औरतों का गॉसिप करता रहता है, अंजलि की दहलीज़ पर पहली सुबह ने औरतों को मसाला पकड़ा दिया।

भगवती काकीः 'बड़े घर की लड़की है, दो दिन में नखरे उतर जाएँगे।'

सरोजः 'या शायद मायके भाग जाएगी, जैसे आजकल की लड़कियाँ करती हैं।'

अंजलि ने बस हल्की मुस्कान दी–

'मैं भागने वाली नहीं, जो करना है यहीं करूँगी।'

ये जवाब उनके हलक में अटक गया।

अयुष, पढ़ा-लिखा लड़का, पर माँ के आगे दबा हुआ। पत्थर और मोम के बीच फँसा आदमी

उसकी दुविधा– 'बीवी सही है... पर माँ भी गलत नहीं।' यानी, क्लासिक रीढ़-विहीन कैरेक्टर।

एक रात खाना खाते समय–

अंजलिः 'तुम्हें पता है तुम्हारी माँ मुझे नौकरानी की तरह ट्रीट कर रही हैं?'

अयुष (धीमे): 'तुम गलत समझ रही हो, वो ऐसी ही हैं।'

अंजलिः 'समझना मेरी जिम्मेदारी नहीं। खड़ा होना तुम्हारी जिम्मेदारी है।'

अयुषः 'हर बात पर लड़ाई ठीक नहीं...'

अंजलिः 'हर बात पर चुप रहना भी ठीक नहीं।'

अयुष चुप हो गया–क्योंकि उसके पास तर्क नहीं थे, बस आदतें थीं।

अयुष का कैरेक्टर गाँव में कोई रहस्य नहीं था– शांत, पढ़ा-लिखा, लेकिन माँ के साये से बाहर नहीं निकल पाया था। क्योंकि बहस को बढ़ाना उसकी आदत में नहीं था।

वर्मा परिवार की पुरानी शान को बनाए रखने के लिए पैसा नहीं था, लेकिन झूठा सम्मान बाक़ी था। घर की हालत खराब थी। दो गायें थीं, पर चारा खरीदने तक पैसे नहीं।

सास घर चलाने में अंजलि को ताने देकर भी उसे खर्च का जिम्मा दे देती थी।

एक दिन राशन को लेकर बड़ा झगड़ा हुआ–

सासः 'बहू हाथ खोलकर खर्च कर रही है। एक महीना भी बजट नहीं संभल रहा।'

अंजलिः 'आप खुद देख लीजिए कि मैं क्या खरीद रही हूँ। मेरे ऊपर आरोप मत लगाइए।'

सासः 'बड़े घर से आई है, पैसे की कद्र क्या समझेगी?'

अंजलि ने पहली बार तीखा जवाब दिया–

अंजलिः 'बड़े घर की बेटी हूँ, पर हिसाब-किताब वहीं सीखा है।

अगर जिम्मेदारी दे रही हैं तो अधिकार भी दीजिए।

नहीं दे सकतीं, तो मैं साइड हो जाती हूँ–आप संभालिए।'

कमरे में ऐसा सन्नाटा छाया कि बर्तन गिरने की आवाज भी तेज लगती।

देवर धीरे से बोला–

'भाभी गलत नहीं बोल रहीं माँ...'

राशन को लेकर झगड़ा उस घर की असली हालत का आईना था।

इस एक वाक्य ने घर की दशकों पुरानी सत्ता को झटका दे दिया। यानी पहली दरार पड़ चुकी थी।

गाँव की राजनीति में प्रधान शिवकुमार एक अघोषित तानाशाह था। दलितों की जमीन पर नज़र गड़ाना उसकी आदत थी।

अंजलि ने देखा कि शिवकुमार प्रधान गरीब लोगों पर धौंस जमाता है। वर्मा परिवार कभी इस धौंस के खिलाफ खड़ा होता था, पर अब हिम्मत नहीं बची थी।

एक दिन पंचायत में विवाद हुआ–

दलित टोले की जमीन पर प्रधान की नजर थी।

अंजलि भीड़ के किनारे खड़ी थी।

शिवकुमार ताना मारकर बोला–

'अरे, शहर वाली बहू भी पंचायत में आने लगी?'

अंजलि ने सीधा जवाब दिया–

'पंचायत गाँव की है, आपकी विरासत नहीं। औरतें आएँ तो आपको दिक्कत क्यों?'

लोग हँस पड़े। शिवकुमार का चेहरा उतर गया। उस दिन से गाँव की औरतों में उसके लिए सम्मान बढ़ गया।

शिवकुमार के चेहरे पर तमतमाहट साफ थी।

उस दिन से वर्मा परिवार को उसने टार्गेट करना शुरू कर दिया। घर में पहली बार चुप रहने वाली नहीं बोलने वाली बहू है ...

उस रात वर्मा घर का ड्रामा अपने चरम पर था।

उस रात घर में खूब बवाल हुआ।

सास नाराज–

'तू पंचायत में बोलेगी? नाम डूबा दिया घर का!'

अयुष घबराया–

'तुम हर जगह लड़ने क्यों जाती हो?'

अंजलि ने थाली हटाई–

‘मैं किसी से पंगा नहीं लेती। लेकिन गलत को सही नहीं कहूँगी।

और हाँ–तुम दोनों जब तक डर के साए में जियोगे, घर की हालत यही रहेगी।’

अंजलि का तर्क इतना सख्त था कि कोई जवाब नहीं दे पाया।

अयुष पहली बार बोला–

‘माँ, बहू की बात गलत नहीं। हमें डरना बंद करना होगा।’

ये अयुष का पहला सीधा वाक्य था।

यही वह क्षण था जिसने घर की दिशा बदल दी। ये उस घर की राजनीति का असली मोड़ था।

धीरे-धीरे, अंजलि ने घर का बजट संभाला

ट्यूशन शुरू किए

गायों का चारा खुद मैनेज किया

राशन में फालतू खर्च बंद किया

गाँव की औरतों के साथ छोटी लाइब्रेरी जैसी जगह शुरू की

पंचायत में महिलाओं की आवाज़ जगह बनाने लगी

सास अब भी चखती रहती, पर दबी आवाज़ में।

क्योंकि परिणाम सामने थे–

घर पटरी पर आने लगा था।

अंजलि ने अभियान की तरह घर संभाला–

सास के ताने कम हो गए।

अयुष का कद थोड़ा बढ़ा।

और वर्मा परिवार, पहली बार सालों बाद, संभलना शुरू हुआ।

यह कहानी किसी फिल्मी ‘सास-बहू मेल-मिलाप’ पर खत्म नहीं होती।

सास कभी पूरी तरह नहीं बदली।

पति भी सौ प्रतिशत खड़ा नहीं हुआ।

लेकिन–

घर चल पड़ा

बहू ने अपनी जगह बनाई

गाँव में उसकी आवाज़ को ताकत मिली

प्रधान का दबदबा टूटा और वर्मा परिवार की खोई इज़्ज़त धीरे-धीरे वापस आई

अंजलि ने जीत का दावा कभी नहीं किया।

उसे बस इतनी उम्मीद थी–

‘घर में बराबरी की दहलीज़ बने–ऊँचाई की नहीं।’ ■

पृष्ठ २३ का शेष...

जिसके कारण नए CM को वैकल्पिक आवास से काम शुरू करना पड़ा। लुटियंस दिल्ली की तरह, मुंबई के मालाबार हिल, पेडर रोड और नरीमन पॉइंट जैसे सरकारी आवास भी राजनीति में प्रतिष्ठा का प्रतीक हैं। ये बंगलेः

सामान्य किराए की तुलना में सैकड़ों गुना सस्ते

सुविधाओं से भरपूर,

और लोकेशन के कारण करोड़ों की निजी प्रॉपर्टी के बराबर माने जाते हैं।

इसीलिए महाराष्ट्र हो या दिल्ली में ‘बंगला न छोड़ने’ का लालच सबसे ज़्यादा दिखाई देता है।

महाराष्ट्र हाई कोर्ट ने कई बार सरकार को चेताया कि ‘पूर्व अधिकारी और पूर्व नेता सरकारी बंगले को निजी हक़ समझकर वर्षों तक occupy नहीं कर सकते।’ कोर्ट ने इसे ‘टैक्सपेयर्स के साथ धोखा’ बताया। इसके बाद कुछ बड़े बंगले खाली करवाए गए, लेकिन आदत पूरी तरह खत्म नहीं हुई। महाराष्ट्र सरकार के आवास विभाग ने खुद माना कि हर सरकार बदलने पर कम से कम १०-१५ बड़े बंगले गैरकानूनी कब्ज़े में मिलते हैं। मंत्री आते-जाते हैं, पर बंगला जाने नहीं देते।

बंगला ट्रांसफर का असली सिस्टम

सीधा नियम है नया CM पद संभाले तो पुराना CM १५-३० दिन में आधिकारिक बंगला खाली करे। पूरा आवास सुरक्षा एजेंसियों द्वारा चेक किया जाता है।फिर चाबियाँ नए CM को मिलती हैं। लेकिन कई पूर्व CM ‘परिवार अभी शिफ्ट हो रहा है’, ‘रिनोवेशन चल रहा है’, ‘सिक्योरिटी इंतज़ार में है’ जैसे बहाने लगाकर ३-६ महीने तक टिके रहते हैं। महाराष्ट्र और यूपी इस मामले में सबसे बदनाम हैं।

नया CM जब बंगला नहीं मिल पाता तब?

यह हिस्सा आम जनता को पता ही नहीं होता। वे अस्थायी सरकारी गेस्ट हाउस में रहते हैं। या सचिवालय के पास बने ट्रांज़िट आवास में। कई बार होटल को ‘अस्थायी सरकारी सुविधा’ घोषित किया जाता है। Z+ सुरक्षा टीमों को बिना मुख्यालय के अस्थायी कैंप लगाना पड़ता है। इससे राज्य सुरक्षा मशीनरी हफ्तों तक अस्थिर रहती है। वे निकलने में जान-बूझकर देर करते हैं।

३६ पूर्व सांसद – ‘अवैध कब्जाधारी सूची’

जिनमें जॉर्ज फर्नांडिस, शंकरसिंह वाघेला, विनोद खन्ना सहित कई नाम आए–जिन्हें सरकारी सूची में ‘unauthorized occupants’ कहा गया।

२०२२-२३ के पूर्व केंद्रीय मंत्री

रमेश पोखरियाल निशंक

प्रकाश जावड़ेकर

हर्षवर्धन

इन सबको बंगला छोड़ना पड़ा जब वे मंत्री नहीं रहे।

बिहार – राबड़ी देवी केस (२०२५)

पटना के १०, सर्कुलर रोड वाला आवास २०+ साल उपयोग में था–लेकिन २०२५ में इसे खाली करने का आदेश जारी हुआ।

यह समस्या क्यों बनी रहती है?

VIP संस्कृति की पकड़ इतनी मजबूत है कि बंगला पद से अधिक व्यक्ति-विशेष की ‘शान’ बन जाता है। कई नेता बंगला छोड़ने को अपनी प्रतिष्ठा में गिरावट मानते हैं। नियम स्पष्ट हैं, लेकिन उनका पालन राजनीतिक ताकत के अनुसार अलग-अलग होता है। नया सांसद/मंत्री आने पर कई महीनों तक आवास संकट बना रहता है। हर चुनाव के बाद राज्य और केंद्र, दोनों स्तर पर यह समस्या दोहराई जाती है।

सरकारी बंगले कभी अस्थायी, पद-आधारित सुविधा होने चाहिए थे, लेकिन समय के साथ वे सत्ता-संस्कृति का प्रतीक बन गए। कोर्ट और केंद्र सरकार ने कई बार सख्ती दिखाई, पर असल समस्या यह है कि राजनेताओं में ‘सरकारी सुख-सुविधा छोड़ने की आदत’ कम दिखाई देती है। जो बंगला जनता के टैक्स से चलता है, वह बंगला जनता के काम आना चाहिए, न कि किसी पूर्व नेता की निजी जायदाद की तरह वर्षों तक कब्जे में रखा जाए। ■

रेल की रात

गाड़ी आने के समय से बहुत पहले ही महेंद्र स्टेशन पर जा पहुँचा था। गाड़ी के पहुँचने का ठीक समय मालूम न हो, यह बात नहीं कही जा सकती। जिस छोटे शहर में वह आया हुआ था, वहाँ से जल्दी भागने के लिए वह ऐसा उत्सुक हो उठा था कि जान-बूझ कर भी अज्ञात मन से शायद किसी अबोध बालक की तरह वह समझा था कि उसके जल्दी स्टेशन पर पहुँचने से संभवतः गाड़ी भी नियत समय से पहले ही आ जाएगी। होल्डाल में बँधे हुए बिस्तरे और चमड़े के एक पुराने सूटकेस को प्लेटफ़ार्म के एक कोने पर रखवा कर वह चिंतित तथा अस्थिर-सा अन्यमनस्क भाव से टहलते हुए टिकट-घर की खिड़की के खुलने का इंतज़ार करने लगा।

महेंद्र की आयु बत्तीस-तैंतीस वर्ष के लगभग होगी। उसके क़द की ऊँचाई साढ़े पाँच फ़ीट से कम नहीं मालूम होती थी। उसके शरीर का गठन देखने से उसे दुबला तो नहीं कहा जा सकता, तथापि मोटा वह नाम का भी न था। रंग उसका गेहुँआ था, कपोल कुछ चौड़ा, भौंहें कुछ मोटी किंतु तनी हुई, आँखें छोटी पर लंबी, काली मूँछें घनी पर पतली और दोनों सिरों पर कुछ ऊपर को उठी थीं। वह खद्दर का एक लंबा कुरता और खद्दर की धोती पहने था। सर पर टोपी नहीं थी। पाँवों में घड़ियाल के चमड़े के बने हुए चप्पल थे। उसके व्यक्तित्व में आकर्षण अवश्य था, पर वह आकर्षण सब समय सब व्यक्तियों की दृष्टि को अपनी ओर नहीं खींचता था।

सूरज बहुत पहले डूब चुका था और शुक्ल पक्ष का अपूर्ण गोलाकार चंद्रमा अपने किरण-जाल से दिग्-दिगंत को स्निग्ध आलोक-छटा से विभासित करने लगा था। स्टेशन पर अधिक भीड़ न थी। प्लेटफ़ार्म पर टहलते-टहलते पूर्व की ओर क़दम निकल जाने पर ऐसा मालूम होने लगता था कि चाँदनी दीर्घ-विस्तृत समतल भूमि पर अलस क्लांति की तरह पड़ी हुई है। झिल्ली-झनकार का एकांतिक मर्मर स्वर इस अलसता की वेदना को निर्मम भाव से जगा रहा था, जिससे महेंद्र के हृदय की सुप्त व्याकुलता तिलमिला उठती थी।

सिगनल डाउन हो गया था। टिकट-घर खुल गया था। थर्ड क्लास का टिकट खरीद कर महेंद्र गाड़ी का इंतज़ार करने लगा। थोड़ी देर में दूर ही से सर्चलाइट के प्रखर प्रकाश से तिमिर-विदारण करती हुई गाड़ी दिखाई दी और झक-झक करती हुई स्टेशन पर आ खड़ी हुई।

सामने के कंपार्टमेंट में केवल दो व्यक्ति बैठे थे और वे भी उतरने की तैयारी कर रहे थे। महेंद्र एक हाथ में बिस्तर की गठरी और दूसरे हाथ से सूटकेस पकड़ कर उसी में जा घुसा। जो दो व्यक्ति कंपार्टमेंट में थे, उनके उतरते ही एक चश्माधारी सज्जन ने दो महिलाओं के साथ भीतर प्रवेश किया। कुली ने आ कर नवागंतुक महाशय का सामान भीतर रख दिया और मजूरी के संबंध में काफ़ी हुज्जत करने के बाद पैसे ले कर चला गया। चश्माधारी सज्जन महिलाओं के साथ महेंद्र के सामने वाले बेंच पर बड़े आराम से बैठ गए। मालूम होता था कि वह बड़ी हड़बड़ी के साथ गाड़ी के आने के कुछ ही समय पहले स्टेशन पहुँचे थे और घबराहट में थे, कि महिलाओं को साथ ले कर यदि किसी कंपार्टमेंट में जगह न मिली, तो क्या हाल होगा। वह अभी तक हाँफ रहे थे, जिससे उनकी अब तक की परेशानी स्पष्ट व्यक्त होती थी। अब जब आराम से बैठने को खाली जगह मिल गई, तो एक ल बी साँस ले कर चश्मा उतार कर रूमाल से मुँह का पसीना पोंछने लगे। पसीना पोंछते-पोंछते महेंद्र की ओर देख कर उन्होंने प्रश्न किया, 'शिकोहाबाद कै बजे गाड़ी पहुँचेगी, आप बता सकते हैं?'

महेंद्र ने उत्तर दिया, 'जहाँ तक मेरा खय़ाल है, बारह बजे के क़रीब पहुँचेगी।'

महेंद्र कनखियों से महिलाओं की ओर देख रहा था। महिलाएँ उसके एकदम सामने बैठी थीं और यदि दृष्टि सीधी करके स्वाभाविक रूप से उन्हें देखता

सामने के कंपार्टमेंट में केवल दो व्यक्ति बैठे थे और वे भी उतरने की तैयारी कर रहे थे। महेंद्र एक हाथ में बिस्तर की गठरी और दूसरे हाथ से सूटकेस पकड़ कर उसी में जा घुसा। जो दो व्यक्ति कंपार्टमेंट में थे, उनके उतरते ही एक चश्माधारी सज्जन ने दो महिलाओं के साथ भीतर प्रवेश किया। कुली ने आ कर नवागंतुक महाशय का सामान भीतर रख दिया और मजूरी के संबंध में काफ़ी हुज्जत करने के बाद पैसे ले कर चला गया। चश्माधारी सज्जन महिलाओं के साथ महेंद्र के सामने वाले बेंच पर बड़े आराम से बैठ गए। मालूम होता था कि वह बड़ी हड़बड़ी के साथ गाड़ी के आने के कुछ ही समय पहले स्टेशन पहुँचे थे और घबराहट में थे, कि महिलाओं को साथ ले कर यदि किसी कंपार्टमेंट में जगह न मिली, तो क्या हाल होगा। वह अभी तक हाँफ रहे थे, जिससे उनकी अब तक की परेशानी स्पष्ट व्यक्त होती थी। अब जब आराम से बैठने को खा़ली जगह मिल गई, तो एक लंबी साँस ले कर चश्मा उतार कर रूमाल से मुँह का पसीना पोंछने लगे। पसीना पोंछते-पोंछते महेंद्र की ओर देख कर उन्होंने प्रश्न किया, 'शिकोहाबाद कै बजे गाड़ी पहुँचेगी, आप बता सकते हैं?'

रहता, तो भी शायद न तो चश्माधारी सज्जन को और न महिलाओं को कोई आपत्ति होती, पर उसे अपनी स्वाभाविक संकोचशीलता के कारण उनकी ओर स्थिर दृष्टि से देखने का साहस नहीं होता था। दोनों महिलाएँ बेपर्दा बैठी थीं। उनमें एक की अवस्था प्रायः पैंतीस वर्ष की होगी, वह एक सफ़ेद चादर ओढ़े खड़ी थी, दूसरी बाईस-तेईस वर्ष की जान पड़ती थी, वह एक गुलाबी रंग की सुंदर, सुरुचिपूर्ण साड़ी पहने थी। दोनों यथेष्ट सभ्य और सुशील जान पड़ती थीं। ज्येष्ठा के देखने से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता था कि किसी समय वह सुंदर रही होगी, पर अब अस्वस्थता के कारण उसका मुखमंडल बिलकुल निस्तेज जान पड़ता था। कनिष्ठा यद्यपि सौंदर्य-कला की दृष्टि से सुंदरी नहीं थी, तथापि उसके मुख की व्यंजना में एक ऐसी सरल मधुरिमा वर्तमान थी, जो बरबस आँखों को आकर्षित कर लेती थी।

आज कई कारणों से महेंद्र का जी दिन भर अच्छा नहीं रहा। गाड़ी में बैठने तक वह चिंतित, अन्यमनस्क तथा उदास था। पर गाड़ी में बैठते ही शिष्ट, सुशील तथा सुंदरी महिलाओं के साहचर्य से उसके खिन्न मन में एक सुखद सरलता छा गई। यद्यपि वह संकोच के कारण कुछ कम घबराया हुआ न था, तथापि चश्माधारी सज्जन की भोली आकृति तथा सरल भाव-भंगिमाओं से और महिलाओं की शालीनता से उसे इस बात पर धीरे-धीरे विश्वास होने लगा था कि उनके बीच किसी प्रकार का संकोच अनावश्यक ही नहीं बल्कि अशोभन भी है।

चश्माधारी सज्जन ने चश्मा उतार कर एक रूमाल से उसे पोंछते हुए पूछा, 'आप क्या शिकोहाबाद जा रहे हैं?'

'जी नहीं, मैं दिल्ली जा रहा हूँ। क्या आप शिकोहाबाद में ही रहते हैं?'

'जी नहीं, मुझे टुँडला जाना है। मैं वहाँ कोर्ट में प्रैक्टिस करता हूँ। इधर कुछ दिनों के लिए घर आया हुआ था। अब अपनी 'वाइफ़' को और 'सिस्टर' को ले कर वापस जा रहा हूँ। 'सिस्टर' की तबीअत ठीक नहीं रहती, इसलिए उसे हवा-बदली के लिए ले जा रहा हूँ।'

एक साधारण-से प्रश्न के उत्तर में इतनी बातों से परिचित होने पर महेंद्र को नवपरिचित सज्जन की बेतकल्लुफ़ी पर आश्चर्य हुआ और वह मन ही मन मुस्कराने लगा। उसने अनुमान लगाया कि ज्येष्ठा महिला 'सिस्टर' होगी और कनिष्ठा 'वाइफ़'।

थोड़ी देर में गाड़ी चलने लगी। कोई दूसरा यात्री उस डिब्बे में न आया।

चश्माधारी महाशय गाड़ी चलने के कुछ देर बाद ऊँघने लगे। वे रह न सके और बँधे हुए बिस्तर को तकिया बना कर एक दूसरे बेंच पर लेट गए और लेटते ही खर्राटे लेने लगे। न जाने क्यों, महेंद्र के मन में यह विश्वास जम गया कि इन नवपरिचित महाशय का जीवन बड़ा सुखी है। उनकी बे-तकल्लुफ़ी तथा उनके मुख का आत्म-संतोषपूर्ण भाव देख कर उनके मन में यह विश्वास जमने लगा था और जब उसने उन्हें निश्चिंत सोते हुए तथा खर्राटे भरते देखा, तो उसकी यह धारणा दृढ़ हो गई।

ज्येष्ठा महिला ने भी थोड़ी देर में ऊँघना शुरू कर दिया। वह ऊँघती जाती थी और बीच-बीच में जब ज़बर्दस्त हिचकोला खाती थी तो जाग पड़ती थी। केवल कनिष्ठा महिला पूर्णतः सजग थी। वह कभी खिड़की के बाहर झाँक कर चाँदनी के उज्ज्वल आलोक में शायद 'पल-पल परिवर्तित' प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेती थी, कभी ऊँघनेवाली महिला की ओर देखती थी, कभी खर्राटे भरनेवाले महाशय, शायद अपने पति को एक बार सरसरी निगाह से देख लेती थी और कभी महेंद्र को स्निग्ध किंतु विस्मय की उत्सुकता से पूर्ण आँखों से देखने लगती थी। उन आँखों की स्थिर दृष्टि जब महेंद्र पर आ कर पड़ती थी तो, उसे ऐसा मालूम होने लगता कि मोहाविष्ट हुआ जा रहा है और उसकी सारी आत्मा, यहाँ तक कि सारा शरीर भी अपना रूप बदल रहा है और यह किसी अव्यक्त तथा अतींद्रिय मायावी स्पर्श से कुछ का कुछ हुआ जा रहा है। वह

MONAD UNIVERSITY
Recognized & Approved by :
UGC
UP Govt.
PCI
BCI
NCTE
AIU
आज़ादी का अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ
शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25
*Free Education for Girls.
COURSES OFFERED

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

उस स्थिर दृष्टि का तेज़ सहन न कर सकने के कारण आँखें फिरा लेता था।

गाड़ी टटर-टट्ट-टटर-टट्ट शब्द से चली जा रही थी। जाग्रत महिला की गुलाबी साड़ी का आँचल हवा के झोंके से नीचे खिसक कर उसके लहराते हुए घनकुंचित काले केशों की बहार दिखा रहा था। गुलाबी साड़ी भी हवा के ज़ोर से फ़र-फ़र फ़हरा रही थी। महेंद्र पूर्ण जाग्रत अवस्था में स्वप्न देखने लगा। उसे यह भी भ्रम होने लगा कि यह महिला, जो इसके पहले उसके लिए एकदम अज्ञात थी और निश्चय ही सदा अज्ञात रहेगी, न जाने किस चिदानंदमय लोक से अकस्मात आविर्भूत हो कर उसके पास आ बैठी है और गुलाबी रंग की पताका फ़हरा कर विश्व-विजय को निकली है और वह उसका सारथी बन कर उस अनंतगामी रेल रूपी रथ पर चला जा रहा है। सारा विश्व, समस्त मानवी तथा मानसी सृष्टि उसके लिए उस कंपार्टमेंट के भीतर समा गई थी, जिसमें ऊँघनेवाली महिला तथा सोए हुए सज्जन का कोई अस्तित्व नहीं था, और उसके बाहर क्षण-क्षण में परिवर्तित होनेवाले अस्थिर माया जगत का चिर चंचल रूप एकदम असत्य सत्ताहीन-सा लगता था।

महेंद्र सोचने लगा कि उसने जीवन में कितनी ही स्त्रियों को विभिन्न रूपों तथा विचित्र परिस्थितियों में देखा है, पर आज का यह बिलकुल साधारण-सा अनुभव उसे क्यों ऐसा अपूर्व तथा अनुपम लग रहा है। वह सोच ही रहा था कि फिर उस विश्व-विजयिनी ने अपनी सुंदर विस्मित आँखों की रहस्यमयी उत्सुकता से भरी स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देखा। वह मन ही मन संबोधित करते हुए कहने लगा, चिर अज्ञाता, चिर अपरिचिता देवी! तुम मुझसे क्या चाहती हो। तुम्हारी इस मर्मभेदिनी दृष्टि का क्या अर्थ है? दैवयोग से महाकाल के इस नगण्यतम क्षण में, जिसकी सत्ता महासागर में एक क्षुद्रतम बुदबुदे के बराबर भी नहीं है, हम दोनों का आकस्मिक मिलन घटित हुआ है, और महासागर में बुदबुदे की तरह यह क्षण सदा के लिए विलीन हो जाएगा। तथापि इतने ही अर्से में क्या तुम हम दोनों के जन्मांतर के संबंध से परिचित हो गई अथवा यह सब कुछ नहीं है? तुम्हारी आँखों की उत्सुकता का कोई मूल्य नहीं है, मेरी विह्वल भावुकता का कोई महत्व नहीं है! महत्वपूर्ण जो कुछ है, वह है तुम्हारे पास लेटे हुए व्यक्ति का खर्राटे भरना।

शिकोहाबाद पहुँचने पर चश्माधारी सज्जन की नींद न टूटी और ज्येष्ठा महिला ऊँघती रही। पर महेंद्र की विश्व-विजयिनी की आँखों में एक क्षण के लिए भी निद्रा-रसावेश का लेश नहीं दिखाई दिया। वह बीच-बीच में अपनी मर्म-भेदिनी दृष्टि की प्रखर उत्सुकता से उसके हृदय को अकारण निर्मम रूप से बिद्ध करती चली जाती थी। फलस्वरूप महेंद्र की गुलाबी मोहकता भी शिकोहाबाद पहुँचने तक अखंड बनी रही। शिकोहाबाद पहुँचने पर विश्व-विजयिनी ने चश्माधारी सज्जन के किंचित स्थूल शरीर को हाथ से हिलाते हुए जगाया। ऊँघती हुई महिला भी सँभल कर बैठ गई। कुलियों से सामान उतरवा कर चारों व्यक्ति उतर पड़े। दिल्लीवाली गाड़ी जिस प्लेटफ़ार्म पर लगनेवाली थी, वहाँ को जाने के लिए पुल पार करना पड़ा। पुल पार करके वे लोग जिस प्लेटफ़ार्म पर आए, वहाँ कहीं एक भी बत्ती जली हुई नहीं थी। पर चूँकि सर्वत्र निर्मल चाँदनी छिटक रही थी, इसलिए बत्ती की कोई आवश्यकता न जान पड़ी। गाड़ी के आने में अभी डेढ़ घंटे की देर थी। चश्माधारी महाशय एक बेंच पर बिस्तर फैला कर लेट गए। दोनों महिलाएँ भी नीचे रखे हुए सामान के ऊपर बैठ गईं।

चश्माधारी सज्जन ने महेंद्र से कहा, 'आप भी किसी बेंच पर बिस्तर बिछा कर लेट जाइए।'

पर कोई बेंच ख़ाली नहीं थी और न महेंद्र सोने के लिए ही उत्सुक था। आज की रेलवे यात्रा की चंद्रोज्ज्वल रात्रि उसे चिरजाग्रत तथा चिरजीवित स्वप्न-लोक में विचरण का अवसर दे रही थी। वह प्लेटफ़ार्म पर टहलते हुए अपने अंतर्मन में नवोद्घाटित जीवन-वैचित्र्य की चहल-पहल देख कर विस्मित हो रहा था। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि वह जीवन की मधुरिमा से आज प्रथम बार परिचित हो रहा था। रेलवे लाइन के उस पार दिगंत विस्तृत ज्योत्स्ना-राशि अपने आवेश में स्वयं पुलकित हो रही थी और सामने काफ़ी दूर पर दो रक्तरंजित गोलाकार प्रकाश-चिह्न आकाश-दीप की तरह मानो आनंदोज्ज्वल रंगीन जीवन का मार्ग उसके लिए इंगित कर रहे थे।

रेलगाड़ी में हो कर वह अनेक बार आया था और गया था और कितनी ही बार उसे रात के समय स्टेशनों पर गाड़ी के इंतिज़ार में ठहरना पड़ा था, पर आज की ऐंद्रजालिक उल्लासपूर्ण अनुभूति उसके लिए एकदम नई थी। इस बार इंद्रजाल के उद्घाटन का श्रेय जिसको था, वह मायाविनी इस समय टीन की छत के नीचे की छाया में बैठी हुई थी और अंधकार में उसकी आँखों के जादू का चलना बंद हो गया था। पर वहाँ पर मात्र उसका अस्तित्व ही महेंद्र की आत्मा में मायालोक की मोहकता का सृजन करने के लिए पर्याप्त था।

वह टहलते-टहलते न मालूम किन निरुद्देश्य स्वप्नों की माया के फेर में पड़ा हुआ था कि अचानक चश्माधारी महाशय ने बेंच पर से पुकारते हुए कहा, 'अरे जनाब, कब तक टहलिएगा। अगर लेटना नहीं चाहते, तो यहाँ पर बैठ तो जाइए। नींद तो अब आवेगी नहीं। इसलिए गाड़ी के आने तक गप-शप ही रहे।' महाशयजी पहले ही काफ़ी सो चुके थे इसलिए अब नींद नहीं आ रही थी। महेंद्र मुस्कराता हुआ उनके पास अपने सूटकेस के ऊपर बैठ गया।

महाशयजी ने कहा, 'आप दिल्ली में कहीं मुलाज़िम हैं?'

'जी नहीं।'

'तब आप क्या करते हैं, आप खद्दर पहने हैं, क्या आप राजनीतिज्ञ हैं?'

'पहले था, अब नहीं के बराबर हूँ।'

'वह कैसे?'

इस प्रश्न के उत्तर में महेंद्र ने परम क्लांति का भाव दिखाते हुए कहा, 'अरे साहब, सुन के क्या कीजिएगा। व्यर्थ में आपके संस्कारों को आघात पहुँचेगा। इस चर्चा को हटाइए और किसी अच्छे विषय की चर्चा चलाइए।' स्वभावतः चश्माधारी का कौतूहल बढ़ा। उन्होंने आग्रह के साथ कहा, 'फिर भी ज़रा सुनें तो सही। आख़िर कौन-सी ऐसी बात हो गई।'

महेंद्र की सुप्त स्मृतियाँ तिलमिला उठीं। कनखियों से उसने देखा, प्रायः अंधकार में बैठी हुई मायाविनी महिला का ध्यान उसी की ओर था। पल में उसके मानसिक चक्षुओं के आगे उसके सारे विगत जीवन के व्यर्थता के दुःखद संस्मरणों की झाँकी चित्रपट पर क्रम से परिवर्तित होनेवाले चित्रों की तरह भासमान होने लगी। भाव के आवेश में आ कर उसने कहा, 'अच्छा तो सुनिए। ग्यारह वर्ष से ले कर तीस वर्ष तक की अवस्था तक गाँधी के सिद्धांतों के पीछे पागल हो कर, भूखों रह कर, पग-पग ठोकरें खा कर, समाज तथा परिवार की फटकारें सह कर, जीवन के सब सुखों को अपने ध्येय के लिए तिलांजलि दे कर, राष्ट्रीय आदर्श को ब्रह्मतत्व से भी अधिक महत्व दे कर सच्ची लगन से अपनी सारी आत्मा को निमज्जित करके देश का काम किया। तीन बार काफ़ी अवधि के लिए जेल में सड़ता रहा, बार-बार पुलिस के डंडे सर पर पड़ते रहे। ज़मीन-जायदाद कुर्क हो गई, माता-पिता अपनी कपूत संतान के कारण तबाह हो कर मानसिक और शारीरिक पीड़ा की पराकाष्ठा भोग कर चल बसे, पत्नी तड़प-तड़प कर अपने भाग्य को कोसती हुई मर गई। फिर भी मैं राष्ट्र से कल्याण के परम ध्येय को स्त्री, परिवार, आत्मा और परमात्मा से

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY ₹ 599

महेंद्र का लंबा लेक्चर समाप्त होते ही चश्माधारी सज्जन 'हा हा' करके ठठा कर हँसते हुए बोले, 'आप भी बड़े मज़े के आदमी हैं। खूब़!' यह कह कर वह बेंच पर आराम से लेट गए और उन्होंने आँखें बंद कर लीं। थोड़ी देर बाद वह ज़ोरों से खर्राटे लेने लगे। एक लंबी साँस लेते हुए महेंद्र ने प्रायः अंधकार में अस्पष्ट झलकती हुई गुलाबी साड़ी की ओर देखा। दो आँखों की मार्मिक दृष्टि से तीव्र मोहकता उस अर्द्ध अंधकार में भी विस्मित वेदना की उत्सुक उज्ज्वल रेखाओं को विकीरित कर रही थी। महेंद्र पुलक-विह्वल हो कर मंत्र-मुग्ध-सा बैठा रहा।

बहुत ऊँचा मानता हुआ सच्ची लगन से काम करता रहा। जब अंतिम बार जेलखाने में बंदी मियाद पूरी करने के बाद थका-माँदा मन तथा शरीर से क्लिष्ट और क्लांत हो कर मैं बाहर आया, तब एक-एक करके उन स्नेही जनों की स्मृतियाँ मेरे मन में उदित हो-हो कर व्यक्त होने लगीं, जिनकी मैं सदा अवज्ञा करता आया था। अपनी पत्नी से मैंने जीवन में शायद दो दिन भी घनिष्ठता से बातें न की होंगी। जब मैं बाहर रहता था, तो उसके पत्र बराबर मेरे पास आते रहते थे और मैं सरसरी दृष्टि से पढ़ कर अवज्ञा से फाड़ कर फेंक देता था। एक या दो बार से अधिक मैंने उसके पत्रों का उत्तर नहीं दिया और दो बार जो उत्तर दिया था, वह भी चार पंक्तियों में बिल्कुल रूखे-सूखे ढंग से। अब जब मैं अपने को सारे संसार में अकेला, स्नेह तथा संवेदना से वंचित, असहाय तथा निरुपाय अनुभव करने लगा तो उसकी भोली-भाली, सकरुण, स्नेह की वेदना से भरी सहज सलोनी मूर्ति प्रतिपल मेरी आँखों के आगे भासित होने लगी। उसके पत्रों में सरल शब्दों में वर्णित कातर व्याकुलता के हाहाकार की पुकार मानो मेरी स्मृति के अतुल गह्वर में दीर्घ सुप्ति की घोर जड़ता के बाद अकस्मात जागरित हो कर मेरे हृदय पर जलते हुए अंगारों के गोलों से आघात करने लगी। अपने जीवन में कभी किसी बात पर नहीं रोया था। माता-पिता तथा पत्नी, किसी की मृत्यु पर आँसू की एक बूँद मेरी आँखों से न निकली थी। अब रह-रह कर उन लोगों की याद में बिलख-बिलख कर मैं बार-बार रो पड़ता। मेरी स्नेहशील पतिपरायण पत्नी की करुण पुण्यछवि उज्ज्वल नक्षत्र की तरह मेरी आँखों के आगे स्पष्ट भासमान होने लगी। रह-रह कर मेरा जी विकल हो उठता था और मुझे ऐसा प्रतीत होने लगता, जैसे मेरे हृदय में किसी के निष्कलंक सुकुमार प्राणों की पैशाचिक हत्या का अपराध पाषाण-भार की तरह पड़ा हो।

बहुत दिनों तक इस नृशंस अपराध की भयंकर अनुभूति का भूत मेरी आत्मा को अत्यंत निष्ठुरता से दबाता रहा। अब भी यह भौतिक आतंक कभी-कभी मेरे मन में जागरित हो उठता है। फिर भी अब मैंने अपने मन को बहुत समझा लिया है और जीवन को एक नई दृष्टि से नए रूप में देखने लगा हूँ और साधारण से साधारण घटना भी कभी-कभी मेरे मन में एक अलौकिक आनंद का आश्चर्य उत्पन्न करने लगती है। किसी स्त्री को देखते ही अब मेरे हृदय में एक श्रद्धा-पूर्ण उत्सुकता का भाव जाग पड़ता है। ऐसा मालूम होने लगता है, जैसे अपने जीवन में पहले स्त्री को देखा भी न हो, अब पहली बार इस आनंददायिनी रहस्यमयी जाति के अस्तित्व का अनुभव मुझे हुआ हो।'

महेंद्र का लंबा लेक्चर समाप्त होते ही चश्माधारी सज्जन 'हा हा' करके ठठा कर हँसते हुए बोले, 'आप भी बड़े मज़े के आदमी हैं। खूब़!' यह कह कर वह बेंच पर आराम से लेट गए और उन्होंने आँखें बंद कर लीं। थोड़ी देर बाद वह ज़ोरों से खर्राटे लेने लगे।

एक लंबी साँस लेते हुए महेंद्र ने प्रायः अंधकार में अस्पष्ट झलकती हुई गुलाबी साड़ी की ओर देखा। दो आँखों की मार्मिक दृष्टि से तीव्र मोहकता उस अर्द्ध अंधकार में भी विस्मित वेदना की उत्सुक उज्ज्वल रेखाओं को विकीरित कर रही थी। महेंद्र पुलक-विह्वल हो कर मंत्र-मुग्ध-सा बैठा रहा।

घंटी बजी, दिल्ली को जानेवाली गाड़ी के आने की सूचना देते हुए सिगनल डाउन हुआ। सामने रक्त आकाश-द्वीप के बदले हरे रंग का प्रकाश जल उठा। यह हरित आलोक महेंद्र के मानस-पट में साड़ी के गुलाबी रंग के साथ मिल कर एक स्निग्ध-शुचि सौंदर्य-लोक का सृजन करने लगा।

थोड़ी देर में दूर ही से गाड़ी का सर्चलाइट दिखाई दिया। चश्माधारी महाशय महेंद्र के जगाने पर फड़फड़ाते हुए उठे। कुलियों ने सामान सँभाल लिया। भक-भक करती हुई गाड़ी प्लेटफ़ार्म पर आ लगी। बड़ी भीड़ थी। चश्माधारी सज्जन को महिलाओं के साथ कुली लोग इंजन के उल्टी ओर बहुत दूर तक ले गए। कहीं स्थान न पा कर अंत में एक डिब्बे में ज़बर्दस्ती घुस गए। महेंद्र भी उन लोगों के साथ-साथ जा रहा था पर जिस डिब्बे में वे लोग घुसे, उस डिब्बे में स्थान का निपट अभाव देख कर वह विवश हो कर एक दूसरे डिब्बे में चला गया। वहाँ भी काफ़ी भीड़ थी। किसी प्रकार उसने अपने बैठने के लिए थोड़ा-सा स्थान बनाया।

गार्ड ने सीटी दी। गाड़ी चल पड़ी। महेंद्र के मस्तिष्क में नाना अस्पष्ट भावनाएँ चक्कर काटने लगीं। दो दिन से उसे नींद नहीं आई थी। आज भी वह अभी तक सो नहीं पाया। इसलिए सोचते-सोचते वह ऊँघने लगा। ऊँघते हुए उसने देखा कि गुलाबी रंग की साड़ी द्रौपदी के चीर की तरह फैलती हुई अकारण सारे आकाश में छा गई है। सहसा दो स्थानों पर वह गगनव्यापी साड़ी फटी और उन दो छिद्रों से हो कर दो वेदनाशील, तीक्ष्ण, उज्ज्वल आँखें तीर की तरह प्रखर वेग से उसकी ओर धावित हो कर एक रूप में मिल कर एक बड़ी आँख के आकार में परिणत हो गईं। वह बड़ी आँखें उसके शरीर को छेद कर उसके हृत्पिंड को छू कर फिर ऊपर आकाश की ओर तीर की तरह छूटीं और आकाश में फैली हुई गुलाबी साड़ी में जा लगीं और फट कर फिर से दो सुंदर, किंतु करुणा-विकल आँखों के आकार में विभक्त हो गईं।

टुँडला स्टेशन पर गाड़ी ठहरने पर महेंद्र पूर्णतः सचेत हो कर बैठ गया। चश्माधारी महाशय दोनों महिलाओं को साथ ले कर कंपार्टमेंट से बाहर उतरे और सामान को कुलियों के हवाले करके उनके साथ बाहर फाटक की ओर चले। महेंद्र ने अपने कंपार्टमेंट से अपनी विश्वविजयिनी को देखा। वह इस उत्सुकता में था कि एक बार अंतिम समय के लिए दोनों की आँखें चार हो जावें, पर न हुईं और गुलाबी साड़ी से आवृत सजीव प्रतिमा व्यस्त विह्वल-सी आगे को निकल गई।

टुँडला से गाड़ी छूटने पर महेंद्र के कानों में चश्माधारी सज्जन के ठठा कर हँसने का शब्द गूँजने लगा। उसके अदृष्ट का चिर व्यंग्य पुकार मानो बार-बार कहता था - हा हा! आप भी बड़े मज़े के आदमी हैं : खूब़! ■

-इलाचंद्र जोशी

साभारः हिंदवी

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-103

सभी के लिए सुनहरा

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

अवसर!

१. भारत का पहला प्रधानमंत्री कौन था?
२. संविधान दिवस कब मनाया जाता है?
३. भारत की सबसे लंबी नदी कौन-सी है?
४. अंतरिक्ष में जाने वाली पहली महिला कौन थी?
५. रामायण के रचयिता कौन थे?
६. ओलंपिक खेलों की शुरुआत कहां हुई थी?
७. संविधान सभा के अध्यक्ष कौन थे?
८. ताजमहल किसने बनवाया था?
९. भारत की राष्ट्रीय फूल कौन-सा है?
१०. संसद के कितने सदन होते हैं?
११. चंद्रयान-३ मिशन किस देश ने लॉन्च किया?
१२. 'जन-धन योजना' किससे जुड़ी है?
१३. परमाणु बम का आविष्कार किसने किया था?
१४. महात्मा गांधी को 'राष्ट्रपिता' किसने कहा?
१५. सबसे तेज धावक कौन है?
१६. भारत का राष्ट्रीय पक्षी कौन-सा है?
१७. किस ग्रह को 'लाल ग्रह' कहा जाता है?
१८. भारत में पहला आम चुनाव कब हुआ था?
१९. राष्ट्रपति का कार्यकाल कितने वर्षों का होता है?
२०. राष्ट्रीय ध्वज में कितने रंग होते हैं?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website: swarnimumbai.com

नामः ....
पूरा पताः ....
....
....
फोन नं.: ....
ई-मेलः ....

चालाकी का फल

एक थी बुढ़िया, बेहद बूढ़ी पूरे नब्बे साल की। एक तो बेचारी को ठीक से दिखाई नहीं पड़ता था ऊपर से उसकी मुर्गियाँ चराने वाली लड़की नौकरी छोड़ कर भाग गयी। बेचारी बुढ़िया! सुबह मुर्गियों को चराने के लिये खोलती तो वे पंख फड़फड़ाती हुई सारी की सारी बुढ़िया के घर की चारदीवारी फाँद कर अड़ोस पड़ोस के घरों में भाग जातीं और 'कों कों कुड़कुड़' करती हुई सारे मोहल्ले में हल्ला मचाती हुई घूमतीं। कभी वे पड़ोसियों की सब्जियाँ खा जातीं तो कभी पड़ोसी काट कर उन्हीं की सब्जी बना डालते। दोनों ही हालतों में नुकसान बेचारी बुढ़िया का होता। जिसकी सब्जी बरबाद होती वह बुढ़िया को भला बुरा कहता और जिसके घर में मुर्गी पकती उससे बुढ़िया की हमेशा की दुश्मनी हो जाती।

हार कर बुढ़िया ने सोचा कि बिना नौकर के मुर्गियाँ पालना उसकी जैसी कमज़ोर बुढ़िया के बस की बात नहीं। भला वो कहाँ तक डंडा लेकर एक एक मुर्गी हाँकती फिरे? ज़रा सा काम करने में ही तो उसका दम फूल जाता था। और बुढ़िया

पूसी बिल्ली बड़ी चालाक थी। आवाज को मीठी बना कर मुस्कुरा कर बोली, 'अरे बुढ़िया नानी तुम तो बेकार ही परेशान होती हो। कोई खाना पकाने का काम तो है नहीं जो मैं न कर सकूँ। आखिर मुर्गियों की ही देखभाल करनी है न? वो तो मैं खूब अच्छी तरह कर लेती हूँ। मेरी माँ ने तो खुद ही मुर्गियाँ पाल रखी हैं। पूरी सौ हैं। गिनकर मैं ही चराती हूँ और मैं ही गिनकर बन्द करती हूँ। विश्वास न हो तो मेरे घर चलकर देख लो।' एक तो पूसी बिल्ली बड़ी अच्छी तरह बात कर रही थी और दूसरे बुढ़िया काफी थक भी गयी थी इसलिये उसने ज्यादा बहस नहीं की और पूसी बिल्ली को नौकरी पर रख लिया। पूसी बिल्ली ने पहले दिन मुर्गियों को दड़बे में से निकाला और खूब भाग दौड़ कर पड़ोस में जाने से रोका। बुढ़िया पूसी बिल्ली की इस भाग-दौड़ से संतुष्ट होकर घर के भीतर आराम करने चली गयी। कई दिनों से दौड़ते भागते बेचारी काफी थक गयी थी तो उसे नींद भी आ गयी।

निकल पड़ी लाठी टेकती नौकर की तलाश में। पहले तो उसने अपनी पुरानी मुर्गियाँ चराने वाली लड़की को ढूँढा। लेकिन उसका कहीं पता नहीं लगा। यहाँ तक कि उसके माँ बाप को भी नहीं मालूम था कि लड़की आखिर गयी तो गयी कहाँ? 'नालायक और दुष्ट लड़की! कहीं ऐसे भी भागा जाता है? न अता न पता सबको परेशान कर के रख दिया।' बुढ़िया बड़बड़ायी और आगे बढ़ गयी। थोड़ी दूर पर एक भालू ने बुढ़िया को बड़बड़ाते हुए सुना तो वह घूम कर सड़क पर आ गया और बुढ़िया को रोक कर बोला, ' गु र्र र , बुढ़िया नानी नमस्कार! आज सुबह सुबह कहाँ जा रही हो? सुना है तुम्हारी मुर्गियाँ चराने वाली लड़की नौकरी छोड़ कर भाग गयी है। न हो तो मुझे ही नौकर रख लो। खूब देखभाल करूँगा तुम्हारी मुर्गियों की।'

'अरे हट्टो, तुम भी क्या बात करते हो? बुढ़िया ने खिसिया कर उत्तर दिया, ' एक तो निरे काले मोटे बदसूरत हो मुर्गियाँ तो तुम्हारी सूरत देखते ही भाग खड़ी होंगी। फिर तुम्हारी बेसुरी आवाज़ उनके कानों में पड़ी तो वे मुड़कर दड़बे की ओर आएँगी भी नहीं। एक तो मुर्गियों के कारण मुहल्ले भर से मेरी दुश्मनी हो गयी है, दूसरा तुम्हारे जैसा जंगली जानवर और पाल लूँ तो मेरा जीना भी मुश्किल हो जाए। छोड़ो मेरा रास्ता मैं खुद ही ढूँढ लूँगी अपने काम की नौकरानी।'

बुढ़िया आगे बढ़ी तो थोड़ी ही दूर पर एक सियार मिला और बोला, 'हुआँ हुआँ राम राम बुढ़िया नानी किसे खोज रही हो? बुढ़िया खिसिया कर बोली, अरे खोज रहीं हूँ एक भली सी नौकरानी जो मेरी मुर्गियों की देखभाल कर सके। देखो भला मेरी पुरानी नौकरानी इतनी दुष्ट छोरी निकली कि बिना बताए कहीं भाग गयी अब मैं मुर्गियों की देखभाल कैसे करूँ? कोई कायदे की लड़की बताओ जो सौ तक गिनती गिन सके ताकि मेरी सौ मुर्गियों को गिन कर दड़बे में बन्द कर सकें।'

यह सुन कर सियार बोला, 'हुआँ हुआँ, बुढ़िया नानी ये कौन सी बड़ी बात है? चलो अभी मैं तुम्हें एक लड़की से मिलवाता हूँ। मेरे पड़ोस में ही रहती है। रोज़ जंगल के स्कूल में पढ़ने जाती है इस लिये सौ तक गिनती उसे जरूर आती होगी। अकल भी उसकी खूब अच्छी है। शेर की मौसी है वो, आओ तुम्हें मिलवा ही दूँ उससे।

बुढ़िया लड़की की तारीफ सुन कर बड़ी खुश होकर बोली, 'जुग जुग जियो बेटा, जल्दी बुलाओ उसे कामकाज समझा दूँ। अब मेरा सारा झंझट दूर हो जाएगा। लड़की मुर्गियों की देखभाल करेगी और मैं आराम से बैठकर मक्खन बिलोया करूँगी।'

सियार भाग कर गया और अपने पड़ोस में रहने वाली चालाक पूसी बिल्ली को साथ लेकर लौटा। पूसी बिल्ली बुढ़िया को देखते ही बोली, 'म्याऊँ, बुढ़िया नानी नमस्ते। मैं कैसी रहूँगी तुम्हारी नौकरानी के काम के लिये?' नौकरानी के लिये लड़की जगह बिल्ली को देखकर बुढ़िया चौंक गयी। बिगड़ कर बोली, 'हे भगवान कहीं जानवर भी घरों में नौकर हुआ करते है? तुम्हें तो अपना काम भी सलीके से करना नहीं आता होगा। तुम मेरा काम क्या करोगी?'

लेकिन पूसी बिल्ली बड़ी चालाक थी। आवाज को मीठी बना कर मुस्कुरा कर बोली, 'अरे बुढ़िया नानी तुम तो बेकार ही परेशान होती हो। कोई खाना पकाने का काम तो है नहीं जो मैं न कर सकूँ। आखिर मुर्गियों की ही देखभाल करनी है न? वो तो मैं खूब अच्छी तरह कर लेती हूँ। मेरी माँ ने तो खुद ही मुर्गियाँ पाल रखी हैं। पूरी सौ हैं। गिनकर मैं ही चराती हूँ और मैं ही गिनकर बन्द करती हूँ। विश्वास न हो तो मेरे घर चलकर देख लो।' एक तो पूसी बिल्ली बड़ी अच्छी तरह बात कर रही थी और दूसरे बुढ़िया काफी थक भी गयी थी इसलिये उसने ज्यादा बहस नहीं की और पूसी बिल्ली को नौकरी पर रख लिया।

पूसी बिल्ली ने पहले दिन मुर्गियों को दड़बे में से निकाला और खूब भाग दौड़ कर पड़ोस में जाने से रोका। बुढ़िया पूसी बिल्ली की इस भाग-दौड़ से संतुष्ट होकर घर के भीतर आराम करने चली गयी। कई दिनों से दौड़ते भागते बेचारी काफी थक गयी थी तो उसे नींद भी आ गयी।इधर पूसी बिल्ली ने मौका देखकर पहले ही दिन छे मुर्गियों को मारा और चट कर गयी। बुढ़िया जब शाम को जागी तो उसे पूसी की इस हरकत का कुछ भी पता न लगा। एक तो उसे ठीक से दिखाई नहीं देता था और उसे सौ तक गिनती भी नहीं आती थी। फिर भला वह इतनी चालाक पूसी बिल्ली की शरारत कैसे जान पाती? अपनी मीठी मीठी बातों से बुढ़िया को खुश रखती और आराम से मुर्गियाँ चट करती जाती। पड़ोसियों से अब बुढ़िया की लड़ाई नहीं होती थी क्योंकि मुर्गियाँ अब उनके आहाते में घुस कर शोरगुल नहीं करती थीं। बुढ़िया को पूसी बिल्ली पर इतना विश्वास हो गया कि उसने मुर्गियों के दड़बे की तरफ जाना छोड़ दिया।

धीरे धीरे एक दिन ऐसा आया जब दड़बे में बीस पच्चीस मुर्गियाँ ही बचीं। उसी समय बुढ़िया भी टहलती हुई उधर ही आ निकली। इतनी कम मुर्गियाँ देखकर उसने पूसी बिल्ली से पूछा, 'क्यों री पूसी, बाकी मुर्गियों को तूने चरने के लिये कहाँ भेज दिया?' पूसी बिल्ली ने झट से बात बनाई, ' अरे और कहाँ भेजूँगी बुढ़िया नानी। सब पहाड़ के ऊपर चली गयी हैं। मैंने बहुत बुलाया लेकिन वे इतनी शरारती है कि वापस आती ही नहीं।'

'ओफ् ओफ् ! ये शरारती मुर्गियाँ।' बुढ़िया का बड़बड़ाना फिर शुरू हो गया, 'अभी जाकर देखती हूँ कि ये इतनी ढीठ कैसे हो गयी हैं? पहाड़ के ऊपर खुले में घूम रही है। कहीं कोई शेर या भेड़िया आ ले गया तो बस!'

ऊपर पहुँच कर बुढ़िया को मुर्गियाँ तो नहीं मिलीं। मिलीं सिर्फ उनकी हड्डियाँ और पंखों का ढ़ेर! बुढ़िया को समझते देर न लगी कि यह सारी करतूत पूसी बिल्ली की है। वो तेजी से नीचे घर की ओर लौटी। इधर पूसी बिल्ली ने सोचा कि बुढ़िया तो पहाड़ पर गयी अब वहाँ सिर पकड़ कर रोएगी जल्दी आएगी नहीं। तब तक क्यों न मैं बची-बचाई मुर्गियाँ भी चट कर लूँ? यह सोच कर उसने बाकी मुर्गियों को भी मार डाला। अभी वह बैठी उन्हें खा ही रही थी कि बुढ़िया वापस लौट आई।

पूसी बिल्ली को मुर्गियाँ खाते देखकर वह गुस्से से आग बबूला हो गयी और उसने पास पड़ी कोयलों की टोकरी उठा कर पूसी के सिर पर दे मारी। पूसी बिल्ली को चोट तो लगी ही, उसका चमकीला सफेद रंग भी काला हो गया। अपनी बदसूरती को देखकर वह रोने लगी।

आज भी लोग इस घटना को नही भूले है और रोती हुई काली बिल्ली को डंडा लेकर भगाते हैं। चालाकी का उपयोग बुरे कामों में करने वालों को पूसी बिल्ली जैसा फल भोगना पड़ता है। ■

-पूर्णिमा वर्मन

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

JEE-NEET की मुफ्त कोचिंग दे रही दिल्ली सरकार, ४ टॉप इंस्टीट्यूट देंगे क्लास

दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले मेधावी छात्रों के सपनों की उड़ान में अब दिल्ली सरकार अहम रोल निभाने जा रही है. महंगे कोचिंग संस्थानों की फीस देने में असमर्थ बच्चे अब जेईई, नीट, क्लैट, सीए और सीयूईटी जैसे कोर्सेज की प्रोफेशनल कोचिंग ले सकेंगे. इतना ही नहीं दिल्ली सरकार ने इन बच्चों के लिए न केवल क्लासरूम कोचिंग, बल्कि ऑनलाइन कोचिंग और पढ़ाई का सभी सामान देने का भी ऐलान किया है.इसकी जानकारी दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने दी है.

दिल्ली सरकार सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले २२०० मेधावी छात्र-छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए महामना पंडित मदन मोहन मालवीय विद्या शक्ति मिशन के तहत मुफ्त प्रोफेशनल कोचिंग देगी. शिक्षा मंत्री सूद ने कहा कहा कि इस मिशन का उद्धेश्य मेधावी बच्चों के बड़े-बड़े सपनों को उड़ान देना और भविष्य के लिए स्कूल तैयार करना है. इस दौरान इन बच्चों की मानसिक सेहत का भी ख्याल रखा जाएगा. मंत्री सूद के मुताबिक इस योजना के लिए बजट में २१ करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं.

दिल्ली सरकार ने २२०० सीटों में से लड़कियों के लिए सीटें आरक्षित करने का फैसला किया है. JEE, NEET, सीए फाउंडेशन कोर्स, CLAT में से लड़कियों के लिए ५० सीटें हर कोर्स में आरक्षित करने का फैसला किया है. जबकि दिल्ली-यूनिवर्सिटी सहित देशभर की यूनिवर्सिटीज में अंडर ग्रेजुएट कोर्सेज के लिए होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए आयोजित होने वाले CUET-UG कोर्स के लिए कुल १,००० बच्चों को मुफ्त कोचिंग कराई जाएगी. इनमें १५० सीटें लड़कियों के लिए पूरी तरह रिजर्व हैं.

कौन से संस्थान देंगे कोचिंग

दिल्ली सरकार ने इन बच्चों को कोचिंग देने के लिए दिल्ली के नामी टॉप कोचिंग इंस्टीट्यूट के साथ समझौता किया है. दिल्ली के चार संस्थान आकाश इंस्टिट्यूट, नारायणा एकेडमी, केडी कैंपस और रविंद्र इंस्टिट्यूट मिलकर कोचिंग देंगे. सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले इन बच्चों को स्कूल के बाद और वीकेंड पर क्लासरूम कोचिंग और लाइव क्लासेस के माध्यम से पढ़ाया जाएगा. इन छात्रों को सरकार की ओर से पढ़ाई का सामान, टेस्ट सीरीज आदि चीजें मुफ्त दी जाएंगी.

अमर सुब्रमण्या Apple AI के बने वाइस प्रेसिडेंट

एप्पल ने अपने एआई में सुधार के लिए बड़ा कदम उठाया है. कंपनी ने एप्पल एआई के लिए नया सीईओ नियुक्त किया है. नए सीईओ एआई इंटेलिजेंस की दुनिया के दिग्गज माने जाते हैं. आप और हम कई ऐसे एआई यूज करते हैं, जिनके डेवलपमेंट में उनका काफी अहम योगदान रहा है. एप्पल ने एआई के लिए जिस नए सीईओ की नियुक्ति की है वे भारतीय मूल के हैं.

टेक के मामले में एप्पल ने पूरी में अपना लोहा मनवाया है. टेक के मामले खासकर मोबाइल और कंप्यूटर में एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन और सिक्योरिटी के मामले में पूरी दुनिया लोहा मानती है. हालांकि, एक मामले में अपने कंपीटीटर पिछड़ता रहा है. मगर, अब नहीं क्योंकि एप्पल ने एआई के महारथी को अपना वाइस प्रेसिडेंट (वीपी) बनाया है. जी हां, भारतीय मूल के अमर सुब्रमण्या को एप्पल ने अपना अगला एआई का वीपी बनाया है. वे जॉन जियान्नांद्रिया की जगह लेंगे, जो २०२६ के मार्च के आसपास रिटायर हो रहे हैं. बता दें कि गूगल से लेकर माइक्रोसॉफ्ट में अपनी इंजीनियरिंग क्षमता का लोह मनवा चुके अमर Siri के पर्सनलाइजेशन और मल्टीमॉडल कैपेबिलिटीज के साथ-साथ मशीन लर्निंग रिसर्च तथा AI सेफ्टी एंड इवैल्यूएशन जैसे क्रिटिकल एरियाज पर काम करेंगे.

बाकी की कंपनियों से पीछे रह गया एप्पल. एप्पल ने अपनी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) में सुधार के लिए क्रांतिकारी कदम उठाया है. सोमवार को कंपनी ने माइक्रोसॉफ्ट और गूगल के पूर्व एआई एक्सपर्ट अमर सुब्रमण्या को अपने एआई सेक्शन का नया वाइस प्रेसिडेंट (VP) नियुक्त किया है. अमर भारतीय मूल के हैं. वे जॉन जियान्नांद्रिया की जगह लेंगे. जॉन अगले साल मार्च में रिटायर हो रहे हैं. अमर का एप्पल में आना एआई के क्षेत्र में रणनीतिक रूप से काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि उन्होंने गूगल के जेमिनी से लेकर माइक्रोसॉफ्ट के एआई के लिए काम कर चुके हैं.

मुंबई और ठाणे मेट्रो के नौ महानगरों में ५०० करोड़ रुपये के चेक लोन वितरित किए गए

मुंबई महानगर विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) ने मुंबई से ठाणे तक नौ मेट्रो परियोजनाओं के लिए मुंबई महानगर विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) को ५०० करोड़ रुपये का ब्याज ऋण वितरित किया है। शहरी विकास विभाग ने दहिसर, मीरा रोड और ठाणे कल्याण तक विभिन्न मार्गों पर नौ मेट्रो परियोजनाओं के लिए एमएमआरडीए को ऋण वितरित किया है। इसमें केंद्र सरकार से ५० प्रतिशत और स्थानीय करों और भूमि व्यय के लिए १०० प्रतिशत कर शामिल है।

शहरी विकास विभाग ने मुंबई मेट्रो लाइन (५) ठाणे-कल्याण-भिवंडी मेट्रो परियोजना के लिए १,३५२.२५ करोड़ रुपये के बजट में से ५२.३८ करोड़ रुपये के अधीनस्थ ऋण के रूप में संवितरण को मंजूरी दे दी है। मुंबई मेट्रो लाइन (६) स्वामी समर्थ नगर-जोगेश्वरी-विक्रोली परियोजना के लिए ३२.९५ करोड़ रुपये, दहिसर ईस्ट-डीएन नगर परियोजना के लिए २८.८९ करोड़ रुपये, मुंबई मेट्रो (२बी) डीएन नगर-मांडले परियोजना के लिए ११२.८० करोड़ रुपये, मुंबई मेट्रो लाइन (४) वडाला-घाटकोपर-मुलुंड-कासरवदावली और मुंबई मेट्रो लाइन (४ए) कासरवदावली से गायमुख परियोजना के लिए ९८.७२ करोड़ रुपये।

मुंबई मेट्रो (७), अंधेरी (पूर्व) से दहिसर पूर्व (४९.६३ करोड़ रुपये), मुंबई मेट्रो (९), दहिसर से मीरा रोड और रूट (७ए), अंधेरी से छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा (६६.७१ करोड़ रुपये), गायमुख से शिवाजी चौक मीरा रोड परियोजना (८६.१४ करोड़ रुपये) और मुंबई मेट्रो (१२) कल्याण से तलोजा परियोजना के लिए १.०८ करोड़ रुपये का द्वितीयक ऋण मिलेगा। इसे प्रारूप में वितरित

किया गया है। कुल ४९८.७४ करोड़ रुपये वितरित किए गए हैं। इससे पहले, उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में शहरी विकास विभाग ने नगर निगमों, नगर परिषदों और नगर पंचायतों के विकास कार्यों के लिए ८०० करोड़ रुपये आवंटित किए थे। यह फंड स्थानीय निकायों में बुनियादी सुविधाओं के लिए दिया गया है।

(मनसे) के कार्यकर्ताओं ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के बाहर 'आईआईटी बॉम्बे' लिखी तख्ती लगाकर विरोध प्रदर्शन किया

महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे ने बुधवार को केंद्र पर आरोप लगाया कि वह चंडीगढ़ की तरह मुंबई पर कब्जा करने और महानगर को पड़ोसी राज्य गुजरात में मिलाने की कोशिश कर रही है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शनिवार को कहा कि वह आईआईटी का नाम बदलकर मुंबई करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखेंगे। केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) पवई में आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे। आईआईटी बॉम्बे के कार्यक्रम में बोलते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने आईआईटी बॉम्बे का नाम बदलकर आईआईटी बॉम्बे नहीं करने के लिए भगवान को धन्यवाद दिया। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे ने शनिवार को कहा कि केंद्र सरकार चंडीगढ़ की तरह मुंबई को भी अपने कब्जे में लेना चाहती है और उनका बयान सरकार की मानसिकता का प्रतीक है। राज ठाकरे ने सोशल मीडिया के जरिए अपना रुख स्पष्ट करते हुए मराठी लोगों से केंद्र सरकार के खेल को विफल

करने के लिए जागने की अपील की। मराठी नेताओं और लोगों ने मुंबई को महाराष्ट्र से अलग करने की योजना को विफल कर दिया, जो मराठी लोगों का था। और हमारी मराठी मुंबई महाराष्ट्र में ही रही। केंद्रीय नेताओं ने दशकों से उनके पेट में जमा हुई मतली को उंडेलना शुरू कर दिया है।

दरअसल, जितेंद्र सिंह का मुंबई से कोई लेना-देना नहीं है, न महाराष्ट्र से और न ही गुजरात से। वे जम्मू से आते हैं। लेकिन उनका उद्देश्य यह पहचानना है कि उनके शीर्ष नेतृत्व के दिमाग में क्या चल रहा है और ऐसा कहकर प्रशंसा प्राप्त करना है। 'मुंबई' नाम केंद्र सरकार को परेशान करने वाला है, क्योंकि इसका नाम हमारी मुंबा मां, मुंबई की देवी के नाम पर रखा गया है। उस देवी की सभी संतान मराठी लोग हैं जो पीढ़ियों से यहां रह रहे हैं। आप और आपका शहर नुकसान पहुंचा रहे हैं। इसलिए, ठाकरे ने न केवल मुंबई बल्कि अब मुंबई महानगर क्षेत्र के सभी मराठी लोगों से अपील की है कि वे केंद्र की पारी को विफल करने के लिए अपनी आंखें खोलें।

केंद्र सरकार ने चंडीगढ़ शहर को पंजाब के हाथों से छीनने की कोशिश की। सभी दलों के विरोध के कारण वह वापस ले गए, लेकिन यह एक अस्थायी वापसी है। मुंबई शहर पर कब्जा करने की कोशिश की जा रही है, न कि मुंबई शहर पर कब्जा करने की। पहले मुंबई और फिर पूरे एमएमआर क्षेत्र पर कब्जा किया जा रहा है और इसे गुजरात से जोड़ने की कोशिश की जा रही है। हम हर दिन देख रहे हैं कि केंद्रीय कारीगरों, उद्योगपतियों आदि ने यहां क्या कब्जा करना शुरू कर दिया है। इसलिए मराठी लोगों को जागना चाहिए।

चना की खेती

कम लागत, ज्यादा मुनाफा'

भारत में रबी सीजन की फसलों में चना हमेशा से किसान की भरोसेमंद फसल रही है। वजह साफ है–कम पानी में भी अच्छी पैदावार, कम लागत, और बाज़ार में सालभर मजबूत मांग। लेकिन सच्चाई ये है कि चना उतना 'आसान' नहीं जितना लोग मान लेते हैं। गलत समय, गलत किस्म, खराब ड्रेनेज या फली छेदक जैसी ग़लतियों ने कई किसानों की मेहनत बर्बाद की है। इसलिए चना बोने से पहले सिर्फ पारंपरिक जानकारी नहीं, बल्कि जमीन, मौसम और कीट-रोग की वास्तविक स्थिति के अनुसार सही वैज्ञानिक प्रबंधन जरूरी है।

नीचे दिया गया यह पूरा मार्गदर्शन उसी व्यावहारिक सोच पर आधारित है–ताकि फसल सुरक्षित रहे और मुनाफा अधिक मिले।

कौन-सी मिट्टी सबसे बेहतर?

दोमट, भूरी दोमट और काली कपास वाली मिट्टी चने के लिए सर्वश्रेष्ठ। pH ६-७.५ बढ़िया।

पानी रुकने वाली भारी जमीन में चना बीमारियों से जल्दी मरता है।

बुवाई का सही समय

आदर्श: १५ अक्टूबर - ३० नवंबर

लेट बुवाई (दिसंबर): जल्दी पकने वाली किस्में ही भरोसेमंद होती हैं।

प्रमुख किस्में (लेट बुवाई के लिए भी बेहतर)

JG १४
JG ११
JG १३०
Vaibhav
GNG 1581
HC १ (हरियाणा-पंजाब)

बीज दर और बीज उपचार

बीज दर
देसी: ७०-८० kg/acrा
काबुली: १००-११० kg/acre
बीज उपचार (अनिवार्य)

यही पौधे को उखटा और जड़ सड़न से बचाता है। CaRendazim/Thiram: 2–3 gm/kg, Trichoderma: 4 gm/kg

Rhizobium + PSB culture: 5 gm/kg

बीज उपचार छोड़ना मतलब बाद में नुकसान तय।

खेत की तैयारी

पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से।
१-२ कल्टीवेशन + पाटा।
हल्की फाइन सीड-बेड चना के लिए आदर्श।

बुवाई की दूरी और विधि

लाइन से लाइन: ३०-४५ cm
पौधे से पौधा: १० cm

ड्रिल या सीड-कम-फर्टिलाइज़र ड्रिल अधिक लाभदायक।

खाद का प्रैक्टिकल फॉर्मूला (per acre)

DAP: 100–120 kg
MOP: 15–20 kg
Gypsum: 50 kg
Sulphur: 20–25 kg (फूल झड़ने से बचाता है) चने को ज्यादा Nitrogen देने से पौधा घना

होता है, दाना कम बनता है।

सिंचाई प्रबंधन

चना 'कम पानी वाली' फसल है, लेकिन यह फालतू सुखा भी नहीं सहता। पहली सिंचाईः बोने के तुरंत बाद नहीं; फूल आने के समय (४५-५० दिन) दूसरी सिंचाईः दाना भराव (६०-७० दिन)

३ से ज्यादा सिंचाई → रोग का खतरा बढ़ता है।

प्रमुख कीट और रोग

१. उखटा/जड़ सड़न
कारणः ठंड + नमी
बचावः बीज उपचार + अच्छी ड्रेनेज
२. फली छेदक (Pod Borer)
सबसे विनाशकारी कीट।
Emamectin Benzoate: ०.४ gm/L
या IndoxacaR: 0.6 ml/L
फेरोमोन ट्रैप लगाना बहुत मददगार।
३. झुलसा रोग (Blight)
CaRendazim + Mancozeb
(२ + २ gm/L)

फसल अवधि और पैदावार

देसी चनाः ११०-१२० दिन
काबुली चनाः १३०-१४० दिन

पैदावार

देसीः ८-१० क्विंटल/एकड़
काबुलीः ६-८ क्विंटल/एकड़
लेट बुवाई में थोड़ा कम, लेकिन ७-८ क्विंटल यथार्थ लक्ष्य है।

लागत और मुनाफा

कुल लागतः ₹6,000–₹10,000/acre
पैदावार मूल्यः ₹30,000–₹45,000/acre
नेट लाभः ₹20,000–₹30,000/acre

काबुली का भाव ऊँचा है, लेकिन रिस्क भी ज्यादा। चना कम लागत में अच्छा मुनाफा दे सकता है, लेकिन यह 'लापरवाही वाली फसल' बिलकुल नहीं है।

जड़ सड़न, फली छेदक और गलत सिंचाई– इन तीन गलतियों ने कई किसानों के खेत खाली करवाए हैं। अगर जमीन, पानी और किस्म का चुनाव समझदारी से किया जाए, और सल्फर व उब्लेल्स जैसी जरूरी चीजें नहीं छोड़ी जाएँ–तो लेट बुवाई में भी मजबूत पैदावार मिलती है।

चना का स्टोरेज (भंडारण) – बिल्कुल वास्तविक और जरूरी बातें

चना ऐसी फसल है जिसे बेचने की जल्दी मत करो, क्योंकि दाम हमेशा कटाई के समय गिरते हैं और ३-६ महीने बाद ऊपर जाते हैं। लेकिन इसके लिए स्टोरेज सही होना चाहिए, वरना कीट नुकसान करेगा। सही स्टोरेज में ६-१२ महीने तक आराम से सुरक्षित रहता है। अगर नमी ज्यादा हुई, या भंडारण ढीला हुआ तो १-२ महीने में ही कीड़े लग जाते हैं।

स्टोरेज की सबसे जरूरी बातें (Practical Rules)

(a) अनाज की नमी १०% से कम होनी चाहिए, ज्यादा नमी = फंगस, बदबू, रंग बदलना। कटाई के बाद ४-५ दिन धूप में सुखाना अनिवार्य।

(b) एयरटाइट स्टील/HDPE ड्रम

गुड़ाम में ढेर लगाकर मत छोड़ो–कीड़ा धावा बोल देगा। सबसे सुरक्षित विकल्पः धातु के ड्रम HDPE एयरटाइट कंटेनर, प्लास्टिक लाइनिंग वाले बिन

(c) भंडारण उपचार (Storage Treatment)

Neem Oil या Mustard Oil: 3–5 ml प्रति kg चना – १००% सुरक्षित और केमिकल-फ्री, या Celphos टेबलेट (लेकिन यह सिर्फ़ गोडाउन उपयोग में लें, घर में नहीं)

(d) जूट बैग में भरकर सीधे फर्श पर मत रखो, नीचे लकड़ी का तख्ता या पैलेट होना चाहिए, वरना चना नमी खींच लेगा।

(e) महीने में एक बार निरीक्षण अनिवार्य

अगर कीट दिखे तो तुरंत धूप दिखाएँ या फ्यूमिगेशन करवा दें।

प्रॉफिट (लाभ)

कटाई के समय भाव (मार्च-अप्रैल):

देसी चनाः ₹4,800–₹5,500 प्रति क्विंटल

काबुली चनाः ₹7,000–₹10,000 प्रति क्विंटल 6 महीने बाद भाव (अगस्त-अक्टूबर): देसीः ₹6,000–₹7,200 प्रति क्विंटल काबुलीः ₹10,000–₹12,500 प्रति क्विंटल, मतलब ₹1,000–₹1,800 प्रति क्विंटल का सीधा लाभ स्टोरेज से मिलता है। कई सालों में यह बढ़कर ₹2,000–₹2,500 प्रति क्विंटल भी हुआ है। चना की खेती खुद में मुनाफे वाली है। लेकिन असल पैसा स्टोरेज में है, तुरंत बेचने में नहीं। सही स्टोरेज से १२-१५ हजार प्रति एकड़ अतिरिक्त मिलना बिल्कुल सामान्य बात है। बस गलती मत करना–नमी, कीट और ओपन स्टोरेज तीनों चना बर्बाद कर देते हैं। ■

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें। आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा। किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:www.swarnimumbai.com

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

भावपूर्ण श्रद्धांजली

8 दिसंबर 1935- 24 नवंबर 2025